CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शृंगार-संध्या
सांस्कृतिक केन्द्र, कानपुर

12.2

मानस और ज्योतिष

(तुलसी साहित्य में ज्योतिर्विज्ञान के तत्व)

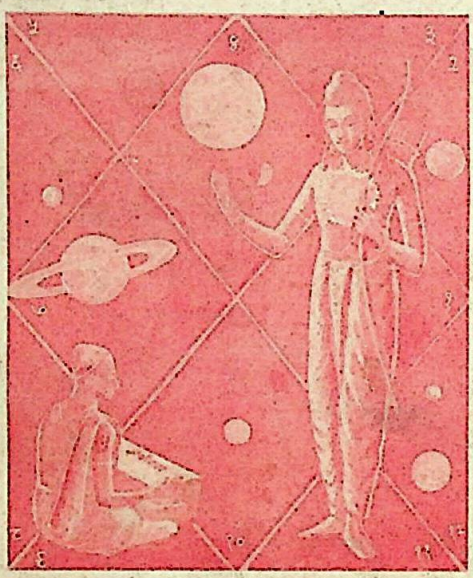

वी० बी० सिंह

लोकार्पण-विशेषांक

8 जून, 1997

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रृंगार-संध्या सांस्कृतिक केन्द्र

की अभिनव प्रस्तुति

तुलसी–साहित्य व ज्योतिर्विज्ञान के यशस्वी विचारक

पं० वी० बी० सिंह की

सर्वथा नयी एवं अनूठे विषय पर शोधपरक कृति

मानस और ज्योतिष

(तुलसी साहित्य में ज्योतिर्विज्ञान के तत्व)

का

लोकार्पण–समारोह

विमोचनकर्ता : प्रख्यात साहित्यकार
डा० विनोद चन्द्र पाण्डेय 'विनोद'
आई.ए.एस.
निदेशक, उ०प्र० हिन्दी संस्थान, लखनऊ

अध्यक्षता : पद्मश्री गोपालदास नीरज

परिचर्चा : वार्ताकार
सर्वश्री आचार्य वागीश शास्त्री, सेवक वात्स्यायन,
श्री तिलक, डॉ. माहेश्वर तिवारी, डॉ. आनन्द अस्थाना,
देवकी नन्दन दीक्षित, केदार नाथ मेहरोत्रा, रमेश चिंतक,
डॉ. शिव कुमार दीक्षित, राम किशोर बाजपेयी,
डॉ. हरिवंश प्रसाद शुक्ल, चन्द्रेश गुप्त

संचालन : पं० सिद्धेश्वर अवस्थी

भजन–गायन : डॉ. रेनू निगम एवं साथी

रविवार, ८ जून, १९९७ लाजपत भवन प्रेक्षागार, कानपुर

पत्रिका–संपादन : शतदल, प्रशान्त शुक्ल

पत्रिका मुद्रण : शागनी लेज़र प्रिंट्स
काकादेव, कानपुर, दूरभाष : ५४७७१८

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अपनी बात...

समय के साथ आज के मनुष्य की रुचियों और सरोकारों में बदलाव आता चला जा रहा है। मनुष्य के परिमार्जन में कलाओं की जो भूमिका होती है उस पर भी प्रश्नचिन्ह लग रहे हैं। आधुनिकता के नाम पर मूल्यों का जो संघर्ष चल रहा है यदि उस पर तटस्थ होकर विचार करें तो एक त्रिशंकु जैसी स्थिति नज़र आती है। न तो हम पाश्चात्य संस्कृति को ठीक से, समझ कर, ग्रहण कर पा रहे हैं और न ही अपनी संस्कृति से पूरी तरह कट पा रहे हैं। आज नयी पीढ़ी के सामने तमाम–तमाम आकर्षण हैं जिनमें वह भरमा रही है। अपनी सांस्कृतिक विरासत से उसे जैसे कोई खास मतलब ही नहीं। वो चाहे संगीत हो, साहित्य हो या और कुछ। इस संक्रमण–काल में अभी निर्णय पूर्वक कुछ कहा नहीं जा सकता कि जो है, जो हो रहा है, कितना उचित है अथवा अनुचित। इसका फैसला यदि समय के ऊपर छोड़ दिया जाय तो वह तो सबसे बड़ा निर्णायक है लेकिन तब आने वाली पीढ़ियाँ हमारे वर्तमान काल खण्ड को न जाने किस रूप में देखें। ..... ऐसी स्थिति में – इन स्थितियों के बीच – जो मित्र या संस्थाएं शुद्ध साहित्यिक आयोजन करने की कोशिश करती हैं, निश्चय ही महत्वपूर्ण हैं। साहित्य में हमारी गुज़री हुयी पीढ़ियाँ ने सृजन के जिन आयामों का स्पर्श किया, विचार की जिन ऊँचाइयों और गहराइयों तक यात्रा की, जीवन–संघर्ष में मनुष्य की शुभाकांक्षा के साथ जो मानक बनाए, जिन मूल्यों की स्थापना की आज सब का सब एक कटघरे में खड़ा हो जैसे। और जो इस विरासत की रक्षा–यज्ञ में लगे हैं उनके सामने तमाम प्रकार की चुनौतियाँ है। आज हम जिन्हें शुभ–अनुष्ठान मान कर चलते हैं उसके लिए कुबेर के वंशज अपने मन से आगे नहीं आते। यह तो पहली परेशानी है। किसी प्रकार धन–संग्रह करके समारोह किया जाय तो श्रोता/दर्शक नहीं आते। .... इस विडम्बना पर उन सभी को विचार करना चाहिए जो सांस्कृतिक मूल्यों की रक्षा करते हुए साहित्यिक अनुष्ठान करते हैं।

'श्रृंगार संध्या' ने इस परिप्रेक्ष्य में जो प्रयास किए उन्हें लोगों ने सराहा। इस संस्था के उद्देश्य निश्चय ही ठीक रहे हैं। यही कारण है कि आज भी लोग इससे अपना जुड़ाव रखते हैं। श्रृंगार संध्या पिछले दो दशकों से गतिशील है। इसके द्वारा ज्यादातर गीत–कविता की प्रतिष्ठा के लिए आयोजन/प्रकाशन हुए। यों, एक बार नाटक मंचित हुआ और मेरे प्रिय मित्र भोलानाथ शुक्ल ने प्रख्यात संगीतज्ञ पं० रामाश्रय झा का अभिनन्दन भी किया। स्थायी महत्व के कुछ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रकाशन हुए। जिनमें 'श्रृंगार संध्या' पत्रिका के अतिरिक्त सन् ८३–८४ में हिन्दी नवगीत के प्रखर कवि उमाकान्त मालवीय पर एक पुस्तक छापने के बाद आज ६७ में दादा विंध्यबासिनी सिंह का महत्वपूर्ण चिन्तन पुस्तक के रूप में प्रकाशित होकर आपके समक्ष प्रस्तुत हो रहा है। दादा, हमारे परिवार के मुखिया हैं। हम उन पर गर्व करते हैं। स्वयं दादा को इस कृति – मानस और ज्योतिष – के प्रकाशन पर जितनी प्रसन्नता होगी उससे कहीं ज्यादा 'श्रृंगार संध्या' परिवार से जुड़ा प्रत्येक व्यक्ति उत्साहित है। और इस अवसर पर हम दादा को अपने विनम्र प्रणाम अर्पित करते हुए उनका अभिनन्दन करते हैं। इस ग्रन्थ के प्रकाशन पर नगर ही नहीं प्रदेश और देश के अनेक साहित्यकार, साहित्यिक संस्थाएं अपनी शुभकामनाएं अर्पित कर रही हैं। हम बहुत उत्साहित हैं और आश्वस्त हैं कि आप सबकी शुभकामनाओं से 'श्रृंगार संध्या सांस्कृतिक केन्द्र' ऐसे ही श्रेष्ठ प्रकाशन व स्तरीय आयोजन करता रहेगा। ..... समय की कुरूप छाया इस पर नहीं पड़ेगी और जिनके भीतर प्यास है, जिनके पास सपने हैं, जो जिज्ञासु हैं, पिपासु हैं और स्वयं को कुण्ठा–मुक्त रहना चाहते हैं, यों ही एक परिवार की भावना से मिल–जुलकर बैठते रहेंगे, आनन्द की तलाश करते रहेंगे। कहने के लिए कहा जा सकता है, ऐसे शोधपूर्ण प्रकाशनों से क्या होगा ? ठीक है, ये पुस्तकें हमारे दैनिक जीवन में कपड़े नहीं है, दीवारों वाले घर नहीं हैं, पैसा नहीं हैं, हमारी रोटी नहीं हैं लेकिन इससे इतर हमारे सोच का परमार्जन करने में ऐसी ही साहित्यिक कृतियों की भूमिका हो सकती है। मनोरंजन के लिए हमारे आस–पास बहुत से संसाधन मौजूद हैं, जिनके विषय में तनिक गम्भीरता से विचार करें तो उनकी भूमिका थोड़ी देर की होती है। और वह क्षणिक मनोरंजन हमें बहुत कुछ नहीं दे पाता। मात्र कुछ पलों के लिए हम अपनी उलझनों से स्वयं को मुक्त अनुभव करते हैं। मैं विनम्रता पूर्वक कहना चाहूँगा कि ऐसी ही कृतियाँ, साहित्यिक विचार–प्रधान कृतियाँ, हमें जीवन–संघर्ष में प्रेरणा देती हैं। शर्त है कि हम पूरे मन से उन्हें स्वीकार करें, उनका अध्ययन करें, चिन्तन–मनन करें।

हम आशा करते हैं कि आप सब सुधीजनों के बीच 'श्रृंगार संध्या सांस्कृतिक केन्द्र' के इस प्रकाशन का स्वागत होगा और सम्पूर्ण हिन्दी जगत में इसकी स्वस्थ चर्चा होगी।

सभिवादन,
शतदल
(संयोजक)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विद्यानिवास मिश्र

फोन : ३५६३०९
वृन्दा, एम ३ बादशाह बाग
वाराणसी – २२१ ००२

श्रीयुत् विन्ध्य बासिनी सिंह द्वारा रचित 'मानस और ज्योतिष' पुस्तक की पाण्डुलिपि देखने का सौभाग्य मिला। मानस इतना अगाध ग्रंथ है और अनुभव की इतनी पर्तें हैं कि एक–एक पटल का खुलना सुखद विस्मय देता है। पूर्व में कुछ निबंध गोस्वामी तुलसीदास की ज्योतिष विज्ञता को प्रमाणित करने के लिये लिखे गये थे। परन्तु अद्यावधि कोई एक सांगोपांग अध्ययन मानस में इंगित सूक्ष्म ज्योतिष सन्दर्भों पर नहीं लिखा गया था। भगवान रामचन्द्र सूर्यवंश में उत्पन्न ही नहीं हुये, वे सूर्य के भीतर के सघन प्रकाश हैं –

ध्येयः सदा सवितृ मण्डल मध्यवर्ती।
नारायणः सरसिजासन सन्निविष्टः ।।

'सवितृ मण्डल के मध्य में प्रकाश का सघन रूप ही भगवान राम की श्यामता में परिलक्षित होता है' इसीलिये ज्योतिष का जो मूल उद्देश्य है, परम ज्योति के साथ सम्बन्ध स्थापित करके अपने छोटे से परिमित प्रकाश रूप चैतन्य को सार्थक करना, वही उद्देश्य मानस का है। अंत में उन्होंने निष्कर्ष निकालते हुये कहा भी है कि 'स्वांतस्तमः शान्तये' (अपने भीतर के अंधकार को शान्त करने के लिये) मैंने यह ज्योतिर्मय लीलागान किया।

श्री सिंह ने ज्योतिषशास्त्र के मूल सिद्धान्तों को पहले समझाया है और अन्त में मानस में किस प्रकार मानस रूपी शरीर के द्वादश भाव श्री राम के द्वादश भावों के साथ जुड़कर एक बहुत बड़ी सनातन घटना का संकेत करते हैं, इसी का उपपत्ति पूर्वक प्रतिपादन इस ग्रंथ में किया गया है।

मुझे विश्वास है कि यह ग्रंथ विद्वानों के प्रमोद का विषय होगा और मानस के अध्ययन को नया आयाम देगा।

काशी
मा.शु. १/२०५३
(ता. ११ दिसम्बर १९९६)

विद्या निवास मिश्र

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान

राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन हिन्दी भवन, महात्मा गाँधी मार्ग, लखनऊ – २२६ ००१

विनोद चन्द्र पाण्डेय
आई.ए.एस.
निदेशक

दूरभाष : २२५१७२

शुभकामना संदेश

मझे यह जानकार प्रसन्नता है कि श्री वी०बी० सिंह कृत पुस्तक 'मानस और ज्योतिष' प्रकाशित हो चुकी है और इसका लोकार्पण भी होने जा रहा है। तुलसी साहित्य तो महासागर जैसा विशाल और अगाध है। इसके अवगाहन विद्वान लेखक श्री सिंह ने तुलसी साहित्य से ज्योतिर्विज्ञान के तत्व को चुना है। यह कार्य निःसन्देह अप्रतिम है। इससे तुलसी साहित्य के इस नवीन पक्ष की जानकारी इस विषय के अध्येताओं को होगी, ऐसा मेरा विश्वास है। मैं श्री वी०बी० सिंह की मनीषा से बहुत ही प्रभावित हूँ और विश्वास के साथ कह सकता हूं कि हिन्दी जगत भी इससे अपेक्षित रूप से लाभान्वित होगा।

मैं 'मानस और ज्योतिष' जैसी कृति के प्रति, इसके लेखक के प्रति अपनी हार्दिक शुभकामनाएं व्यक्त करता हूं कि इसका व्यापक प्रचार - प्रसार हो जिससे कि विद्वान लेखक के विचारों से अधिकाधिक लोग लाभान्वित हो सकें।

❑ विनोद चन्द्र पाण्डेय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ. गिरिजाशंकर त्रिवेदी
एम.ए., साहित्यरत्न, विद्यावाचस्पति
संपादक नवनीत (हिन्दी डाइजेस्ट)

कार्यालय : ३६३१२६१
दूरभाष : : ३६३४४६२
निवास : ३०७९६३०

सम्मति

श्री वी०बी० सिंह गहन अध्येता स्वभाव के धनी हैं। इनके आलेख छापने का अवसर मुझे कई बार मिला है।

'मानस और ज्योतिष' पूरी तरह से शोध-ग्रंथ है। अतएव ये डाक्टरेट के पूर्ण अधिकारी हैं। महात्मा तुलसी का ग्रंथ 'रामचरित मानस' इतना अगाध है कि उसे जितनी बार पढ़ो, कुछ नया मिलता जाता है। भाई साहब ने उसके अध्ययन में तादात्म्य स्थापित कर उसमें से ज्योतिष के मोती ढूंढ निकाले हैं और एक सुंदर ग्रंथ का प्रणयन कर अपने लगनशील और श्रमसाध्य स्वभाव का पूरा परिचय प्रस्तुत कर दिया है। आशा है, विद्वत्समाज में इस ग्रंथ का हृदय से समादर होगा।

विमोचन-समारोह में तो उपस्थित न रह पाऊँगा, पर मानसिक रूप से मुझे उपस्थित मानें।

डॉ० गिरिजाशंकर त्रिवेदी
सम्पादक : नवनीत हिंदी

कार्यालय : नवनीत (हिन्दी डाइजेस्ट), भारतीय विद्या भवन, क.मा. मुंशी मार्ग, मुम्बई -४०० ००७
निवास : महाराज बिल्डिंग, प. वापूराव मार्ग, मुम्बई - ४०० ००८

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

॥ श्री हरिः ॥

डॉ शौनक ब्रह्मचारी

एम.ए.,एल.एल.बी., पी–एच.डी.

❑
सद्गुरु–धाम,
ब्रह्मावर्त (बिठूर), कानपुर

❑
उद्बोधन–समिति
१०७/२४१, नेहरू नगर,
कानपुर–१२
फोन : ५४१२३०

भारतीय-संस्कृति का मूल आधार इसका प्राचीन वाङ्मय है। भारत का सबसे प्राचीन वाङ्मय वेद के रूप में आज भी सुरक्षित है और ब्राह्मणादि ग्रन्थ समुदाय उसका आख्यात भाग है। वेद के सम्यक् अध्ययन, ज्ञान एवं प्रयोग के लिए प्राचीन ऋषियों ने शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरूक्त, छन्द और ज्योतिष को निर्मित किया है। ज्योतिष का मानव जीवन में एक विशेष मूल्य है। ग्रहों के आधार पर मानव जीवन संचालित होता है, इसका ज्ञान ज्योतिष के आधार पर ही होता है।

इस ग्रन्थ के लेखक एक विशिष्ट व्यक्तित्व सम्पन्न एवं अध्ययननिष्ठ व्यक्ति हैं। इनका जीवन कर्मठता का स्वरूप रहा है, प्रशासिक क्षेत्र में कार्यरत रहते हुए भी ज्योतिष की ओर अग्रसर होना यह सूचित करता है कि पूर्व जन्म में ये ज्योतिष के प्रकाण्ड विद्वान रहे हैं। ये काव्यप्रिय हैं। साहित्य में इनकी निष्ठा है।

पं० विन्ध्यवासिनी सिंह काशी क्षेत्र को गौरवान्वित करने वाले स्पष्ट व्यक्तित्व सम्पन्न विद्वान व्यक्ति हैं। निकटस्थ परिचय होने के कारण इनके व्यक्तित्व से मैं प्रभावित हूँ। इनका स्वभाव नारियल की तरह है। इनका हृदय अत्यन्त कोमल है। काव्यप्रिय व्यक्ति होने के कारण इनका स्वभाव होम्योपैथी गोली की तरह मृदु है। वाह्य मात्र व्यवहार से इनका वास्तविक परिचय पाना दुष्कर है। इन्होंने अपने जीवन में अर्थ का महत्व न देकर सद्व्यवहार को महत्व दिया जिसका परिणाम है कि आज इनके सहयोगी शतशः यत्र तत्र विद्यमान हैं किसी भी प्रकार का कार्य करने में इनका व्यवहार हर प्रकार से उपयोगी हो जाता है।

लेखन के साथ इनकी सम्पादन की शैली अद्भुत प्रतिभा सम्पन्न है। ये मानव-समाज की निधि हैं। इनका ग्रन्थ विद्वानों के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगा। ये समाज के गौरव हैं। मैं ऐसे प्रतिभा सम्पन्न व्यक्तित्व को पाकर अपने को गौरवान्वित मानता हूँ।

परम पिता परमेश्वर से बार-बार प्रार्थना है कि इनका व्यक्तित्व एवं कृतित्व हर प्रकार से सुरक्षित रहे ताकि समाज का कल्याण होता रहे।

❑ शौनक ब्रह्मचारी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आचार्य वागीश शास्त्री

अध्यक्ष
ज्योतिष-तन्त्र प्रतिष्ठान
'एफ' ब्लाक, किदवई नगर
कानपुर - २०८ ०११

विश्व साहित्य के अन्तर्गत अनन्तम चारित्रिक साहित्य के विनिर्माता कविकुल गुरु गोस्वामी तुलसीदास जी की विलक्षण प्रतिभा एवं षट्शास्त्रीय परिज्ञान की व्यापकता उनके साहित्य को न केवल ज्ञान-भक्ति व वैराग्य का दिग्दर्शन कराती है, अपितु सामाजिक-सांस्कृतिक व नैतिक व्यवस्थाओं एवं दिशाओं को भी प्रतिबोधित कराती हुई जन-मानस को एक शाश्वत व दिव्य संदेश भी देती है। प्रस्तुत विवेचनात्मक ग्रन्थ "मानस और ज्योतिष" उनके षट्शास्त्रान्तर्गत एक पक्ष मात्र ज्योतिष का विशद व्याख्यान है। इस ग्रन्थ में गोस्वामी जी के अपरिमित ज्योतिर्विज्ञान का जिस विशदता व समग्रता के साथ वर्णन किया गया है, वह निश्चय ही स्तुत्य प्रयास है जो विवेचनाकार की ज्ञान गरिमा को उच्च पदस्थ करती है। भारतीय आध्यात्मिक तथा लौकिक चिन्तन के अन्तर्बाह्य पक्ष का विस्तृत विवेचन एक, विशिष्ट शोध-ग्रन्थ की समग्रता को यशस्विता प्रदान करने में अग्रणी है।

यह शोध ग्रन्थ ज्योतिष के समग्र ज्ञान का प्रतिबोधक न होकर मात्र गोस्वामी जी के ज्योतिष परिज्ञान का संसूचक है। इस शोध प्रबन्ध के अनुसंदिधित्सु श्री विन्ध्य वासिनी सिंह ज्योतिष शात्र के सम्मान्य व मर्मज्ञ मनीषी है, उन्होंने ज्योतिष के साथ ही साथ अन्य शास्त्रीय पक्षों को भी प्रकाशमान कर अपने विशिष्ट ज्ञान के सन्निवेश द्वारा जिज्ञासुओं के लिए महदुपकार का सत्कार्य सम्पन्न किया है। हमे पूर्ण विश्वास है कि इस शोध-ग्रन्थ का विद्वमन्डली में यथेष्ट स्वागत व सम्मान होगा।

२०-१२-१९९६

❑ आचार्य वागीश शास्त्री

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दिल्ली कार्यालय :
501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली – 110 001
फोन : 3714588, 3715792, फैक्स : 3716371
कानपुर कार्यालय :
2, सर्वोदय नगर, कानपुर – 208 005
फोन : 216161-64, फैक्स : 218791, 216972

नरेन्द्र मोहन
संसद सदस्य

प्रिय सिंह साहब,

जानकार हर्ष हुआ कि "मानस और ज्योतिष" नामक ग्रंथ की रचना आपने की है। मानस का संबंध अध्यात्म से है और ज्योतिष भी एक अर्थ में अध्यात्म से ही जुड़ी हुई है। केवल उसी व्यक्ति को वास्तविक ज्योतिष का ज्ञान हो सकता है, जिसने आध्यात्मिक चेतना का विकास कर लिया हो। महाकवि तुलसीदास ने रामचरित मानस में अनेक स्थलों पर ज्योतिष का प्रयोग विभिन्न माध्यमों से किया है। आपने इस पर शोध किया और ग्रंथ की रचना की, इसके लिए कृपया मेरी बधाई स्वीकार करें।

सादर-शुभकामनाओं सहित,

भवदीय,
नरेन्द्र मोहन

श्री वी.बी. सिंह
कानपुर।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ओम प्रकाश डरोलिया

नियंत्रक (वित्त एवं लेखा)
लोहिया स्टारलिंगर लिमिटेड
डी-३-ए, पनकी औद्योगिक क्षेत्र,
कानपुर - २०८ ०२२
दूरभाष : २२५१७२

मानवीय सभ्यता के इतिहास में कुछ ऐसी प्रतिभायें भी होती हैं, जिन्हें देश - काल की सीमायें बाँध नहीं पाती। ऐसी प्रतिभाओं का परिचय चिरन्तन विश्व की व्यापकता में ही मिलता है। श्रद्धेय श्री विंध्यवासिनी सिंह जी एक ऐसी ही प्रतिभा हैं।

मेरा उनसे प्रथम परिचय सन् १९६८ में हुआ जब वे कानपुर में आयकर अधिकारी के पद पर कार्यरत थे। एक समय तक तो मैं उन्हें केवल एक योग्य आयकर अधिकारी के रूप में ही जानता रहा। कुछ अन्तराल पश्चात् उनके पुत्र श्री सुधीर सिंह के सानिध्य से उन्हें और निकट से जानने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, तथा उनके पूर्ण परिवार से मेरे घनिष्ठ सम्बन्ध हुए और वहीं से उनके साहित्य, दर्शन एवं ज्योतिष ज्ञान को प्रत्यक्ष रूप में देखने का अवसर प्राप्त होता रहा।

उन्होंने आयकर अधिकारी के पद का पूर्ण दायित्व निर्वाह करते हुए भी उतना ही समय अपनी साधना में दिया जितना कि समय एक साधारण व्यक्ति अपनी अजीविका कमाने एवं अपने को सुख सुविधा से सम्पन्न करने में लगाता है। आपका जीवन प्रारम्भ से ही साधनामय रहा और आज यह उसी साधना का ही परिणाम है कि जीवन के अन्य दायित्वों का निर्वाह करते हुए भी, अपनी पुस्तक "मानस और ज्योतिष" की रचना का दुःसाध्य कार्य किया। मनस्वी, यशस्वी और साहसी लोग ही यह सब कर सकते हैं।

मुझे याद है कि एक बार पुस्तक के प्रकाशन के सन्दर्भ में चर्चा होने पर मैंने श्री सिंह साहब के सम्मुख अपना संशय प्रकट किया तो वे हँसकर बोले "जिसका कार्य है, जो इसे करा रहा है वह स्वयं इसकी व्यवस्था करेगा। हम लोग तो निमित्त मात्र हैं, अपना कर्तव्य करें, चिन्ता के झंझट में क्यों पड़ें।" मेरे पास चुप रहने के अतिरिक्त कोई मार्ग न था।

आज मन को आनन्द की अनुभूति हो रही है, क्योंकि श्रद्धेय श्री सिंह साहब की ज्योतिष दर्शन पर लिखी शोधपरक नवीन पुस्तक "मानस और ज्योतिष" प्रकाशन के अन्तिम पड़ाव पर है तथा शीघ्र ही इसका विमोचन समारोह है।

मैं तो अपने बारे में केवल यही ही कह सकता हूं कि मेरा जीवन पथ सदा उनकी प्रेरणा के प्रकाश से आलोकित होता रहा है। मेरी ईश्वर से सदा कामना है कि उनके स्नेह की छाँव सदैव प्राप्त होती रहे। ईश्वर से यही प्रार्थना है कि यह पुस्तक ज्योतिष शास्त्र के विद्वानों, साहित्यकारों व पाठकों के लिए नये आयाम रचे एवं पाथेय सिद्ध हो।

❑ ओम प्रकाश डरोलिया

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

।। साधुवाद ।।

मुझे यह जानकर बड़ी प्रसन्नता है कि सिंह साहब ने "मानस और ज्योतिष" विषय पर एक दुर्लभ शोध ग्रन्थ लिखा है जिसका विमोचन ८ जून १९९७ को होना निश्चित हुआ है। मैं इस अवसर पर श्री सिंह साहब के सम्बन्ध में दो शब्द लिखना अपना पुनीत कर्तव्य समझता हूँ।

श्री विंध्यवासिनी सिंह जी से मेरा परिचय सन् १९७१ में हुआ जब उन्होंने फर्रुखाबाद में आयकर अधिकारी के पद पर कार्यभार ग्रहण किया। उस समय हम लोग भी फर्रुखाबाद में थे। सिंह साहब उच्चकोटि के व्यक्तित्व के धनी हैं और इनके स्वभाव में धन की लिप्सा नाम मात्र की भी नहीं रही। अपने कार्यकाल में अपने कर्तव्य का निर्वाह बिना किसी पक्षपात के करते थे। अपने आत्म सम्मान के प्रति विशेष रूप से सजग रहने के कारण सिंह साहब की घनिष्टता चुनिन्दा लोगों से ही रही।

मेरी इतना मित्रता होने के बाद भी मैं आदरणीय सिंह साहब के मानस साहित्य एवं ज्योतिष ज्ञान से अनभिज्ञ रहा, इसको मैं अपना दुर्भाग्य ही मानूँगा। रामचरित मानस में अनन्य गुण निहित हैं, किन्तु रामायण की ज्योतिष के माध्यम से व्याख्या करना सिंह साहब, जैसे मनीषी का ही दुर्लभ प्रयास है। जहाँ तक मुझे ज्ञान है मानस की इस ढंग की व्याख्या भारतवर्ष में किसी विद्वान ने नहीं की। रामचरित मानस भारतीय जीवन दर्शन का प्रमुख मार्गदर्शक रहा है और सदैव ही रहेगा।

मैं भगवान श्री रामचन्द्र जी के चरणों में समर्पित इस पुस्तक को लिखने के लिये श्री सिंह साहब को साधुवाद देता हूँ।

३० मई १९९७ ❑ जीतेन्द्र कुमार लोहिया

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुपारसनाथ जैन

जैन-भवन
४६/१५१ हालसी रोड
कानपुर

पहले पहल जब उनसे मिला तो ऐसा प्रतीत हुआ कि एक बनारसी अक्खड़ से भेंट हुई। धीरे-धीरे परतें खुलती गईं और पण्डित जी के स्वरूप का निखार होता गया, और सम्मुख आया एक विनयशील, फक्कड़ एवम् संवेदनशील व्यक्तित्व जिसका अन्दाज़ ठेठ बनारसी था। मुंह में दो बीड़ा पान, बढ़िया तम्बाकू की सुगन्ध दोस्तों के दोस्त, ज्योतिष के मनीषी, और अच्छे खिलाड़ी। गँठा हुआ शरीर, प्रतिभाशाली व्यक्तित्व के धनी हृष्ट पुष्ट पण्डित विन्ध्यबासिनी सिंह मेरे अपने हैं।

जब भी हम दोनों बैठे, बातों का सिलसिला शुरू हुआ और कुछ समय पश्चात् ग्रह, नक्षत्र एवं ज्योतिष ही बातों का विषय रह गया। समय कैसे भागता गया प्रतीत ही नहीं हुआ। पण्डित जी का ज्योतिष ज्ञान पूर्णतया शास्त्रोक्त एवं तर्क संगत है जब वे मूड में हों तो उनकी एकाग्रता के नमूने निम्नांकित हैं:

- श्रीमती इन्दिरा गांधी के बारे में एक दिन बात चल रही थी। उनकी जन्मपत्र पर विचार शुरू हुआ। काफी समय तक अध्ययन के पश्चात् चुप हो गये जब पूँछा कि क्या देख रहे हैं कुछ कहिये, तो बोले, कहें का कुछ होय तो कही। अस्वाभाविक मृत्यु योग चल रहा है। ई महीना निकल जाये ऐसन दिखाई पड़त है।'

- स्वर्गीय राजीव गांधी के बारे में भी उनकी भविष्यवाणी पूर्णतया सही निकली। उन्होंने कहा था कि राजीव गांधी की मृत्यु भी किसी विस्फोट द्वारा होगी।

- पूर्व प्रधानमंत्री श्री राव जी के बारे में उन्होंने कहा था कि वे पांच वर्ष का समय पूरा करेंगे किन्तु प्रधानमंत्री पद मजबूर होकर छोड़ना पड़ेगा।

देवी माँ के साधक एवं निष्ठावान पुजारी पण्डित जी का साहित्य में बहुत अनुराग है। रामचरित मानस एवं तुसलीदास को पढ़ा और गुना है। समुद्र की गहराइयों से मोती खोज निकालने की उनकी पुरानी आदत है। अनेक बार उनकी आस्था को परिपक्वता मिली और उनका तुलसीदास जी पर अध्ययन चलंता ही रहा। अन्ततोगत्वा उन्होंने यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि ज्योतिष नक्षत्रों की विद्या है। नक्षत्रों के सही अध्ययन से सही फलादेश किया जा सकता है।

❑ सुपारसनाथ जैन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सेवक वात्स्यायन

भू.पू. हिन्दी विभागाध्यक्ष,
काइस्ट चर्च कालेज, कानपुर

एफ–१३, किदवई नगर
कानपुर – २०८ ०११

ज्योतिर्मानस

यदि मेरी विवक्षा समय पर होती तो इस ग्रन्थ का नामाभिधेय 'ज्योतिर्मानस' भी हो सकता था पर अब इसकी शुभा संज्ञा 'मानस और ज्योतिष' या 'ज्योतिष और मानस' है। परात्परा प्रतिभा का पर्याय है यह ग्रन्थ, क्योंकि असंशयेन गोस्वामी जी के प्रतिभा स्पर्श से अपराभूता मनीषा, मेधा, सुधा–विधविद्या और विविधात्त्व की परिक्रमा का जन्म और पुनर्जन्म वारम्वारी अजस्रता में सम्भव बनता है। बाबू विन्ध्य बासिनी सिंह की इस सुकृता कृति में इसी फलित के दर्शन होते हैं। सुदृष्टिमान श्री सिंह ने गोस्वामी जी के अन्तर्ज्योतित और त्रिकालजयी रामचरित मानस में भक्त्यवगाहन कर सुबुद्ध्यवगाहन–सोपानों में अवस्थित होकर संसृति–चक्र के अर–गणन का तुष्टि संग्रदा–संयत्न किया है। । जिससे तुलसीदास–काव्य के अब तक किए गए अध्ययन पर आलोक की नूतन रश्मियाँ विकीर्णित होती प्रतीत होती हैं। रामचरित मानस संसार के समानान्तर एक संसार है, जो यहाँ है, वह वहाँ है और जो यहाँ नहीं–जैसा है वह भी वहाँ हुआ जैसा है – यही कारण है कि इस संसार की तुल्य–योगिता में तुलसी का संसार कहीं अधिक निःश्रेयस् के साथ कहीं अधिक सुविश्वसनीय है और शरण्य भी।

मानस–कार तुलसी इन सभी विद्याओं में ज्योतिष के प्रकाण्ड अन्वेष्टा सुपण्डित थे और इस प्रकार तुलसीदास का रामचरित मानस ज्योतिर्विद्या का भी अगाध समुद्र है जिसमें अवगाहन कर श्री विन्ध्य बासिनी सिंह ने सब न सही, सब सम्भव भी नहीं है पर्याप्त ज्योतिर्मान रत्न खोज निकाले हैं। मानस के कथा प्रसंगों, चरित्रों, घटनाओं, संभावनाओं, आशंकाओं आदि के संदर्भ में मानस के ही परिप्रेक्ष्य में श्री सिंह ने ऐसे गणितात्मक और फलितात्मक प्रसंगों का सटीक विश्लेषण उदाहृत किया है जिससे यह धारणा बलवती होती है कि मानस के साथ ही साहित्य की कालजयी रचनाओं के प्रबंध–प्रक्रम में यदि इनका ज्योतिर्विज्ञान मूलक अध्ययन करने का मार्ग सुप्रशस्त हो जाये तो अध्येताओं को काव्य का एक और अभिनव प्रयोजन भी सदैव के लिए उपलब्ध हो सकेगा। श्री सिंह ने अपनी इस कृति द्वारा हमारा ज्ञान–सम्बर्द्धन तो किया ही है, इस दिशा के लिए एक नूतन और सर्वथोपयोगी पथ भी प्रशस्त किया है। श्रीयुत विन्ध्य बासिनी सिंह जी ने ज्ञान–विज्ञान का यह महज्ज्योतिश्शास्त्र श्री राम चरित्र मानस में गणित–फलित पाया है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सिद्धेश्वर अवस्थी

अवस्थी एण्ड कम्पनी
कचेहरी रोड, सिविल लाइन्स
कानपुर।

शुभाकांक्षा

ज्ञान-सागर की अथाह गहराइयों में उतरने वाले ज्ञानियों का अपना मानना है कि वैराग्य, योग, दर्शन, भक्ति एवं पारिवारिक एवं सामाजिक संगठन की रीति-नीति के मर्यादित विम्ब मानस-पटल की शोभा-सुगन्ध के अद्भुत, आयाम हैं। जिसकी जो भी चाहना है - मानस में सब कुछ विद्यमान है।

मानस की छन्द-योजना का संगीत और लय साधक को अनहद के स्पन्दन से एकाकार कर उसे जन्म-मृत्यु की कथा से सदैव के लिए मुक्त कर देता है।

मोटे तौर पर इतना जानने और समझने के बाद जब श्री विन्ध्यबासिनी सिंह से भेंट हुयी तो ज्ञात हुआ कि वे राम चरित मानस की कथा और छन्द धारा में ज्योतिष जैसे गूढ़ विषय की मार्मिक खोज के निमित्त वर्षो से कठोर साधना कर रहे हैं।

वर्षों पूर्व का वह कौतूहल आज 'मानस और ज्योतिष' ग्रन्थ के रूप में साकार हो हम सबके हाथों में है। मानस की इस उपलब्धि से आज के अनेक विद्वान, ज्योतिष के गूढ़ रहस्यों के मर्मज्ञ तथा मानस का नित्य पारायण करने वाले इस मौलिक खोज का हृदय से स्वागत करेंगे।

इस महती आशा के साथ मैं इस ग्रन्थ के रचनाकार श्री विन्ध्यबासिनी सिंह को अपना प्रथम प्रणाम निवेदित करता हूँ।

❑ सिद्धेश्वर अवस्थी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

।। शुभ कामना ।।

'मानस और ज्योतिष' शीर्षक ग्रन्थ को प्रकाशित होते देखकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। यों तो गोस्वामी तुलसीदास और उनकी अमरकृति रामचरित मानस को लेकर अनेक ग्रन्थ लिखे गये हैं परन्तु तुलसी के ज्योतिष परिज्ञान की गहरी मीमांसा वाले ग्रन्थों की अभी कमी है। प्रस्तुत ग्रन्थ इस दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास है।

'मानस और ज्योतिष' के साधनानिष्ठ लेखक श्री वी०बी० सिंह समर्पित जीवन के व्यक्ति हैं। अपने जीवन का ढेर सारा समय इन्होंने मानस अनुशीलन और सत्संग में व्यतीत किया है। गोस्वामी तुलसीदास का मानस इनके लिये वेद वाणी है। अपने इस ग्रन्थ में इन्होंने जिस विषय पर विचार किया है वे सभी जिज्ञासुओं के लिये रुचि और उत्तेजना के विषय हैं। ग्रन्थ को पढ़कर श्री रामचरित मानस के अनुशीलनकर्ताओं को अवश्य ही वैचारिक सामग्री मिलेगी।

मेरा विश्वास है कि प्रस्तुत ग्रन्थ से सुधी विचारकों और अनुशीलकों को निश्चय ही आनन्द प्राप्त होगा। लेखक की निजी अभिरूचि और स्वतंत्र अनुसंधान की प्रवृत्ति सर्वथा प्रशंसनीय है।

❑ डॉ० संकटा प्रसाद पाण्डेय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

SHRI TILAK
ADVOCATE

2A/407, AZAD NAGAR, KANPUR-208 002
PHONES : 547097, 546140

पं० बी० बी० सिंह नाम है एक ऐसी बेजोड़ शख्सियत का जो ब्राह्मण की चर्या, क्षत्रिय की तेजस्विता, वैश्य की व्यवहार कुशलता और शूद्र की सेवा परायणता से मिल कर बनी है। बरसों के पड़ोसी पंडित जी को मैंने कुछ को छोड़कर हर रंग में देखा है- चोटी के आलिमों के बीच मीरे-मजलिस की शक्ल में भी और खुरपी-झाड़-झाड़न लिये माली, भिश्ती और फर्राश बने हुए थी।

उनके गहन अध्ययन और लेखन पर मेरा कुछ भी कहना छोटे मुंह बड़ी बात होगी खास कर उनके शोध ग्रन्थ "मानस और ज्योतिष" पर। मगर इतना तो बेहिचक कहा ही जा सकता है कि वे पहिले खोजी हैं जिन्होंने तुलसी दास जी के ज्योतिष मर्मज्ञ को उजागर किया है।

आशा करता हूं हमारे शोधार्थी ब्रह्मर्षि पंडित वी०बी० सिंह जी के बहुआयामी व्यक्तित्व के विभिन्न पक्षों को उजागर करेंगे।

❑ श्री तिलक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भागवत प्रसाद शर्मा

आई०आर०एस० (रिटायर्ड)

।। अभिनन्दन ।।

'मानस और ज्योतिष' श्री विन्ध्यवासिनी सिंह जी की मानस में ज्योतिष की अन्तर्निहित भावनाओं की अभिव्यक्ति का साहसिक प्रयास है। साहित्य की इस अछूती विधा में उनका यह प्रयास प्रशंसनीय है। श्री सिंह वहुआयामी व्यक्तित्व के धनी हैं। वह जिस सन्दर्भ में भी प्रयास रह रहते हैं उसके प्रति उनकी निष्ठा एवम् समर्पण उनके व्यक्तित्व को स्पष्ट परिमार्जित करता है। विषय के सामान्य ज्ञान से संतुष्टि उनकी आदत नहीं है उसके सभी अवयवों, अन्तर्निहित अदृष्य भावों और सभी दृष्टियों से विषय में पारंगत होने की उनकी ललक उनके व्यक्तित्व की देन है। पूर्णता में विश्वास उनका आधार रहा है। उनके अन्तःमन की अवधारणा उसके सम्पूर्ण ज्ञान के लिए प्रतिवद्धता की द्योतक है।

उनसे मेरा सम्पर्क पिछले पचास वर्षों से है। वह वचपन से ही वड़े क्रियाशील रहे हैं। जिस क्षेत्र में रूचि रही उसी में पूर्ण सफलता प्राप्त करना उनका अभीष्ट था वाल्यकाल में वह एक सफल खिलाड़ी थे। खेल के उत्तरोत्तर विकास में वढ़ावा देने में भी वाराणसी जनपद में उनका विशिष्ट योगदान रहा है। स्वयं तो एक उत्कृष्ट खिलाड़ी थे ही, दूसरे खिलाड़ियों की प्रतिभा का सम्मान एवम् हर क्षेत्र में प्रोत्साहन भी उनके कार्यकलाप का एक अंग रहा है।

एक आयकर अधिकारी के रूप में विभाग में उनकी कर्तव्यनिष्ठा की एक अपनी ही छवि थी। मानस से उनका लगाव वचपन से ही था। ज्योतिष उनकी प्रिय हावी रही है। दोनों के ही प्रति उनका समर्पण वन्दनीय है। उनका समन्वय उनके अथक प्रयासों का ही प्रतिफल है जो इस पुस्तक के रूप में हमारे सामने है। साहित्य की इस विधा में यह संभवतः प्रथम प्रयास है। इस पुस्तक से जहाँ एक कमी पूर्ण होगी वहीं एक नए दृष्टिकोण के आयाम का आभास भी मिलेगा। इस पुस्तक से सुधी पाठकों को एक नई दिशा एवम् ज्ञान का अनुभव तो होगा ही एक सुरुचिपूर्ण साहित्य की कभी से मुक्ति का भी एहसास होगा।

मैं उनके इस साहसिक प्रयास का अभिनन्दन करता हूँ और पूर्ण सफलता की कामना करता हूँ।

❑ भागवत प्रसाद शर्मा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बी० प्रकाश

एम.ए.,आई.आर.एस. (अव.प्रा.)

११७/२१ए, एच-२
पाण्डुनगर, कानपुर
दूरभाष : २१५५७८

विविध प्रतिभाओं का संगम हैं 'भैया' वी०बी० सिंह

विभागीय कार्यों में पैनी दृष्टि वाला अन्वेषक - परन्तु मृदु लोक प्रिय व्यवहार की चाश्नी में पगा हुआ - लेखक, साहित्यकार, मनीषी, ज्योतिष का प्रकाण्ड पंडित, रामचरित मानस का गहन जिज्ञासु, फूल पौधों का प्रवीण वागवान, कुशल छाया चित्रकार - इन सारी प्रतिभाओं को विलोकर जो नवनीत निकला उसी से वना श्री विन्ध्यवासिनी सिंह का वहुआयामी व्यक्तित्व।

मेरे लिए तो यह वड़े गर्व और गौरव की वात है कि उनके शोध ग्रन्थ 'मानस और ज्योतिष' के विमोचन की पुण्य वेला पर उनके वारे में कुछ लिखने का अवसर मिला। उनसे परिचित होने का सौभाग्य तो आयकर विभाग के माध्यम से ही मिला। १९६९ में अव मैं आयकर अधिकारी नियुक्त होकर कानपुर आया तो सिंह साहव एक वरिष्ठ अधिकारी के पद पर पहले से ही यहाँ आसीन थे। स्वभाव का मेल गहराता गया और परिचय धीरे-धीरे प्रगाढ़ मित्रता का रूप लेता गया। १९७९, ८० में तो दोपहर का लंच उन्हीं के कक्ष में होता था जहाँ हम पाँच, छः लोग इकट्ठे चाय नाश्ता करते थे- और साथ में वौछार होती रहती थी सिंह साहव के हास परिहास की।

वह स्वभाव से ही वड़े हंसमुख हैं। उनके पास थोड़ी देर ही वैठकर काम की कुल्फत दूर हो जाती थी। सेवा निवृत्ति के पश्चात् उनके साथ वीते सुखद क्षणों की स्मृति-वयार अभी भी मन को कभी कभी गुदगुदा जाती है। पनडव्वे में से निकालकर मुस्कुराहट और सहज सुहृदयता के साथ उनका पान पेश करना याद आता रहता है। इसी अपने पन के वातावरण में अनेक गहन सामाजिक, एवं दार्शनिक विषयों पर चर्चा होती रहती थी जिसमें उनकी अध्ययनशीलता और कुशल अभिव्यक्ति का परिचय मिलता था। अभी भी, जव अवसर मिलता है, ऐसी चर्चाएं चलती रहती हैं। प्रख्यात साहित्यिक संस्था 'श्रृंगार संध्या' के तो वह प्राण स्वरूप हैं। सर्व विदित है कि इस संस्था ने कानपुर में कई शीर्ष कवि सम्मेलन आयोजित किए जो शहर के साहित्यिक इतिहास की धरोहर रहेंगे। इस माध्यम से सिंह साहव ने काव्य संरचना को प्रवल प्रोत्साहन प्रदान किया। 'ब्रह्मर्षि संदेश' पत्रिका का कुशल संपादन करके उन्होंने लेखन के क्षेत्र में अद्भुत कार्यक्षमता और प्रवीणता का परिचय दिया है।

इन सारी गतिविधियों के साथ-साथ फूलों का शौक जैसे का तैसा कायम है। आज भी घर की फुलवारी में गुलाव, डहेलिया और दाऊदी वैसे ही भरे भरे मुस्कुराते हैं जैसे सेवा काल में स्वरूप नगर कालोनी वाले मकान की छत पर किसी स्टेज के वैंक ड्राप की उत्कृष्ट सजीली सीनरी में जड़े हुए से मुस्कुराते थे। मैं इस सवको उनके अर्न्तमन के सदावहार गुलशन का रंग विरंगा अनुवाद ही मानता हूँ।

'मानस और ज्योतिष' सरीखे नितान्त नवीन शोध ग्रन्थ के रचनाकार के रूप में उनका वारम्वार अभिनन्दन है। रामचरित मानस के प्रति उनकी अगाध श्रद्धा और ज्योतिष के प्रति समर्पित विद्वता के संगमन से ही इस उत्कृष्ट ग्रन्थ का सृजन सम्पन्न हो सका है जिसके लिए सिंह साहव को जितनी वधाई दी जाये कम है। अपनी मौलिक रूचि और लेखन ऊर्जा की सशक्त अभिव्यक्ति दर्शाकर उन्होंने सचमुच ही एक अनूठा प्रयास किया है।

'भैया' के सद्स्वास्थ्य और दीर्घ जीवन के लिए प्रार्थना करते हुए इस अनुपम ग्रन्थ की पूर्ण सफलता की शुभकामना करता हूं। ईश्वर की ऐसी कृपा हो कि वह हिन्दी साहित्य को ऐसे ही वहुमूल्य रत्नों से मालामाल करते रहें। अस्तु।

❑ बी० प्रकाश

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ले० कर्नल प्रभाकर राय
कालेज ऑफ मिलेट्री इंजीनियर्स
पुणे :

मेरे श्वसुर, श्री वी०बी० सिंह (पापा जी) के व्यक्तित्व में चुम्बकीय आकर्षण है। वे धर्मपरायण और ज्योतिष शास्त्र व रामचरित मानस के प्रकाण्ड ज्ञाता हैं। उनके सम्पर्क में जो भी व्यक्ति आया, उनके व्यक्तित्व एवं विद्वता से बिना प्रभावित हुये नहीं रह सका। उनकी ईश्वर में भक्ति एवं रामचरितमानस ज्ञान ने मेरे पिताजी को इतना प्रभावित किया कि उन्होंने मेरे विवाह का प्रस्ताव निःसंकोच स्वीकार कर लिया। मैं इसे अपना सौभाग्य ही मानता हूँ कि पापा जी का संपर्क मुझे मिला। उनकी जीवन शैली एवं ज्ञान मैंने से बहुत कुछ पाया है। उनकी एकाग्रता एवं कार्य के प्रति भक्ति एवं लगन हम सभी को अचम्भित कर देती है। अपने फौजी दृष्टिकोण से मुझे पापा जी में एक फौजी प्रवृत्ति स्पष्ट दिखाई देती है जिसने उन्हें कितनी भी विपरीत परिस्थितियों में अपने लक्ष्य की ओर सदा अग्रसर रखा। पापा जी की कठोर साधना ने इस पुस्तक "मानस और ज्योतिष" के रूप में साकार रूप ले लिया है। इसे देखकर हम सभी को अपार हर्ष व गर्व का अनुभव हो रहा है।

ईश्वर उन्हें भविष्य में अपने ज्ञान को इसी तरह लिपिबद्ध करने की प्रेरणा व शक्ति दें, यही हम सबकी कामना है।

❑ प्रभाकर राय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुधा राय

पिता का स्थान तो संतान के लिए सर्वोपरि है ही, यह सर्वविदित है। ईश्वर को हम जगत्पिता, परमपिता कहकर स्मरण करते हैं। जिस मार्ग दर्शन की हमें आवश्यकता है वह प्रारम्भ से अंत तक वही हमें देता है। वही मार्ग दर्शन मुझे मेरे पिता श्री विन्ध्यबासिनी सिंह से मिला है। मैं तो अपने जीवन में ईश्वर का सबसे बड़ा आशीर्वाद यही मानती हूँ कि जिस व्यक्तित्व का कुछ क्षण मात्र का सानिध्य प्राप्त करके लोग गौरवान्वित अनुभव करते हैं वह स्वंय मेरे पिता हैं।

उनके बहुमुखी प्रतिभा-धनी व्यक्तित्व ने बचपन से ही प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से मेरे मानस पटल पर एक अमिट छाप छोड़ी है। एक अधिकारी का जीवन व्यतीत करते हुए भी उन्होंने जीवन के हर क्षेत्र को न सिर्फ छुआ है अपितु उसे जिया है। चाहे वह होम्योपैथी ओ या बागवानी, अध्ययन क्षेत्र हो या खेलकूद, हर क्षेत्र में उन्होंने अपनी अलग पहचान बनाई है। जीवन के इन विविध क्षेत्रों में महारत पाने का रहस्य जहाँ तक मैं समझती हूँ यही है कि उन्होंने जीवन का क्षण मात्र भी व्यर्थ नहीं गँवाया। मेरे मानसिक व भौतिक जीवन के हर कोने को उनके विचारों ने पूर्णतया प्रभावित किया। यादें, संस्मरण तो अनगिनत हैं, कागज के चन्द टुकड़ों पर कहाँ तक उन अनुभूतियों को बाँधा जा सकता है। पिता के रूप में उन्होंने अपने विचारों, पसन्द-नापसन्द को कभी हमारे ऊपर आरोपित नहीं किया। उनकी निःस्वार्थ कर्तव्यपरायणता, ज्ञान की कठिन साधना, सादर व आत्म तुष्ट जीवन जीने का ढंग ही हमें सब कुछ दे गया। जीवन के हर मोड़ पर उनकी बातें ही नहीं, उनके कर्म याद आते हैं। मैंने उन्हें बड़ों का सम्मान व छोटों का मान करते ही देखा है।

प्रारम्भ से ही इस भौतिक जगत में रहकर भी उनका अपना जगत ज्ञान जगत ही रहा। जीवन भर उन्हें बस पढ़ते लिखते ही पाया। दूर रहकर भी उनकी छवि याद आती है तो एक मेज, पुस्तकों का अंबार, कलम लिए सर झुकाए उनकी छवि सामने आती है। श्री 'रामचरितमानस' व ज्योतिष दोनों ही उनके जीवन के अभिन्न अंग है। ये उनके लिये मात्र शोध का विषय नहीं, उनकी भक्ति उनकी साधना उनके प्रेम की पराकाष्ठा है। पापा जी की एकाग्रता के लिये क्या कहूँ जब उनकी पुस्तक व कलम सामने हो तो बड़े से बड़ा व्यवधान भी उनका ध्यान भंग नहीं कर सकता। बचपन से ही उनकी ज्ञान चर्चा से सुख प्राप्त किया है।

.आज भी अपने बच्चों के सामने अनेक बार उन बातों को दोहराने में बेहद आनन्द मिलता है। आज जब पापा जी की पुस्तक "मानस और ज्योतिष" प्रकाशित हुयी तो मैं अपने उद्गार लिख नहीं पा रही हूँ। पुस्तक हाथ में लेकर ही ऐसा लगा जैसे पापा जी की पूजा व साधना ने साकार रूप ले लिया हो। यह असाधारण पुस्तक मुझे अपने पापा जी का आशीर्वाद में उठा हुआ हाथ सी लगी जो मेरे सर को छू रहा हो। बेटी के रूप में उनसे जो सीखा-पाया उसने मुझे प्रबल आत्मविश्वास दिया है। ईश्वर में मेरी आस्था को प्रगाढ़ किया है। उनके जीवन ज्ञान का एक अंश भी यदि मैं अपने में उतार सकी तो मैं अपना जीवन सार्थक समझूँगी।

· ❑ सुधा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुधीर सिंह

सहायक प्रवन्धक (लेखा एवं कर विभाग)
लोहिया स्टार लिंगर लिमिटेड
डी./३ए पनकी औद्योगिक क्षेत्र
कानपुर - २०८ ०२२

अपने वचपन से मैंने पापा जी को एक नायक के रूप में देखा। उन्होंने जिस क्षेत्र में भी कदम रखा, शिखर पर ही रहे। खेल के मैदान में एक उत्कृष्ट खिलाड़ी रहे तो आयकर विभाग में उनके सहकर्मी, उच्चाधिकारी और व्यापारी उनकी पैनी दृष्टि एवं लेखा व विधि ज्ञान का लोहा मानते रहे। उनके होम्योपैथी ज्ञान व अनुभव का लाभ तो मित्र, सम्वन्धी और अड़ोसी-पड़ोसी लेते ही रहे हैं। एक कुशल छायाकार होने के नाते सौन्दर्य के प्रतीक पुष्पों से विशेष लगाव रहा। चाहे आयकर कालोनी के क्वार्टर की छत हो या किसी भी मकान का आँगन या वागीचा पापा जी के हाँथों के जादू से वह फूलों का श्रंगार किये किसी अप्सरा सा सुन्दर वन जाता था।

इन विभिन्न क्षेत्रों में पारंगत होने के लिये जो ऊर्जा उनमें है उसका स्रोत है उनकी भक्ति। संत कवि गोस्वामी तुलसीदास कृत 'राम चरित मानस' पापा जी के रग-रग में वसी है और ज्योतिष उनके मानस में। ज्योतिष, अध्यात्म एवं मानस के उनके गहन अध्ययन एवं चिन्तन ने उन्हें समाज में 'ज्योतिष एवं मानस मर्मज्ञ' की संज्ञा दिलायी। पापा जी तो हमेशा से ज्ञान से व्यवसायीकरण के कट्टर विरोधी रहे। इसीलिये उनके आध्यात्मिक प्रवचन किसी के लिये दुर्लभ नहीं थे। अपनी समस्यायें लेकर आये मित्रगण एवं सम्वन्धियों के साथ ड्रांइगरूम में वैठ पापा जी की ज्योतिष चर्चा अव मानस और अध्यात्म की सरिता का रूप ले लेती तो उसका प्रवाह रसोई घर से वेडरूम तक सभी परिवारजनों को अपने साथ वहा ले चलता है। परन्तु सभी उनसे यही आग्रह करते कि अपने अगाध ज्ञान को लिपिवद्ध करके विद्वानों एवं मानस प्रेमियों के चिन्तन को नई दिशा दिखायें। आखिरकार उन्होंने वे आग्रह स्वीकार कर समाज या देश को ही नहीं अपितु पूरे विश्व को "मानस और ज्योतिष" शोध ग्रन्थ अनमोल उपहार स्वरूप दिया है। उनकी जीवन भर की कठोर साधना का फल है यह ग्रंथ।

आज हमारे हर्ष की सीमा नहीं है। मैं अपने उद्गारों को शव्द देने में असमर्थ हूँ। पापाजी की भक्ति और साधना ने ही उन्हें इस पुस्तक को पूर्ण करने की शक्ति दी है। उनकी एकाग्रता एवं जुझारू शक्ति अद्वितीय है। इस ग्रंथ के रचना काल में पापा जी की दोनों आँखों के मोतियाविन्द के आपरेशन हुये फिर भी उनकी लक्ष्य की ओर गति कहीं कम नहीं हुयी। परिश्रम करने की उनकी क्षमता को क्या कहूँ, कभी-कभी छुट्टी के दिन उनके साथ छः छः घण्टे तक वागवानी में कड़ी मेहनत की है पर वाद जहाँ एक ओर मेरा ठीक से चलना भी मुश्किल हो जाता, वहीं वो अपनी दिनचर्या सहजता से पूरी करते रहते हैं। वे मेरे प्रेरणा स्रोत हैं।

पापा जी की साधना को साकार करने में जिसने भी प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष सहयोग दिया हम सभी उनके ऋणी हैं। घर के अन्दर हमारी अम्मा और वाहर प्रकाश अंकल (श्री प्रकाश चन्द्र अग्रवाल) ने पापा जी की शक्ति वनकर जो सहयोग दिया उसके लिये मैं उनकी चरण वन्दना ही कर सकता हूँ।

मुझे विश्वास है कि पापा जी का यह शोध ग्रंथ "मानस और ज्योतिष" अपने प्रकाश से ज्योतिष एवं मानस साहित्य के विद्वानों और पाठकों के लिये चिन्तन का नया मार्ग अलोकित करेगा।

❑ सुधीर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री वी०वी० सिंह कृत

मानस और ज्योतिष

कलि के कविन्ह करऊँ परनामा ।
जिन्ह बरने रघुपति गुन ग्रामा ।।

'रामचरित मानस' महासिन्धु है और कोई भी शोध या कृति गौरेया की चोंच में समायी हुई बूंद से अधिक प्रतीत नहीं होती। तुलसी का बहुमुखी और बहुआयामी अध्ययन एवं राम कृपा संसार के प्राणियों ने हृदयस्थ किया। तुलसी 'रामचरित मानस' एक दूसरे के पर्याय हो गये है।

मनोविज्ञान, लोकाचार, अध्यात्म एवं आनन्द सभी कुछ मानस में उपलब्ध है। कब किसकी दृष्टि किस ओर पड़े और जीवन्त हो उठे, कहना कठिन है। सूर्य ब्रह्माण्ड है, सृष्टि की आत्मा है और मर्यादा पुरूषोत्तम श्री राम सूर्यवंशी हैं। नारायण की लीला लौकिकता को स्पर्श करती है और व्यवहारिक होती है राम चरित मानस मे। जहाँ लोकाचार है वहाँ मनोविज्ञान है और उसमें भूतकाल, वर्तमान काल और भविष्यकाल के कर्म हैं।

भविष्य शंकालु है तथा अतीत सुखद। यहीं पर ज्योतिष का महत्व है। श्री विन्ध्यवासिनी सिंह द्वारा लिखित 'मानस और ज्योतिष' तुलसीकृत 'राम चरित मानस' में प्रयुक्त मनोदशाओं के समानान्तर चलने वाली शकुन - अपशकुन, मंगल-अमंगल और उचित-अनुचित अवसरों की मुहूर्तों के, संकेत का रहस्योद्घाटन जैसा है, पूर्ण व्याख्या नहीं, फिर भी कृति आवरण पर ही राम कृपा बरस पड़ी है। कहना उचित होगा कि पुत्रेष्टि यज्ञ हो या रामजन्म, नामकरण हो या गुरूकुल प्रस्थान, सीता का गौरी पूँजन हो या धनुष भंग, राम-वन गमन हो या दशरथ मरण, भरत का सत्ता त्याग हो, हनुमान-राम मिलन या राज तिलक सभी स्थलों पर तुलसी ने सुअवसर या मुहूर्त का संकेत दिया है। माँ कौशल्या वन-अवधि समाप्ति पर राम की प्रतीक्षा में है और मंगल मुहूर्त की कामना करती है "बैठी सगुन मनावति माता, कब अइहैं मोरे तात कुशल घर कहहु काग फुरिवाता।" यहाँ काग भुसुण्डि भविष्य वेत्ता के रूप में उपस्थित हैं। यदि उन मुहूर्तों और प्रभावों की परिणति खोजी जाय तो किसी एक शोधार्थी व अनेक पुस्तकों में न सिमटने वाले विषय में एक अध्याय के रूप में प्रस्तुत है श्री सिंह की कृति 'मानस और ज्योतिष'। क्योंकि 'मानस' के बहुत सारे मूहूर्तों को गणितीय स्वरूप देना आसान नहीं। तुलसी ने भी उसे सांकेतिक ही प्रयुक्त किया है। 'समः समविभक्तांग' के आधार पर यह कृति आकर्षक कलेवर में 'रामकृपा पात्र' बनेगी ऐसी मेरी आस्था है। महँगे तकनीकी युग में पुस्तक का मूल्य दो सौ रुपये कम नहीं है तो अधिक भी नहीं।

❑ नन्द किशोर मिश्र
१६/१९ सी, सिविल लाइन्स
कानपुर - २०८ ००१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दादा वी०बी० सिंह : हमारे दीप स्तम्भ

जयराम सिंह गौर

व्यक्ति और उसका व्यक्तित्व जब समाज को अनुप्राणित करने लगे तो वह व्यक्ति एक औसत आदमी के स्तर से ऊपर उठकर सर्वप्रिय बन जाता है। ऐसे व्यक्ति बहुत नहीं होते लेकिन होते तो हैं। जब मैं ऐसे किसी व्यक्ति की कल्पना करता हूँ तो मेरे मानस पटल पर एक मुस्कराता हुआ चेहरा उभरता है - वह चेहरा होता है - हम सबके दादा श्री विन्ध्यवासिनी सिंह जी का। अपनी छवि की आभा बिखेरते हुए हमें आर्शीवचनों से आप्लावित करते हुये दादा 'जब हमारा हाल-चाल पूँछते हैं तो हमें अपने अग्रज की छत्र छाया का असीम सुख मिलता है।

मैं अपने मित्र और हिन्दी के लोकचर्चित गीत कवि शतदल के माध्यम से दादा के सम्पर्क में आया तो थोड़ी ही मुलाकातों के बाद ही उनसे बिल्कुल घुल मिल गया। यह व्यक्तित्व का आकर्षण था। वे अपने आभा मण्डल में इन्द्रधनुष के सभी रंगों को इस तरह भरे हैं कि उनके सम्पर्क में आने वाला हर व्यक्ति उनसे प्रभावित हो ही जाता है। उनके नेत्रों में अग्रज का बड़प्पन है मित्र सा खुलापन है और कोई ऐसी जादू भरी शक्ति है जो प्रत्येक आगन्तुक को आश्वासन देती है कि दादा का प्रेम सबके लिए है।

रामचरित मानस के रचयिता गोस्वामी तुलसी दास संत कवियों में मुझे सदैव प्रभावित करते रहे। यह वर्ष उनकी स्मृतियों को समर्पित पंच शती वर्ष है। तुलसी साहित्य के अध्येताओं में दादा वी०बी० सिंह का दृष्टिकोण अप्रत्याशित है किसी ने इतनी पैनी नजर से तुलसी साहित्य को कसौटी पर कसा ही नहीं। दादा ने तुलसी के साहित्य में ज्योतिष की खोज की। एकाडिमिक नजरिए से तुलसी पर सैकड़ों शोध सम्पन्न हुए परन्तु किसी की दृष्टि तुलसी साहित्य के इस पक्ष को देख नहीं पाई थी। दादा को मानस कंठस्थ है वे मानस की किसी घटना को जब अपने ज्ञान की दृष्टि से देखकर हमें बताते हैं तो हमें नवनीत का स्वाद मिलता है। दादा के सम्पूर्ण चिन्तन-मनन के मंथन का नवनीत 'मानस और ज्योतिष' के रूप में हमारे सामने है।

दादा व्यक्तिगत जीवन में भी धुन के बड़े पक्के हैं। स्थिति कैसी भी हो, कुछ भी हो दादा की जीवनचर्या अप्रभावित रहती है । दादा अपनी पूजा-अर्चना का समय भी मित्रों आगन्तुकों को भेंट कर देते हैं और फिर मुलाकातों के बाद सम्पन्न होती है दादा की पूजा। भले ही शाम घिर आये पर दादा अपने आराध्य का भोग लगाये बगैर अन्न ग्रहण नहीं करते हैं।

वित्त मंत्रालय का आयकर विभाग अपने अधिकारियों की क्षमता की कड़ी परीक्षा लेता है। दादा आयकर अधिकारी रहे- उनकी प्रशासनिक क्षमता, कर्मठता और कर्तव्य परायणता को उनके सहकर्मी आज भी स्मरण करते हैं। 'बड़ी कठिन है डगर पनघट की' सरकारी नौकरी पर महाकवि खुसरों की यह गीत पंक्ति बड़ी सामयिक है। क्षमता वाले ही इस वैतरिणी को पार कर पाते हैं। दादा ने अपनी सेवा ऐसे पार की है कि वह सभी के लिए अनुकरणीय है।

दादा का मानवीय पक्ष सबलतम है। उनके पास हर कोई अपनी समस्या के निदान के लिए आ सकता है - लोग आते भी हैं। दादा सबकी बातें ध्यान पूर्वक सुनते हैं। दादा यथा उचित समाधान प्रस्तुत करते हैं - यथा शक्ति समाधान को कार्यरूप में परिणत कराने में अपना सहयोग भी अर्पित करते हैं। अपनों पर स्नेह का सिंचन, दादा करते रहे हैं - कर रहे हैं - करते रहेंगे।

दादा ने संरक्षक होने का दायित्व सदैव तन - मन - धन से उठाया है। जो कोई भी किसी कार्य योजना के साथ दादा के पास गया उसकी साहित्यिक - सांस्कृतिक गतिविधि को इतनी शक्ति मिली है कि उसने सफलता के मानदण्ड बनाये हैं। श्रृंगार संध्या के आयोजनों में मैंने दादा की संरक्षण ऊर्जा को प्रवाहित होते अनेक बार देखा है। कुछ साहित्यिक रुचिवान मित्रों का सपना आज दादा की अगुवाई में 'श्रृंगार संध्या सांस्कृतिक केन्द्र' के रूप में हमारे सामने है। 'मानस और ज्योतिष' के प्रकाशन से शुरू हुई यह नयी यात्रा हमें अगामी सदी में नये संकल्पों के साथ ले जायेगी।

दादा हमारे लिए 'दीप स्तम्भ' हैं उनसे आ रहा प्रकाश हमें राह दिखाता रहा है बहुत समय तक हम इस प्रकाश में अपनी राह खोजते रहेंगे - पथ से भटकेंगे नहीं। यही कामना है - यही विश्वास है।

❑

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राजकुमार रस्तोगी

अतिरिक्त केन्द्रीय भविष्य निधि आयुक्त (से०नि०)
सामाजिक सुरक्षा सलाहाकार

३९-डी, डी.डी.ए. फ्लैट्स
मस्जिद मोठ, फेज २,
नई दिल्ली - ११००४८
दूरभाष - ६४७६७५८

विन्दू भाई 'मानस और ज्योतिष' के रचियता गत चार दशकों से मेरे अभिन्न मित्र हैं, केवल मित्र ही नहीं, अपितु दार्शनिक और मार्ग दर्शक भी। ४० वर्ष पूर्व-समय के लिए वे मेरे विभाग में कार्यरत थे। तभी से वे प्रगाढ़ मित्र हैं। इस दौरान उनके असाधारण व्यक्तित्व की कई पर्तें शनैः-शनैः मेरे समक्ष उभर कर आती रहीं और तदानुसार उनके प्रति मेरी श्रद्धा दिन दूनी रात चौगुनी की गति से बढ़ती चली गई - इस सीमा तक कि आज मैं उन पर अन्धविश्वास करता हूँ। उनका व्यक्तित्व इतना महान है कि उसके विषय में कुछ भी लिखना अपने आप में एक चुनौती है। उनके साथ घटित कुछ घटनाएं तो अभी भी मेरे मन मस्तिष्क में सुरक्षित हैं। प्रारम्भ में मैं उनकी बहुमुखी प्रतिभा से अनभिज्ञ था। उन्हीं दिनों अभाग्यवश मैं आधी सीसी के दर्द से पीड़ित रहता था जो सूर्योदय के साथ, उदित होकर सूर्यास्त के साथ ही समाप्त होता था।

'विन्दू' भाई से मेरी पीड़ा छिपी न रह सकी, एक दिन यकायक मेरे समीप आये और अपनी एक अंगुली से मेरे मस्तक को एक सिरे से दूसरे सिरे तक दबाया। और पीड़ा सदा के लिए विलीन हो गई। ऐसा जादू था उनकी अंगुलियों में और शायद उनकी मंत्र शक्ति में। उन्हीं दिनों की बात है कि उनके एक मित्र उनसे मिलने कार्यालय में आये। 'विन्दू' भाई ने उनसे मेरा परिचय कराया। तब उनके मित्र ने मुझे बताया कि 'विन्दू' भाई ज्योतिष शास्त्र के प्रचण्ड विद्वान हैं। उसके कुछ समय पश्चात् ही 'विन्दू' भाई मेरा विभाग छोड़कर आयकर विभाग में चले गये पर फिर भी मैंनें उनका पीछा न छोड़ा और उनको अपनी अगले १० वर्षों की जन्म कुण्डली बनाने के लिए विवश कर दिया। वो आज भी मेरे पास सुरक्षित है। उसमें वर्णित सभी प्रमुख घटनाएं अपने निर्धारित समय पर घटित हुईं, जबकि कालान्तर में उन्हीं के द्वारा विदित हुआ कि उनकी अपनी गणना में कुछ त्रुटि थी। उनके सभी मित्र जानते हैं कि वे 'माँ' के अटूट भक्त हैं और उनकी माँ उन पर इतनी कृपालु हैं कि वो जो भी कह या लिख देते हैं वो उसे सच कर देती हैं इसी के कारण कभी-कभी उनका किसी के प्रति रोष भी उसके लिए महँगा साबित हो जाता है।

इसी प्रकार की कितना ही घटनाएँ घटित हुई हैं जिन्हें यदि मैं संकलन करूँ तो एक लघु पुस्तक लिख सकता हूँ। उनकी सबसे विलक्षण प्रतिभा है 'रामचरित मानस' पर उनका एकाधिकार जो उन्हें एक सिरे से दूसरे सिरे तक कंठस्थ है। जब कभी उकसाने पर वो 'राम चरित मानस' के विषय में चर्चा करते थे तो मैं क्या कोई भी उनके पांडित्य से बिना प्रभावित हुये नहीं रह सकता था। इतना प्रगाढ़ था उनका ज्ञान 'राम चरित मानस' के विषय में। मैं उनको अक्सर उकसाया करता था कि वे अपने इस अगाध ज्ञान को दूसरे में बांटे पर वो हँस कर टाल दिया करते थे। पर शायद उनके मन में अन्दर ही अन्दर यह लालसा सुलग रही थी जो अन्ततः चिन्गारी बनकर 'मानस और ज्योतिष' के रूप में प्रकट हुई है।

मैंने "मानस और ज्योतिष" में कार्य करते उन्हें देखा है, उसके पीछे कितनी सोच है उनकी कितनी शोध है उनकी, कितना परिश्रम किया है उन्होंने उस पर, इससे मैं भली भांति परिचित हूँ। मुझे प्रसन्नता है कि आज वो घड़ी आ गई है जब उनका प्रयास, उनका परिश्रम सफलीभूत हुआ है। 'विन्दू' भाई के अन्तरतम में ज्ञान का अथाह समुद्र हिलोरें ले रहा है। आवश्यकता केवल इस बात की है कि कोई उसे मंथन करे और उसमें छिपे असंख्य रत्न बाहर निकाले। वे स्वंय ही इसके लिए सक्षम हैं और मुझे आशा ही नहीं विश्वास है कि वर्तमान और आगे आने वाली पीढ़ियों को लाभान्वित करने के लिए वे और कई 'मानस और ज्योतिष' जैसी रचनाओं का सृजन करेंगे।

अन्त में मैं 'मानस और ज्योतिष' की सफलता एवम् 'विन्दू' भाई की दीर्घायु की कामना करता हूँ।

उनका अपना ही

'राज'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मानस और ज्योतिष पर एक टिप्पणी

डॉ० हरिवंश प्रसाद शुक्ल
एम०ए०, पी-एच०डी०

"मानस और ज्योतिष" तुलसी साहित्य में ज्योतिर्विज्ञान के तत्व' तथा ज्योतिष वांगमय और तुलसी शीर्षक से सम्बोधित श्री वी०बी० सिंह की सद्यः प्रणीत रचना उनके दीर्घ कालीन स्वाध्याय, गम्भीर चिन्तन एवं मनन का सुपरिणाम है। तुलसी साहित्य रत्नाकर के मंथन से प्राप्त इस वैचारिक अमूल्य रत्न से हिन्दी जगत ही नहीं अपितु विश्व साहित्य एक नवीन आलोक से आलोकित हो उठा है। हिन्दी राम काव्य धारा के अन्तर्गत इस सर्वथा अछूते विषय पर कोई भी शोध कार्य अब तक हुआ है इसकी जानकारी अभी तक नहीं उपलब्ध हो सकी। श्री वी०बी० सिंह के द्वारा किया गया यह कार्य सर्वथा नवीन एवं अभिनव प्रयास है जो शोध साहित्य के क्षेत्र में अनेक सम्भावनाओं के द्वार खोलता है।

भारतीय जीवन दर्शन जिसे मानवीय जीवन दर्शन के नाम से सम्पूर्ण विश्व में स्वीकार किया गया है गोस्वामी तुलसीदास जी के साहित्य में पूर्णतः मूर्त हुआ है। आध्यात्मिक चिन्तन, भौतिक जीवन के व्यवहारिक पक्ष को जिस उदात्त चेतना से सम्पृक्त संदेश द्वारा सम्पूर्ण विश्व मानव को उसके मौलिक स्वरूप से साक्षात्कार कर जीवन, जगत और उसके रचयिता के पारस्परिक सम्बन्धों को उद्घाटित करने का कार्य संत कवि तुलसी दास ने किया है। राम चरित मानस की रचना के उपक्रम में जिन सूत्रों के संकेत प्राप्त होते हैं तथा कल्प भेद जनित जिस यथार्थ की ओर संत कवि तुलसी ने पौराणिक मिथकों की सहायता से महाकाव्य की रचना की है उनमें निहित काल गणना तथा काल पुरूष के व्यापक स्वरूप को ज्योतिर्विज्ञान द्वारा समझने का प्रयास श्री सिंह ने इस रचना में किया है। "लव, निमेष, परमाणु जुगल कलप बरस सर चण्ड, भजसि न मन तेहि राम को काल जासु को दण्ड" । को सूत्र रूप में ग्रहण कर इस अध्ययन को विस्तार दिया गया है। मानस में वर्णित अनेक गूढ़ रहस्यों को ज्योतिष के आलोक में परिभाषित एवं उद्घाटित करने के सुसम्बद्ध प्रयास ने इस अध्ययन को अत्यन्त महत्वपूर्ण बना दिया है। काल गणना के सूत्र ने चारों युगों की कालावधि को प्रामाणिक उद्धरणों द्वारा प्रस्तुत कर एतद् सम्बन्धी मिथक और भ्रान्तियों को दूर कर यथार्थ को पहचानने का अवसर प्रदान किया है। अवतार आदि की अवधारणा को भी ज्योतिर्विज्ञान के आलोक में विश्वसनीयता प्रदान की है। वस्तुतः समस्त अध्ययन श्री सिंह के अथक परिश्रम, गम्भीर अध्ययन तथा उनकी रचनात्मक प्रतिभा को निस्संदेह एक अत्यन्त महत्वूपर्ण उच्चस्तर प्रदान करता है। आशा है हिन्दी जगत इस सर्वथा नवीन एवं अभिनव प्रयास का सम्मान करेगा।

रचना के व्यापक अध्ययन एवं मनन की आवश्यकता है। सम्प्रति लेखक को अनेक बधाई एवं शुभकामनाओं के साथ भविष्य में इसी प्रकार की उच्च स्तरीय कृति की आशा है।

❑

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

INDIAN COUNCIL OF ASTROLOGICAL SCIENCES (REGD.)-MADRAS
KANPUR-CHAPTER
Head Office : 7, Vishwanath Dham, GADA Road, Gwaltoli Kanpur - 208 001 (Ph. : 291056, 291074)

ASTROLOGY & ASTROLOGER

Astrology is an absolute science with stern code of ethics, based upon an undeviating honesty that imparts broad virtues to the subject. It suggests strict adherence to rules of right, justice and the like and carries a long suggestion of self-discipline as well. It contains all branches of learning in depth and extent. In other words Astrology is the encyclopedia of all knowledge and of all living beings. It took ages to our great sages to venture on and experience to establish and derive principles with reasoned literary comments. To understand them properly the combination of discretion, maturity, keenness of intellect, broad experience, pious & learned teacher, extensive learning, profound thought and compassionate understanding is essentially required or say for true & full application of this noble science the highest and noblest exercise of all the faculties of the moral nature as well as of the intellect is necessiated.

Prof. M. Ramakrishna Bhat has reminded us that "The potency and efficacy of vedic chants would be adversely affected by substituting synonyms or translating them into other languages, since the Mantra has a peculiar charm and symphony of their own."

It has been established beyond doubt the the fact that Astrology reveals with detailed exactitude the psychological, physical and material aspects of the individual and others. With the proper and correct application of sutra's one can asses the potentialities of the subconcious and conscious minds, the two factors that determine the pattern of the individual destiny.

The success of any curative effort is entirely dependent on the accuracy of the diagnosis, that too applies in the case of the study of astrology.

Unfortunately the study, teachings and practice of astrology has been handicapped in its progression, in past several years, by the faulty approach of its exponents, for there are many those who worship MAMMON, rather than truth and who do not hesitate to exploit the

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

credibility. With the result the noble and time tested science is mis-quoted as superstition. Before I proceed I remember the words of Prof. Bhat. "We have to forgive them (the rationalists) their unscientific attitude, for they know not what they say."

Pt. Ramyatna Ojha, Pt. Gopesh Ojha, Pt. Kedar Dutt Joshi, Pt. Devi Dutt Joshi, Prof. M.R. Bhatt, Dr. B.V. Raman, Mr. R. Santhanam, Mr. P.S. Shastry and many may others, with the highest peak of exemlified intelligence have served the cause of astrology by giving & explaining the true meanings of the sutra's for the benefit of the lowest forms of humanity found in this world.

The learneds have cautioned us against the impromptu, improvident and plagiarised views expressed or imposed upon time and again by the importunate persons by taking unfair advangate of their worldly authorities.

The noble path laid down by the learneds is being followed by Sri Vindhya Basini Singh. Obviously many of us have not only seen and known Sri V.B. Singh, fortunately I had the privilege of participating in his deliberations on the Astrology and the culture. He has worked in the form of movement for propagating the established values. I personally rever him as a preceptor. He had led his associates towards right direction without any self interest. I remember, on many occassions he talked about the multi-faced problems, that were bound to mount, in respect of our cultural heritage, in the ensuing 21st cent. He had opined that the undedicated approach and the indiscriminate uses of the Astrological sutra's for cheap gains would add more fuel in letting down the sages knowledge in the eyes fo new generations. Without going into any further details I take this opportunity to salute his knowledge.

I am confident enough that the book "MANAS AUR JYOTISH " authored by Sri V.B. Singh would get applause by the learneds and would gain appreciation among the lovers of astrology.

In short, the book contains many new shades of meaning on the subject. He has been able to make fine elaborations on the complex subject. The meanings meant in his work deserves praise.

with regards.

BHOLANATH SHUKLA
Director, Kanpur Chapter

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

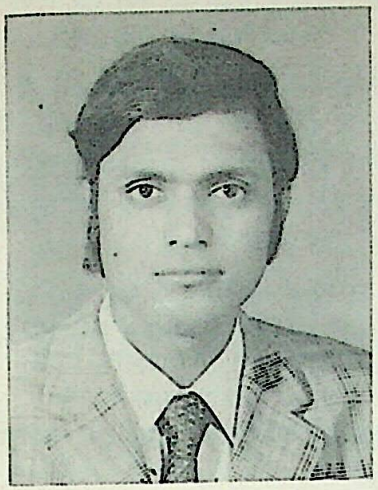

नन्द किशोर गुप्त

एक मित्र, जो कहीं खो गया

वह तो था, बस एक समुंदर
ठहरा—ठहरा
गहरा—गहरा अपने ! अंदर !
उसकी कोई थाह नहीं थी
अनुपमेय था, कितना सुंदर !

❑ शतदल

चौड़ा माथा, बड़ी-बड़ी नशीली आँखें, श्याम वर्ण और खूबसूरत कद-काठी वाला वह मित्र नन्द किशोर गुप्त - अब हमारे बीच नहीं है। यह सच स्वीकारने को मन तैयार नहीं होता। आज भी जब कभी उनके घर फोन करो तो घंटी बजते समय लगता है अभी रिसीवर उठते ही चिर परिचित अंदाज़ और प्रभावशाली रेडियो वायस में 'हेलो' सुनाई देगा या फिर आशा भाभी फोन उठाएंगी तो - अभिवादन के बाद - 'हाँ, भैया अभी बात कराती हूँ।' ..... लेकिन नहीं, अब वह स्वर और खूबसूरत चेहरा बस स्मृतियों में कौंधता है। ..... कभी-कभी लोगों को कहते सुना है कि अच्छे लोगों की 'वहाँ' भी ज़रूरत रहती है। ..... अपनी पारी खेलकर तो सबको जाना है लेकिन 'रन आउट' होना साथियों को अखरता है। ..... हमारा वह प्यारा मित्र समय से कुछ पहले ही चल दिया अनन्त-यात्रा पर।

व्यक्ति का अच्छा या बुरा होना यों तो व्यक्ति-सापेक्ष होता है लेकिन नन्दू बाबू शायद ही कभी किसी को बुरे लगे हों। वो चाहे उनकी फैक्ट्री का छोटे से छोटा कर्मचारी हो या उनके अपने वर्ग का कोई मित्र। जिससे भी मिलना, मुस्करा कर पूरे मन से मिलना, उनका स्वभाव था।

हम बचपन में कक्षा छः से बारहवीं क्लास तक साथ पढ़े। नन्दू बाबू तब भी एक बड़े औद्योगिक घराने के लाडले थे। लेकिन वैभव की जो अर्थहीन छाया होती है उनके आचार-विचार को, मुझे लगता है, उन्हें आजीवन छू नहीं सकी।

अभी नन्दू बाबू के शरीर छोड़ने से चार-पाँच महीने पहले की बात है - एक इतवार फोन पर बात हुयी तो मुझे बुला लिया। घर पहुँचा तो जनाब नाश्ता कर रहे थे। इसके बाद उन्होंने गाड़ी की ताली माँगी तो भाभी जी ने कहा - 'मुन्ना को साथ लेते जाइए वो ड्राइव कर लेगा, आप लोगों को जहाँ जाना हो, हो आइए।' ..... लेकिन नहीं, उन्होंने 'वन थाउज़न्ड' की ताली ली और हम निकल पड़े। बँगले के बाहर निकलते ही बोले - 'बोलो, कहाँ चलना है ?'

'मैं क्या बोलूँ, घूमने तो आप निकले हैं। मेरा कोई प्रस्ताव तो था नहीं। ..... जहाँ चाहें चलिए।' मैने कहा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वो बोले- 'असल में आशा एक पल के लिए भी अकेले नहीं छोड़तीं। हर वक्त कोई न कोई मुझे देखता रहता है।'

'इसमें क्या गलत है, बीमारी की वजह से आपका ख्याल रखा जाता है।' मैंने कहा और हम तिलक नगर की सड़कों से गुज़र कर पार्वती बागला रोड़ पर आ गए। बस थोड़ी आउटिंग के लिए निसंदेह वह घर से निकल पड़े थे। हमारी गाड़ी ग्रीनपार्क के करीब पहुँची तो अचानक मेरे मुँह से निकला - 'चलो अपने कॉलेज के दर्शन करते हैं और छोटे पान वाले से मिलाएं, जिसके बगल वाले चबूतरे पर बैठ कर हमने सिगरेट पीना सीखा था।'

कुछ ही पलों में हम कचहरी के सामने छोटे की दूकान पहुँच गए। मैंने देखा, नन्दू बाबू को देखकर छोटे आश्चर्य चकित था। उसे पता था कि नन्दू भैया बहुत बड़े आदमी हैं। वह सोच नहीं सकता था कि किसी दिन यों उसकी दूकान पर मुस्कराते हुए आ खड़े होंगे।

छोटे की मुद्रा मुझे कुछ ऐसी लग रही थी कि सुदामा के सामने कृष्ण आ खड़े हुए। और सुदामा परेशान कि कैसे स्वागत करें, क्या करें।

नन्दू बाबू ने उससे सिगरेट माँगी। उसने सबसे महँगी सिगरेट का पैकिट उठाया तो वह बोल पड़े- 'वही सिगरेट पिलाओ जो यहाँ बैठकर पिया करते थे - पासिंग शो।'

इस बात पर छोटे को और मुझे भी हँसी आ गयी। सिगरेट तो उन्हें पीनी नहीं थी। ..... फिर हाल-चाल पूछे, बताए गए। हमने पान खाए। नन्दू बाबू उसे पाँच का नोट देने लगे तो उसने मना कर दिया। ..... फिर हम लौट पड़े। ..... ऐसा था नन्दू बाबू का प्रेम से भरा पूरा मन ! दोस्तों के लिए उनके दिल के दरवाजे सदैव खुले रहे। जरूरतमन्द की जी खोल कर मदद करते। रमेश सेठ, तुहिनपाल वगैरह उनका यह गुण भली भाँति जानते हैं। ..... मैं सरकारी नौकरी में था इसलिए नन्दू बाबू से मेरी अपेक्षाएं कुछ अलग किस्म की रहीं। ..... जब मेरी शादी हुयी तो उनकी 'फीएट' दौड़ती रही और अभी गत वर्ष मेरे बड़े चिरंजीव के विवाह में भी उस घर की 'मारूति' पूरे समारोह भर रही।

नन्दू भाई जानकारी लेते रहते थे कि - 'आजकल तुम्हारी कविता कैसी चल रही है ?' ..... गतिविधियों की जानकारी देता तो सुनकर उन्हें अच्छा लगता।

बीस-पच्चीस साल पहले हमारी भेंट कई-कई महीनों के बाद हो पाती थी। सन् १९७७ में 'श्रृंगार संध्या' का गठन हुआ। फिर आगे सवाल आया कि किसी ऐसे व्यक्ति को संस्था का मुख्य संरक्षक बनाया जाय जो बहुत अधिक सहायता न करे तो किसी प्रकार की उलझन भी न डाले। बस, बापू (सतीश दुबे) को साथ लेकर मैं नन्दू भाई से मिला। उनके सामने प्रस्ताव रखा तो बोले- 'इससे अगर तुम्हारी तरक्की होती है तो मुझे मंजूर है।' और इस तरह नन्दू बाबू संस्था के संस्थापक - सदस्य/ मुख्य-संरक्षक हो गए। ..... और कारवाँ बनता गया।

सन् १९८८ तक संस्था से जो काव्य-समारोह आयोजित होते रहे उनकी सुधी जनों के बीच यथेष्ट सराहना होती रही। लेकिन उसके बाद- गति कुछ थम सी गयी। संस्था के कुछ सदस्यों ने पुनर्गठन की बात चलायी। पुनर्गठन हुआ। 'श्रृंगार संध्या सांस्कृतिक केन्द्र' बना। नन्दू बाबू से चर्चा हुयी। उनका कहना था कि संस्था के पास कुछ स्थायी कोष होना चाहिए जिसके ब्याज से गतिविधियाँ चलती रहें। बार-बार पैसे के लिए हाथ न पसारना पड़े। हम यही चाहते थे। संस्था के गृहपति दादा बी०बी० सिंह भी अक्सर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यही बात करते। उन्होंने तो लोगों से चर्चा भी शुरू कर दी थी। इस सन्दर्भ में नन्दू बाबू के साथ एक 'ब्लूप्रिंट' तैयार हुआ। मुझे अच्छी तरह याद है- जिस दिन अयोध्या में मस्जिद ढही थी, अवकाश का दिन था और कड़ाके की सर्दी पड़ रही थी। नन्दू बाबू के साथ, उनके लॉन में, दोपहर बारह-एक बजे से धूप सेंकते हुए बातें चलीं तो शाम को तभी उठे जब सड़क पर बाहर शोर होने लगा। उन्होंने कहा - 'लगता है अयोध्या में कुछ गड़बड़ हुआ, तुम घर निकल जाओ।' इस बैठक में संस्था को लेकर बहुत-सी बातें हुयीं।

इसके बाद ही किसी दिन खबर मिली कि उन्हें कमर में कुछ तकलीफ़ थी तो चेकअप के लिए इंग्लैण्ड गए हैं। इंग्लैण्ड से लौटकर जो सुनने में आया वह हम सब को हिला देने वाला था। मरीज़ तो उस बीमारी का नाम सुनते ही, उसी क्षण, आधा मर जाता है। पता चला कि उन्हें 'कैंसर' हो गया। फिर मेरी मुलाकातें अनायास ही बढ़ गयी। लगभग हर इतवार को मिलते। नहीं तो फोन पर जरूर बतिया लेते। संसार में बढ़िया से बढ़िया जो इलाज उपलब्ध है, नन्दू बाबू का हुआ लेकिन ४ जून ९६ को उन्होंने शरीर त्याग दिया। ..... अंतिम तीन-चार वर्षों में, मुलाकात के दौरान मैं हल्की-फुल्की, हँसी-मजाक से भरी, मनोरंजन के लिए बेसिर पैर की बातें करता। अपनी उपस्थिति से उन्हें हँसाने, गुदगुदाने की चेष्टा करता। यह भी देखता कि उनसे मिलने जो मित्र, रिश्तेदार, नातेदार आते उनकी बीमारी पर अपना-अपना ज्ञान लेकर चर्चा करते। नन्दू बाबू ने शुभचिंतकों से एक-दो बार अपनी ऊब जताई थी, 'यार, जिसे देखो ब्लड रिपोर्ट, टेस्टिंग्स की ही बात करता है। जी ऊब जाता है सबको बताते-बताते। तुम्हारे साथ इधर-उधर की बातों से मन बदल जाता है।' ..... यह रोग ऐसा था जिससे आदमी अमूमन शरीर छोड़ने के बाद ही छुट्टी पाता है। वहीं यह भी लोगों ने जाना-पाया है कि असाध्य रोगों पर अपनी इच्छा शक्ति (विल पावर) से विजय प्राप्त की जा सकती है। यों वह प्रबल इच्छा शक्ति रखते थे लेकिन अपने रोग से दिन प्रतिदिन होने वाले भीतरी परिवर्तनों के बारे में खुद जानकारी लेते रहते जो मुझे ठीक नहीं लगता।

एक बार इंग्लैण्ड या अमेरिका से कई माह इलाज कराकर लौटने के बाद उन्होंने बताया कि हास्पिटल में उनके पास के बेड पर जो व्यक्ति इलाज करा रहा था वह जबरन डाक्टरों से छुटटी लेकर ओलम्पिक देखने गया और लौटकर फिर भर्ती हो गया। उसने नन्दू बाबू से कहा कि 'देखिए मुझे चिंता बस इतनी है कि अगला ओलम्पिक शायद मैं न देख पाऊँ।

नन्दू भाई से उस अपरिचित की बात सुनी तो फिर कई बार उसकी चर्चा, कई कोणों से, की। उसकी जीवन्तता की, उसके समर्पण की, उसके उत्साह की, खेल-प्रेम की। इनमें भी जिजीविषा थी और इसीलिए जब तक शरीर में थोड़ी भी शक्ति रही, फैक्ट्री जाते रहे।

आज नन्दू बाबू सशरीर हमारे बीच नहीं हैं, उनकी स्मृतियाँ हैं। घर की साज-सज्जा से लेकर अपने उद्योग-व्यापार तक उनका जो नजरिया था उसी के अनुरूप वो पुनर्गठित 'श्रृंगार संध्या सांस्कृतिक केन्द्र' को स्वरूप देना चाहते थे। हमारा प्रयास होगा कि संस्था अपना महत्वपूर्ण स्थान बना सके।

हम 'श्रृंगार संध्या सांस्कृतिक केन्द्र' से जुड़े सभी मित्र, नगर के सुधी जनों व साहित्यिक-सांस्कृतिक संस्थाओं की ओर से नन्दू बाबू की पुण्य-स्मृति को अपना प्रणाम अर्पित करते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दादा विंध्य वासिनी सिंह : जैसा हमने पाया

❑ शतदल

दादा से हमारा जुड़ना, जीवन की महत्वपूर्ण घटना है। हम मित्रों के लिए दादा अग्रज होकर, मित्र होकर, सखा होकर और मुखिया होकर अनेक रूपों और स्तरों पर जब से मिले, प्रस्तुत रहे। पीछे मुड़कर देखता हूँ तो याद आता है-

सन् १९७७ में मित्रवर विनोद पाण्डेय के साथ बम्बई-यात्रा में योजना बनी कि गीतकारों का एक मंच स्थापित किया गया। अपने अग्रज बापू सतीश दुबे व उनके परिवार के साथ बैठकर इस विचार को आगे बढ़ाया गया। 'श्रृंगार संध्या' संस्था का गठन हुआ। २६ नवम्बर'७७ को पहला गीतकार समम्लेन आयोजित हुआ। जिस मन व समर्पण के साथ बापू, उनके परिवार के सदस्य, व अन्य मित्र जुटे उसी के अनुरूप कार्यक्रम को भरपूर सराहना मिली। इस आयोजन के लिए, धन-संग्रह के संदर्भ में, हम अपने एक निकट के सम्बन्धी श्री एन.सी. तिवारी (आयकर अधिकारी) से मिले। उन्होंने कुछ सहयोग दिया और एक अन्य अधिकारी श्री के.के. शुक्ला से परिचय करा दिया। शुक्ल जी कवि थे और चित्रकारी में भी उनकी गहरी रूचि थी। वे संस्था से जुड़ गए। अगले वर्ष'७८ में जब गीतकार सम्मेलन की तैयारी होने लगी तो शुक्ल जी से चर्चा की। वे आयकर आफीसर्स कालोनी, स्वरूप नगर में रहते थे। अक्सर शाम को हम और बापू उनके घर भी जाते थे। एक शाम शुक्ल जी ने हमें वो रास्ता दिखा दिया जिससे संस्था की यात्रा सरल-सुगम हो गयी। उन्होंने बताया - 'मेरे ठीक ऊपर के फ्लैट में सिंह साहब रहते हैं। हमारे कलीग हैं। वे बहुत अच्छे अधिकारी हैं। साथ ही ज्योतिष और तुलसी साहित्य के अच्छे जानकार। हमारे विभाग में सभी लोग उन्हें 'दादा' कहकर सम्बोधित करते हैं। आप उनसे मिलिए। आफिस में बिना किसी संदर्भ के सीधे मिल लीजिए। बढ़िया आदमी हैं। साहित्यिक संस्थाओं और कार्यों में बहुत मदद करते हैं। ..... कई साहित्यकार उनके पास आते रहते हैं। आप उन्हें अपनी संस्था में संरक्षक बना लीजिए।'

शुक्ल जी की बात से कुछ समय के लिए, जब तक दादा से नहीं मिले, हमें लगा कि अपना बवाल टालने के लिए हमें किसी के पास भेज रहे हैं। खैर, अगले दिन बापू और हम दादा के कमरे में दाखिल हो गए। बस, वह दिन है कि आज का दिन, दादा हमारे लिए क्या नहीं हुए ? शायद इसे ही पहले नज़र का प्यार कहा जाता है। उस वर्ष श्रृंगार-संध्या के गीतकार सम्मेलन की अध्यक्षता दादा ने की। हमारे आग्रह पर वे संस्था के गृहपति व प्रथम संरक्षक भी हो गए। और तब से हमारी भाग-दौड़ थोड़ी कम हो गयी। दादा के अनेक मित्र ऐसे साहित्यिक अनुष्ठानों में तन-मन-धन से सहयोग करते थे और आज भी जबकि दादा को सेवा-निवृत्त हुए सोलह वर्ष बीत चुके हैं, वे मित्र पूरे उत्साह के साथ संस्था का बराबर सहयोग करते हैं।

हिन्दी के वरिष्ठ कथाकार शैलेश मटियानी दादा के निकट के मित्र रहे हैं। हमने देखा है कि दादा उनके लिए अपने मित्रों से आर्थिक सहयोग माँगते थे। मटियानी जी का पत्र आ जाता कि अगले माह अमुक तारीख को कानपुर आ रहा हूँ, पत्रिका के कागज़ की व्यवस्था करनी है। बस, दादा अपने सम्पन्न मित्रों से चेक मँगवा कर सीधे मटियानी जी के बैंक एकाउण्ट में डलवा देते। उनके आने पर रसीदें पकड़ा देते। यह दादा इसलिए करते थे कि मटियानी जी के समर्पण और साहस को जानते थे। बेहिचक, बिना किसी लालच के करते थे। ..... न तो दादा कथाकार थे कि 'विकल्प' में कुछ छप जायगा और न मटियानी जी के साहित्यिक सरोकारों से ही उन्हें कुछ लेना-देना रहता फिर भी जी खोलकर सहयोग करते

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

थे। दादा की समझ में आना चाहिए कि आप घटिया नहीं हैं, आपका उद्देश्य छोटा नहीं है, समझिए कि दादा आपके साथ हैं। हर सही आदमी के लिए, अच्छे काम के लिए दादा के दिल के दरवाजे सदैव खुले रहे हैं।

कि दादा सहज-सरल हैं। उन्हें किसी के पास जाने में कभी संकोच नहीं होता। आप उनके उम्र में छोटे हैं, बड़े हैं, अमीर हैं, गरीब हैं इन सबका उनके लिए कोई अर्थ नहीं। बस, वे इतना जानते हैं-

प्रेम-प्रीति से जो मिलै, ता सों मिलिए धाय ।
अन्तर राखे जो मिलै, ता सों मिलै बलाय ।।

अवकाश-प्राप्ति के बाद से, औसतन पखवारे में एक बार, दादा डाकखाने - हमारे कार्यालय - का चक्कर जरूर लगा जाते हैं। चक्कर नहीं, फेरा डाल जाते हैं। नवीन मार्केट, मेस्टन रोड का कोई काम हो दादा डाकखाने जरूर आएंगे। ..... हमारे अनेक सहकर्मी - प्रशान्त, वी०के०, जयराम, अवधेश आदि फिर कैण्टीन में उन्हें घेर कर बैठ जायेंगे। बातें चलेंगी, ... घूम फिर कर चर्चा दादा की रूचि के विषयों पर आ जायगी और फिर कितना समय गुज़र गया पता ही नहीं चलता। ..... 'राम चरित मानस' दादा को कण्ठस्थ है। 'शक्ति' के उपासक तो बचपन से ही हैं और 'ज्योतिष' का अध्ययन उन्होंने अपनी हॉबी के तहत किया। ..... दादा, जब कभी कुछ बोलना शुरू करते हैं हम सब मित्र अभिभूत से बस उन्हें सुनते हैं। ऐसी ही अनेक बैठकों में हमारे कवि-मित्रों ने दादा को जाना-पहचाना और माना है। बाहर के कवि मित्र उन्हें 'श्रृंगार संध्या' के गृहपति के रूप में जानते हैं लेकिन उनमें भी सर्वश्री माहेश्वर तिवारी, भारत भूषण, अरूण त्रिवेदी, किशन सरोज, राकेश त्रिपाठी, रवीन्द्र भ्रमर, विद्या सागर वर्मा वगैरह दादा के विचारक/चिंतक को भी निकट से जानते हैं। हाँ, इन सुपरिचित कवियों में दादा के प्रति जो आदर भाव है, कह नहीं सकता वह कैसा है ? किशन भाई और भारत भैया के साहित्यिक सरोकार कुछ अलग किस्म के हैं। इसलिए दादा के बहुत निकट होकर भी वे उन्हें ठीक से जानते हैं, इसमें मुझे संदेह है। किशन भाई की एक घटना (बैठक) याद आयी-

दादा तब सर्विस में थे। इन्कम टैक्स कालोनी स्वरूप नगर में रहते थे। बाहर का कोई भी कवि आता तो दादा के घर पर गोष्ठी हो जाती। एक बार किशन भाई थे, गोष्ठी हुयी। किशन जी ने दादा के घर बैठकर पन्द्रह-बीस गीत सुनाए। सुनने के बाद दादा के मन में आया और उन्होंने पूरी विनम्रता के साथ किशन भाई को, शुभकामनाओं से भरा, यह परामर्श दिया कि - 'शरीर के स्थूल धरातल से आगे बढ़कर कुछ और लिखो।'

किशन जी भी इस धरती पर एक ही पीस हैं। घर के नीचे विदा हाते समय दादा ने पूछा - 'किशन जी, अब कब इधर आना होगा ?'

किशन भाई ने उत्तर दिया - 'दादा, जब दो-चार भजन लिख लूँगा तब आऊँगा।' ..... और बात हँसी में उड़ गयी। दादा की बात किशन जी ठीक से समझ गए थे और किशन जी की बात दादा भी समझ गए होंगे।

दादा, अपनी जगह सही थे। अपने अध्ययन, चिन्तन, मनन और वय के आधार पर। और किशन भाई भी अपनी ऊँचाइयों की मजबूरी के साथ सोलह आने खरे थे। .... यहाँ दादा के मन में यह कदापि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नहीं था कि किशन सरोज कितने चर्चित या महान कवि हैं। वे तो अपने सहज भाव से एक प्रतिभा की अनन्त सम्भावनाओं में झाँककर उसकी विकास-यात्रा के प्रति बोल पड़े थे। जिसे उस वक्त किशन भाई ठीक-ठीक समझ नहीं सके। इस छोटी सी बात को अगर और गहराई से सोंचे तो दादा और किशन सरोज का मानसिक धरातल, समर्पण-सरोकार, सभी कुछ समझ में आता है। ..... बहरहाल, मेरा कहने का आशय है कि दादा जिस किसी के पास हैं, साथ हैं, तो केवल शरीर के पास नहीं हैं, पूरे मन से पास होते हैं। उन्हें पहचानने में किसी से भूल हो सकती है। और अधिक ज़िक्र करके अपनी बात का दायरा घटाना नहीं चाहता। दादा मन से यदि निर्मल न होते तो प्रकाश जी, मेहरोत्रा साहब, के.के. पाण्डेय, ओम बाबू, तनेजा जैसे अनेक सच्चे मित्र उनके पास नहीं होते। और ये मित्र ही दादा की पूँजी हैं।

अंग्रेजी में एक कहावत है जिसका अर्थ है - 'जीवन का सबसे बड़ा सुख इस एहसास में है कि आपको कोई प्यार करता है और सबसे बड़ा दुख भी यही है कि आपको कोई प्यार नहीं करता।'

दादा इस पक्ष में सौभाग्यशाली हैं। उन्हें प्यार करने वाले अनेक मित्र उनके पास हैं। दादा का मन सागर जैसा ही विशाल है। वे प्यार उलीचते रहते हैं। सागर के जितने भी पर्यायवाची शब्द हैं, सबका एक विशेष अर्थ है। दादा में उन सब के दर्शन किए जा सकते हैं। और हाँ, यह तभी सम्भव है जब आप दादा के मन में गहरे उतरे हों अन्यथा एक कविता की ये पंक्तियाँ सार्थक हैं-

भीड़ में जो रहे, दूर से देखते
मैं उन्हें हर घड़ी एक खेला लगा।

हम पढ़ते-सुनते रहे हैं कि कृष्ण ने अर्जुन को जब अपना परिचय दिया तो अर्जुन अवाक रह गए। ऐसा कुछ वस्तुतः घटा या नहीं, कोई नहीं जानता। यह प्रतीक-कथा भी हो सकती है, जिसकी सम्भावना अधिक है। ..... दादा 'शक्ति' के अनन्य उपासक हैं। मैं तो उनके प्रति नतमस्तक होकर महाकवि सूर की पंक्ति दोहरा सकता हूँ-

' मैं बालक बहियन को छोटो ..... !'

दरअस्ल, मुझे लगता है, हमारे वांगमय में निरभ्र आकाश जैसी जानकारियाँ भरी पड़ी हैं। हम अपनी पात्रता के अनुरूप उसमें से ग्रहण कर पाते हैं। जो हम आत्मसात कर लेते हैं वह हमारे ज्ञान का अंश बन जाता है। और ज्ञान के जिस बिन्दु पर अपनी समग्र चेतना के साथ हम ठहरते हैं, होते हैं वही हमारा आत्मबल बनता है। यह आत्मबल ही मनुष्य को कहीं से कहीं पहुँचा सकता है। देवताओं की कक्षा में स्थापित कर सकता है। लेकिन इस जगह यह भी जरूरी है कि अपनी आस्था के प्रति हमारे ही भीतर प्रश्न वाचक चिन्ह नहीं होना चाहिए। तब ही हमारे भीतर आनन्द-लोक की सृष्टि हो सकती है। ..... दादा के भीतर कहीं संशय नहीं है। यही कारण है कि वो जो इच्छा करते हैं, पूर्ण हो जाती है।

आज दादा के अध्ययन, चिन्तन और मनन का सुपरिणाम पुस्तकाकार प्रकाशित होकर हमारे सामने है। इस शुभ अवसर पर मैं पिता तुल्य दादा विन्ध्यवासिनी सिंह के भीतर बैठे ईश्वर को अपना प्रणाम निवेदित करता हूँ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

।। दादा वी०बी० सिंह ।।
कवि मित्रों के लिए संदर्भ ग्रंथ

❑ अवध बिहारी श्रीवास्तव

श्रृँगार सन्ध्या के एक आयोजन में लगभग डेढ़ दशक पूर्व जब शतदल ने मुझे संस्था के गृह-पति से मिलवाया तब मैंने विशेष ध्यान नहीं दिया और सूट में सजे उस गोरे, लम्बे, आयकर अधिकारी को मैंने एक अधिकारी के रूप में ही लिया। कानपुर के साहित्यिक आयोजनों में श्रृँगार-संध्या की प्रस्तुतियों की अपनी एक अलग सी पहचान बनी है। इस पहचान को बनाने में शतदल और उनकी मित्र मण्डली के साथ-साथ संस्था के गृहपति श्री वी०बी० सिंह का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इन्हीं आयोजनों के बहाने इन वर्षों में श्री वी०बी० सिंह से मिलने का अवसर आता रहा और हर भेंट में उनके व्यक्तित्व के अनेक पक्ष उजागर होते रहे, और अधिकारी पक्ष पीछे छूटता गया, फिर कब हम बनारसी, भोजपुरी में बातें करने लगे और कब श्री वी०बी० सिंह 'सिंह साहब' और फिर 'दादा' में बदल गए पता ही नहीं चला।

दादा हम कविमित्रों के लिए एक सन्दर्भ ग्रन्थ जैसे हैं। प्राचीन भारतीय संस्कृत साहित्य का उनका अध्ययन काफी गहन है और प्रायः बातचीत में हमें इसकी झलक मिलती रहती है। वेदों, पुराणों का उनका संग्रह अप्रतिम है और बात-चीत में उनके सन्दर्भ देते रहना दादा की अदा है। उनके आस-पास जुड़े लोगों में कवियों, साहित्यकारों का एक बड़ा वर्ग तो है ही, उनके गहन ज्योतिष विज्ञान के अध्ययन के कारण प्रसंशकों की एक अच्छी जमात भी है। जिन कवि मित्रों को मैं जानता हूँ और जो दादा के भी सम्पर्क में हैं, दादा उन सबसे बड़े हैं। परन्तु कहीं आने-जाने, बात-चीत करने, गप्प लड़ाने अथवा गम्भीर साहित्य चर्चा करने में दादा कभी अपनी उम्र की, अपने ज्ञान की अथवा अपने अभिजात्य की धौंस नहीं देते हैं। चाय पीने, पान खाने, ठहाका लगाने तथा दूसरों की खिंचाई करने का उनका बनारसी अन्दाज अनूठा है। हेड पोस्ट आफिस कानपुर के पीछे वाली सड़क पर चाय की गुमटी की बेंचों पर हम अक्सर दादा के सानिध्य का सुख उठाते हैं। उन्हें छोड़कर उनके भाषण का धारा प्रवाह श्रवण, एक अद्भुत अनुभूति से भर देता है। 'तुलसी और ज्योतिष" दादा की साहित्य सम्पदा है। तुलसी साहित्य का उनका अध्ययन बड़ा गम्भीर है तथा जन्म कुण्डलियों की व्याख्या का उनका तरीका बहुत से ज्योतिपियों से अलग है। जब भी वे व्याख्या करते हैं तो उसके इतने पक्षों को उद्घाटित करते हैं, कि हम उन्हें देखते ही रह जाते हैं। ग्रहों, नक्षत्रों उनकी स्थिति उनका प्रभाव, उनकी काट, आदि पर जब दादा बोलते हैं, तो इस बोझिल ज्ञान चर्चा को अक्सर मैं 'तुलसी' की ओर बड़ी चालाकी से मोड़ देता हूँ, परन्तु 'दादा' जैसे ताड़ जाते हैं और तुलसी साहित्य में ज्योतिष के ऐसे अनूठे सन्दर्भों से हमें परिचित कराते हैं जो तुलसी के ज्योतिष ज्ञान के साक्षी हैं।

दादा जब "तुलसी साहित्य में ज्योतिष ज्ञान" पर अपनी पुस्तक लिख रहे थे, तब उनका नशा देखने योग्य था। एक-एक टापिक को कई-कई बार लिखने का उनका श्रम देखकर एक ओर मन श्रद्धा से भर उठता था। झोले में अपनी हैण्डराइटिंग के छोटे-छोटे सटे-सटे अक्षरों में लिखे हुए पृष्ठ लिए जब कभी दादा मिलते, तो हम उसे माँग कर पढ़ने में कभी चूकते नहीं थे। परन्तु हाँ, एक बार पढ़ना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रारम्भ कर आप उसे बिना अक्षर-अक्षर पढ़े आगे नहीं बढ़ सकते थे, दादा की पैनी दृष्टि से तथा बीच-बीच में कठिन सन्दर्भों को खोलते चलने की उनकी कृपा से आप ऐसा कर भी नहीं सकते थे। ऐसे अवसरों पर अक्सर हम एक दूसरे पर आँखों-आँखों से कटाक्ष भी करते रहते थे।

जब कभी दादा से कवि सम्मेलनों की चर्चा होती है तो वे क्रोध से भर जाते हैं। सरस्वती के मंच को भाँडों की जमात बना देने की स्थिति को लिए वे किसी को भी माफ नहीं करते चाहे वे तथाकथित कवि हों अथवा आयोजक। उनका मानना है कि पैसे की खातिर जो गिरावट समाज में आई है, उसी ने हमारे शील, संकोच, को मिटा दिया है और हमें बेशर्मी की हद तक ले आया है। वे यह भी कहते हैं कि मान लो कि पैसे वाले कवि सम्मेलनों में अपनी मर्जी चलाने के लिए स्वतंत्र है परन्तु "दूरदर्शन" और "रेडियो" को क्या हो गया है। वहाँ भी दूसरे दर्जे के अधिकतर कवि जोड़जुगाड़ से अपनी गोटी फिट कर लेते हैं। राजकीय साहित्यिक कार्यक्रमों का ठेका भी जोड़-जुगाड़ से हथिया लेने की लोगों की प्रवृत्ति के भी "दादा" कड़े आलोचक हैं। जब कभी वे क्रोध में आतुर होकर अपना धारा प्रवाह भाषण देते हैं तो हमारा शान्त होकर सुनते रहना उन्हें और उकसाता है। फिर वे एकाएक चुप हो जाते हैं, एक ठहाका लगाते हैं और उनका एक चिर-परिचित वाक्य उछलता है "भइया ऐसा ही चलता रहेगा क्या करोगे"। क्या सचमुच हम कुछ नहीं कर सकते। क्या सचमुच हम कुछ नहीं करेंगे।

❑

कानपुर विश्वविद्यालय में अपने २५ वर्षों के कार्यकाल में, शोध अनुभाग में रहकर, अनेक विश्वविद्यालयों तथा पुस्तकालयों में जाने का अवसर मुझे प्राप्त हुआ है। जैसे राजभवन पुस्तकालय लखनऊ, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ व सेन्ट्रल नेशनल लाइब्रेरी, कलकत्ता। किन्तु 'मानस और ज्योतिष' जैसा विषय मेरी जानकारी में नहीं आया। दादा वी०बी० सिंह का यह शोध कार्य उनके अपरिमित ज्ञान का द्योतक है. हिन्दी जगत में एक सराहनीय कार्य है जो आगे वाली पीढ़ियों के लिए अनेक प्रकार से लाभदायक सिद्ध होगा।

पं० ज्योति शंकर शुक्ल
(अवकाश प्राप्त) कानपुर विश्वविद्यालय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मित्र देवो भव

❑ प्रकाश चन्द्र अग्रवाल

जिस प्रकार पारस पत्थर के स्पर्श मात्र से लोहा सोना हो जाता है, समुद्र में बूँद गिरने पर उसी में मिल जाती है, और गंगा में कोई नदी मिलते ही गंगा हो जाती है। बस उसी प्रकार पंडित विन्ध्यबासिनी सिंह के साथ बीते पल—पल मेरे लिये सत्संग बनते रहे हैं। उनकी मनसा उपस्थिति में भी मन दादा के साथ एक लय हो जाता है। मित्रता की कसौटी पर जब—जब इन्हें परखा जाता है तो शुद्धता अपने को धन्य मानती है। बड़ी इच्छा होती है कि एलबम में सजे दादा के किसी चित्र के नीचे चुपके से लिख लूँ ''मित्र देवो भव''।

आयकर का अधिवक्ता बनना अर्थभाव के आस—पास डूबने—उतराने की कला में खुद को खो देने के अतिरिक्त शायद कुछ नहीं है। पढ़ने के नाम पर बस बही—खाते और कहने के नाम पर सिर्फ घिसी—पिटी बातें। संभवत: यही सब कुछ जीना होता होगा एक आयकर अधिकारी को भी। बरसों—बरसों पहले जब मैं अपने इसी पूर्वाग्रह सहित दादा से मिला था तो लीक से हट कर उनके आकर्षण ने मेरी धारणाओं में हलचल मचा दी थी। उस मुलाकात में दादा और मेरे बीच कुछ घट गया था — एक रासायनिक क्रिया हो गयी थी जो आज दशकों बाद भी प्रतिक्रियाशील है। मैं पिछले जन्मों में झाँक नहीं पाता हूँ नहीं तो यह भी लिख देता कि हमारे बीच अतीत का कितना मधुर इतिहास है।

सहज और फलदायिनी योग कलाओं या फिर साधारण और गुणकारी औषधियों की तरह दादा के शब्द रूपी तीव्र प्रसाद का मैंने ध्यानपूर्वक सेबन किया है। मानव—जीवन की संपूर्ण सम्पदा मित्रता है — मैत्री सर्वोत्तम आध्यात्मिक धरोहर है। पहले तो इस शौक की खोज ही नहीं हो पाती और यदि भाग्यवश यह पदवी मिल जाय — धारण हो जाय तो फिर छोड़नी ही नहीं चाहिए। दादा के संपर्क में मिला यह सूत्र मेरे मानस में कहीं भीतर—भीतर सुगंध बन कर हमेशा महकता रहता है।

दादा की प्रतिमा बहुआयामी है। वे तो कृष्ण बन कर सुदामा के घर स्वयं ही पहुँच जाते हैं। अग्रज की भूमिका का उनका निर्वाह अतुलनीय है। जिज्ञासु के भविष्य में झाँक कर उसे ज्योतिष—परामर्श देकर दादा ने हमेशा मँझधार से निकाल कर उसकी नाव को किनारे लगाने में कभी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आलस्य नहीं किया। दादा ने रुग्ण तन—मन वालें के लिए होमियोपैथी से लेकर अपनी प्यारपैथी तक का खुले आम उपयोग किया है — जिसकी यादों का लेखा—जोखा करूँ तो एक पोथी रच जायेगी।

मानव गरिमा के अनुसार जीवन यापन कैसे किया जाता है — उसके साथ जुड़ी मर्यादाओं का निर्वाह कैसे होता है और वर्जनाओं से भी कैसे बचा जा सकता है; मेरे इन प्रश्नों के उत्तर दादा हैं। गुण, कर्म, स्वभाव, चिन्तन, चरित्र और लोक व्यवहार में जो तथ्य गहराई तक उतर कर परिपक्व हो जाते हैं — जो छोटे—मोटे आघातों से डगमगाते नहीं — उस तथ्यात्मक सच के दर्शन मैंने अपने अग्रज बन्धु दादा में किये हैं। सघन संकल्प के साथ जुड़ी ब्रतशीलता का सहज निर्वाह इस महापुरुष में हुआ है। दादा अपने निजी जीन को मात्र ब्राह्मणोचित निर्वाह भर से हीरक वर्षों तक ऐसे ले जाये कि औसत सुविधा और प्रतिष्ठा जैसे शब्द एक अच्छी जीवन शैली के आभूषण बन गये हैं। कम से कम महत्वाकांक्षा व्यवहार ऐसा जैसा बचपन होता है — दादा की कथनी—करनी एक है।

बचपन से पचपन और उसमें भी दो स्वर्णिम दशक जोड़कर दादा कभी थके नहीं — वे आज भी निराहार रह कर अपनी दैनिक उपासना सम्पन्न करते हैं। अकसर अपरान्ह में ही पूजा के उपरान्त ही दादा का लंच हो पाता है और तब तक सीता मैया सी उनकी जीवन संगिनी भी प्रतीक्षारत रहती हैं। सत्तर—पचहत्तर की यह जुगल जोड़ी कलियुग में भी है। कोई माने या न माने मैंने, तो दर्शन किये हैं — उनका आशीष लिया है।

दादा को पारंपरिक संस्कार विरासत में मिल और उन्होंने अपनी अगली पीढ़ी को संस्कारशील बनाकर अपने को ऋणमुक्त कर लिया है। उनके वंशजों के चेहरों पर शान्ति का सरल—सहज अभिषेक देखता हूँ तो कल्पना करना कठिन हो जाता है कि इस रचनाकाल में दादा ने कितनी कठिन तपस्या की होगी। उनके परिवार की सीमायें असीम हैं। उन्हें दादा कहने का अधिकार सभी को है — वे सचमुच ही सबके दादा हैं।

दादा ने अपनी गति मंथर करके हमें आगे बढ़ने का अवसर अनेक बार दिया है। मैं उनका ऋणी हूँ — मैं उनका यह ऋण उतारूँगा और उतार कर भी ऋणी ही बना रहूँगा।

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

काशी से कानपुर तक

❑ यज्ञदत्त शुक्ल 'प्रशान्त'

दादा के बारे में उनके मित्रवर डा० शौनक ब्रह्मचारी ने अपने एक पत्र में लिखा था कि 'पं० विन्ध्यवासिनी सिंह शर्मा सुयोग्य, कर्मनिष्ठ, गहन विचारक और एक विद्वान संपादक हैं। उनका स्वभाव नारियल समान है। वे सैद्धान्तिक व्यक्ति हैं। उनका मूलतः सात्विक स्वाभाव है। उनमें गहन साहित्यिक क्षमता के साथ-साथ विलक्षण वैचारिक शक्ति है। वे ज्योतिष एवं चिकित्सा शास्त्र के प्रच्छन्न पंडित हैं। उनकी विविध विशेषताओं में भक्ति का पुट है। उनकी सारी विशेषताओं का आधार भगवती की उपासना है' डा० ब्रह्मचारी की भावना दादा का सम्यक दर्शन कराने के लिए एक सूत्र है। तुलसी पर धाराप्रवाह बोलने वाले इस सुधी चिन्तक के बारे में हमने जब-जब कुछ अधिक जानना चाहा तो हमें उनके सौम्य मुखमंडल पर मौन का आवरण ही मिला। 'मानस और ज्योतिष' के प्रकाशन के दौरान हमारे विशेष आग्रह पर दादा ने श्रृंगार-सन्ध्या पत्रिका के लिए हमारे बन्धु प्रशान्त से एक बेबाक वार्तालाप किया। प्रस्तुत है दादा की प्रशान्त से हुई बातचीत के प्रमुख अंश.

❑ सम्पादक

❑ **काशी की महान परंपराओं में जन्म लेकर आपने जन्मभूमि पर अधिकार छोड़कर कानपुर जैसी औद्योगिक नगरी में बसने का निर्णय कैसे ले लिया।**

मैंने कानपुर में बसने का विचार कभी नहीं रखा। मैं काशी में जन्मा और काशी में ही मरना भी चाहता हूँ। काशी मेरे तन, मन और प्राणों में बसी है। कानपुर में रहना मेरी पारिवारिक विवशता है। बच्चे कानपुर ही पले बढ़े और कानपुरिया संस्कृति में ढले हैं। वे कानपुर छोड़ना नहीं चाहते। काशी से उनका संपर्क उनकी विवशता पर मेरी आत्मतुष्टि का कारण है। शारीरिक शैथिल्य का कम आरंभ होते ही मैं अपने पैत्रिक निवास में चला जाऊँगा जहाँ मेरा एक मात्र कमरा मेरी राह देखता है। वैसे भी मैं काशी के दो चार चक्कर वर्ष में किसी न किसी बहाने लगाया करता हूँ और मेरा संपर्क सदा बना रहता है।

❑ **इन दोनों नगरों के सांस्कृतिक परिवेशों में आपको क्या-क्या अन्तर लगे हैं।**

दोनों में आकाश-पाताल का अन्तर है। काशी बाबा भोलानाथ की नगरी तथा उन्हीं की तरह स्वच्छन्द और आत्मकेन्द्रित है। कानपुर पूर्णतया व्यावसायिक मानसिकता से ग्रस्त नगर है। काशी में सबको आत्मसात करने और अपना बनाने की क्षमता है और कानपुर वैयक्तिकता से ऊपर नहीं उठ पाता। उदाहरणार्थ काशी में बसे शरणार्थी, व्यवसायी सभी वहाँ पहुँचकर पूर्णतया बनारसी हो जाते हैं पर कानपुर में कोई अपनी पारिवारिक या प्रादेशिक संस्कृति न भूलता है, न अपनाता है वह अपने को अपने मूल रूप में ही प्रतिष्ठित करना चाहता है।

❑ **काशी आज भी जीवन्त है। इसकी गोद में सर्व सम्प्रदायों ने जगह पाई है। इसकी जाग्रति का रहस्य क्या है ?**

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

काशी बाबा विश्वनाथ की नगरी है। विश्व के नाथ ने कभी किसी से किसी प्रकार का भेदभाव नहीं रखा। सबको अपनाया है। सर्वश्रेष्ठ संत में राम अनुराग का रूप लेता है। वह मात्र गुण ग्रहण करता है, अवगुण रूपी जल नहीं। "विधि प्रपंच गुण अवगुण साना" है पर संत की हंस वृत्ति गुण ग्रहण करती है, अवगुण नहीं। तुलसी ने लिखा है :-

"जड़ चेतन गुन दोष मय विश्व कीन्ह करतार।
संत हंस गुन गहहिं पय, परिहरि बारि बिकार।।"

बाबा विश्वनाथ की चेतना जड़ को चैतन्य तो करती है पर उसकी जड़ता से अप्रभावित ही रहती है। यदि आप इसकी वैज्ञानिकता समझ सकते हैं तो रहस्य स्वतः आपकी समझ में आ जायेगा।

❑ **आप अपने बचपन से आज तक की पचहत्तर वर्षीय उमर-यात्रा में काशी से प्रत्यक्षतः या परोक्षतः कहाँ तक अनुप्राणित होते रहे हैं।**

पाँच से पचहत्तर तक स्मृतियों के गवाक्ष में काशी और बाबा भोलेनाथ की अल्हड़ और अक्खड़ छवि ही रही है। ममतामयी माँ तथा अनुशासन प्रिय पिता से प्राप्त संस्कार ही मुझे अनुप्राणित करते रहे हैं और आशा है आजन्म मेरे साथ रहेंगे।

❑ **कुछ हार्दिक संस्मरण आपकी स्मृति मंजूषा में अवश्य सुरक्षित होंगे कृपया हम सभी से उनका परिचय कराइये।**

काशी ने मुझे खिलाड़ी और संगठनकर्ता के रूप में ही देखा और जाना है। वहाँ मेरी चपलता और संगठनात्मक शक्ति का ही संस्मरण लोग सुना सकते हैं या मैं भी बता सकता हूँ। मैंने चौंतीस साल की अवस्था में काशी से विदा ली थी। तब से आज तक गत चालीस वर्षों में मेरे व्यक्तित्व ने परिस्थितियों के अनुसार जाने कितने रूप बदले हैं। सब का संस्मरण तो पुस्तकाकार रूप और संस्मरण स्वयं में एक लम्बी कथा है। आप सुनते-सुनते थक जायेंगे और मैं सुनाने में नहीं थकूँगा।

❑ **तुलसी के मित्र टोडरमल के वंशज होने के नाते ही शायद आपका तुलसी से अनुराग इतना सहज है?**

तुलसी के मित्र टोडरमल का परिवार भदैनी वाराणसी का निवासी था। तुलसी का टोडरमल के यहाँ बहुत आदर था और इसी कारण आज भी टोडरमल जी के परिवार में श्रावण कृष्णातीज को तुलसी को श्राद्ध दिया जाता है। हमारा परिवार भी इसी परिवार का एक अंश है जो आज से करीब सात पीढ़ियों पहले नदेसर में आकर बस गया था। स्वामी सहजानन्द के शिष्य दण्डी स्वामी विमलानन्द सरस्वती (भोजपुरी कवि, साहित्यकार एवं अध्यक्ष स्वामी सहजानन्द स्मारक न्यास) राजगुरु मठ, शिवालाघाट, वाराणसी ने यह बात बताई है। उन्होंने ही स्मरण दिलाया कि मैं उसी वंश का एक अंश हूँ।

❑ **एक आयकर अधिकारी का ज्योतिष प्रेम उसमें भी एक नवीनतम दृष्टिकोण से तुलसी का मूल्यांकन, इसकी आधार शिला कहाँ रखी गई थी।**

ज्योतिष प्रेम मुझे अपने शैक्षिक जीवन से था। काशी के तत्कालीन सभी प्रतिष्ठित ज्योतिषी, सभी फोटोग्राफर आदि मुझे पहचानते थे। कारण मात्र एक था मेरी रुचि उस समय हर उस वस्तु में थी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जो अधिकाधिक आकर्षण का केन्द्र हो (मात्र राजनीति को छोड़कर)। यही मेरी अपनी पहचान थी। मेरा बहुधंधी व्यक्तित्व तब वैयक्तिकता को ही महत्व देता था। आध्यात्मिकता से जोड़ा एक घटना ने, सुनना चाहें तो सुनाऊँ।

❑ दादा अवश्य सुनाने की कृपा करें।

ज्योतिष के मेरे दो गुरु थे। पहले पं० श्यामदत्त मिश्र, अर्दली बाजार, वाराणसी और दूसरे स्वर्गीय पं० दाऊ जी दीक्षित, बाँस फाटक, वाराणसी। पहले ने मुझे प्रारंभिक तथा तंत्र, मंत्री ज्ञान दिया था और दूसरे ने मुझे ज्योतिष शास्त्र के वैज्ञानिक चमत्कारों से परिचित कराया था। 1951 में मेरे ज्येष्ठ पुत्र का जन्म हुआ। मैंने अपने पूर्ण ज्ञान का प्रयोग कर उसकी विधिवत कुण्डली के सारे गणित पुस्तकाकार रूप में तैयार किये तथा गुरुओं के पास कुछ फल सुनने की लालसा से ले गया। प्रथम गुरु ने उपदेश दिया ज्योतिष का व्यवहार अपनों तथा अपने परिजनों एवं आत्मीयों के लिए करना उचित नहीं। पढ़े-लिखे प्रतिष्ठित पद पर आसीन तुम्हें किसी गरीब ब्राह्मण ज्योतिषी की वृत्ति नहीं छीननी चाहिए। पहले दक्षिणा देकर पत्रिका बनवाओ तब फल बताऊँगा। दूसरे ने देखते ही वह पत्री फाड़कर फेंक दी, वही वाक्य दुहराये और साथ ही गुरु दक्षिणा में ज्योतिष ज्ञान से कोई लाभ लेने का प्रयास नहीं करोगे का वचन ले लिया। मुझे आध्यात्मिक विचारों से जोड़ने में यह स्व का विवशता में किया गया त्याग ही सहायक हुआ। मैं आयकर विभाग में आया तो खेल की वरीयता साहित्य का विद्यार्थी रहने के कारण सदा ही विभागीय पत्रिकाओं में लेखन व उनके सम्पादन से जुड़ा रहा। इसी आधार पर उ० प्र० आयकर विभाग ने मुझे 'हरफनमौला व्यक्तित्व' का पुरस्कार सन् 1970-71 वर्ष में दिया था।

साहित्य से मुझे बलपूर्वक निकट से जोड़ने का श्रेय दूसरी छोटी काशी कहे जाने वाले फर्रुखाबाद जनपद को है जहाँ मैं जुलाई 1971 से जुलाई 1974 तक आयकर अधिकारी के रूप में नियुक्त था। वरिष्ठता के कारण मैं केन्द्रीय विद्यालय की प्रबन्ध समिति का पदेन सदस्य था और स्वाभाविक रूप से वहाँ के विभिन्न शिक्षा केन्द्रों के वरिष्ठ प्रवक्ताओं के सम्पर्क में आ गया। तात्कालिक जनपद के पदाधिकारियों यथा जिलाधिकारी, पुलिस अधीक्षक, जिला जज, मुख्य चिकित्साधिकारी तथा सेना के कर्नल आदि के बीच मुख्य अतिथि या उद्घाटक के रूप में बोलने के लिए मैं ही आगे किया जाता था। फलतः मानस चतुश्शती वर्ष 1974 में एक भाषण में कुछ नया प्रस्तुत करने के लिए मैंने तुलसी के सच्चिदानन्द शब्द प्रयोग को ज्योतिष से समन्वित करते हुए भाषण दे डाला, जो बहुत सराहा गया। मेरा ज्योतिष प्रेम जनपद के साहित्यकारों में चर्चा का विषय ही नहीं बना प्रत्युत उसे लिखने के आग्रहों ने मुझे बलपूर्वक इस विषय से जोड़कर उस चिन्तन को एक निश्चित दिशा प्रदान कर दी।

❑ तुलसी पंचशती वर्ष में संतकवि को आपकी साहित्यांजलि प्रणम्य है। अब आगे आपकी क्या लिखने की योजना है ?

अभी तो यही चिन्तन पूर्ण नहीं कहा जा सकता। पर मन में एक आकाँक्षा है कि वेदांगों में नेत्र की संज्ञा से विभूषित इस शास्त्र को अन्य अंगों तथा उपांगों और भारतीय विविध दर्शनों से जोड़ने वाले सूत्रों पर प्रकाश डालने का प्रयास करूँ। व्यक्तिगत रूप से शिवशक्ति का उपासक होने के कारण शैव एवं शाक्त साहित्य भी मेरे चिन्तन का केन्द्र रहा है। उस पर भी कुछ लिख सका तो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अपने को धन्य समझूँगा।

- **आगामी सदी में तुलसी को जनमानस किस रूप में स्वीकारने जा रहा है ?**

संत तुलसीदास ज्योतिर्विज्ञानी, बहुज्ञ संत ही नहीं महामानव थे। उनके ज्ञान के सर्वांग को छू पाना किसी एक व्यक्ति के लिए संभव नहीं। उन पर अव तक पंचशताधिक शोध प्रवन्ध प्रस्तुत हो चुके हैं और अभी सहस्त्रों प्रस्तुत होते रहेंगे।

- **भारतीय ज्योतिर्विज्ञान अभी तक प्रभुवर्ग की व्यावसायिक संपदा रहा है क्या कभी आम जन भी इसको विज्ञान का विषय बनाकर अंगीकार करेगा।**

ज्योतिष शास्त्र को मूलतः आदि गुह्य आध्यात्मिक विज्ञान कहा गया है। विज्ञान अव क्रमशः चेतना तथा अध्यात्म के चिन्तन को स्वीकारने लगा है और उसे एक दिन भारतीय ज्योतिष की विश्वास समन्वित आध्यात्मिक वैज्ञानिकता को पूर्ण वैज्ञानिक मान्यता देनी ही पड़ेगी। ज्योतिप के अत्यधिक व्यवसायिक उपयोग ने उसकी गति अवरुद्ध कर रखी है पर विज्ञान और वैज्ञानिक अपने शोधों में उस दिशा में अग्रसर है और जिस दिन वे इसे पूर्णतया स्वीकार कर लेंगे वह शुभ दिन मानव मात्र के लिए सर्वाधिक कल्याणकारी होगा।

- **युग परिवर्तन क्या है। क्या सन् 2000 इस वसुन्धरा पर कोई खेल खेलने जा रहा है? ज्योतिष की क्या राय है?**

मान्यताओं में बदलाव ही युग परिवर्तन कहा गया है। भविष्य के गर्भ में क्या है यह निश्चित क्रम से वह जगन्नियन्ता ही जानता है। ज्योतिष पुरुषार्थ की प्रेरणा देने तथा संकेत देने वाला शास्त्र है और सदा शुभत्व की ही कामना करता है। अतः सव शुभ ही होगा। महामहोपाध्याय पं० गोपीनाथ कविराज सहित अनेक सन्तों में इसी आशा और विश्वास के दर्शन मैंने भी किये हैं और मात्र उसी की कामना करता हूँ।

- **इक्कीसवीं सदी के आर्थिक सामाजिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक पक्षों पर ज्योतिष की अवधारणा क्या है।**

सदी इक्कीसवीं हो या भविष्य की कोई अन्य, ज्योतिष एकरूपता की कल्पना नहीं करता। उसमें चतुष्पुरुपार्थ साधन में क्रम तथा प्रत्येक का समान महत्व दिया गया है। "जो जेहि भाव नीक तेहि सोई" में इष्ट की विभिन्नता तो रहेगी। सामाजिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक प्रतिमान न कभी एक थे न होंगे। आदर्श और यथार्थ के विवाद का हल यथार्थोन्मुख आदर्शवाद या आदर्शोन्मुख यथार्थवाद में ही प्राप्त किया जा सकता है।

- **रामचरित मानस हिन्दी साहित्य की अनूठी कृति है जिसने तुलसी और भारत का अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर परिचय कराया है किन्तु भारत में इसका कमाऊ उपयोग हो रहा है। आपको कैसा लगता है।**

कृति को अनूठी या साधारण तो श्रोता और पाठक ही वनाते हैं। कवि तो सदा अपने अनूभूत सत्य को अपनी पूर्ण ज्ञान की क्षमता से युक्त कर स्वतः आनन्दविभोर होता है और श्रोता और पाठक से वही अपेक्षा रखकर उसको व्यक्त करता है। उसके लिए तो उसकी हर कृति अनूठी होती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उसका सदुपयोग या दुरुपयोग "जो जेहि भाव नीक तेहि सोई" से होता रहा है और होता रहेगा। हमें या आपको भला लगे या बुरा।

❑ मानस के किन-किन अध्येताओं ने आपको प्रभावित किया है।

हर अध्येता ने जिसने कुछ नया देखने का प्रयास किया है।

❑ मानस पर अब किस-किस कोण से शोध कार्य होने चाहिए।

तुलसी साहित्य में अपरिमित ज्ञान और संभावनाएं हैं। जो कुछ नया देख सके वह भाग्यशाली ही होगा।

❑ तुलसी के अलावा आपको किन कवियों ने प्रभावित किया है।

सत्य सामयिक हो शाश्वत हो सबका अपना महत्व है। सभी किसी न किसी रूप में प्रभावित करते हैं। सत्यानुभूति को ही व्यक्त करता है अतः उसका अपना महत्व है। प्रभाव हमारी रुचि पर आश्रित है। इस दृष्टि से मुझे प्रसाद महादेवी और बच्चन सर्वाधिक प्रिय रहे हैं। अंग्रेजी के कवियों में मिल्टन तथा ब्राउनिंग मुझे अच्छे लगते हैं।

❑ आज के कवियों में आपके प्रिय नाम कौन हैं?

आज के कवियों के विषय में मेरा ज्ञान सीमित है। जिन्हें पढ़ने या सुनने का अवसर मिला उनमें नीरज, रमानाथ, माहेश्वर, भारतभूषण तथा किशन सरोज प्रिय लगे। नीरज पर मन सोचने की विवशता अनुभव करता है क्योंकि उनके और मेरे विचार परिवर्तन में कुछ साम्य है।

❑ आपकी कानपुर महानगर में सांस्कृतिक क्षेत्र में सेवा करने की क्या योजनाएं हैं।

सांस्कृतिक और साहित्यिक सेवा की क्षमता प्रायः समाप्त हो चुकी है। शुभकामनाएं मात्र दे सकता हूँ।

❑ नयी पीढ़ी को आप क्या संदेश देना चाहेंगे।

मात्र इतना ही कहूँगा कि अपने देश और समाज की सांस्कृतिक गरिमा को युवा वर्ग पहचाने और तदनुरूप उसी की स्थापना में अपनी क्षमता के अनुरूप सहायक बने तो जीवन सफल होगा।

❑

यह बड़े हर्ष की बात है कि आदरणीय दादा विन्ध्य बासिनी सिंह जी की 'मानस और ज्योतिष' पुस्तक प्रकाशित हो रही है। मेरा विश्वास है कि इस पुस्तक का हिन्दी-साहित्य और ज्योतिष के क्षेत्र में अपना एक विशेष स्थान होगा।

इन्हीं शुभकामनाओं के साथ दादा को प्रणाम।

रजत अधीर
२०३-सी/२, साहब नगर,
कल्याणपुर, कानपुर - २०८ ०१७

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मृत्युंजय

लगने लगा जैसे—
अब आगे मार्ग नहीं है,
आ गया है यात्रा का अंतिम पड़ाव।
इस जर्जर चीथड़े में,
और आगे जाना भी कैसे हो सकता है।
बड़ी छटपटाहट है,
प्रयास का भी कोई प्रयोजन नहीं रहा,
पाथेय भी समाप्तप्राय हो चला,
समय आसन्न है कि—
थके—हारे जीवन को
विश्रान्ति मिले,
शायद कुछ शान्ति मिले।
लेकिन, नहीं!
ठहरो मृत्यु!!
मानव इतना निरीह!
नहीं
इतना निर्बल नहीं
यूँ ही नहीं वहन किया दुर्वहनीय गर्भ—भार,
पार किया असहनीय मृत्युसम पारावार,
तब जाकर गोमुख की पथराई बर्फ तोड़
फूटी सृजन की सुरसरिता
बिखेरती अलौकिक संगीत,
जीवन—रस की फुहार,
हो खुद से एकाकार,
मानव बना रचनाकार।
ऐसे ही होती है विजय
सत्य की असत्य पर
ज्योति की तमस पर।
अमरत्व की मृत्यु पर।

अरुण कुमार सिंह
ए—३०४, कैलाश विहार,
कल्यानपुर, कानपुर—२०८ ०१७

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विन्ध्यबासिनी सिंह

तुलसी साहित्य में गीत-तत्व

साहित्य में काव्य तथा काव्य में गीत, अभिव्यक्ति की वह विधा है जिसमें सत्, चिद् तथा आनन्द भावों के माध्यम से मनोहारी मूर्तिमत्ता प्राप्त कर स्थूल का सूक्ष्म से साक्षात्कार करा देते हैं। रसानुभूति की इस प्रक्रिया में" रसो वै सः" की सार्थकता प्रमाणित होती है। गीत जब सम् या सम्यक होता है तो भाषा विहीन होने पर भी संगीत के रूप में मुखर हो उठता है। तभी तो भाषा विहीन स्वाभाविक ध्वनियाँ-कंकन किंकिनी, कलकल, झर-झर, टपटप, रिमझिम आदि अपनी नाद व्यंजना से ही मानव मन को विभिन्न प्रकार से प्रभावित करती, तथा वस्तु एवं परिस्थिति विशेष का सम्पर्क तथा वोध ध्वनि मात्र के आधार पर कराने में सक्षम होती हैं। गीत का माध्यम भाषा, संगीत तथा वाद्य भले ही हों पर स्पष्टतया दोनों (गीत तथा संगीत) किसी देश या काल की परिधि में सीमित नहीं किये जा सकते।

लैण्डन के अनुसार "संगीत तो विश्व भाषा है। जहाँ वाणी मूक हो जाती है वहाँ संगीत फूट पड़ता है। वह भाषाओं की नैसर्गिक अभिव्यक्ति का माध्यम है। शब्दों में जिनकी प्रखरता और गहराई समा नहीं सकती, संगीत ऐसी ही अनुभूतियों को स्वरों का रूप देता है।" कारलायल ने भी गीत को संगीतमय विचार ही माना है। वह कहता है - 'संगीतात्मक भावना या विचार ऐसे मस्तिष्क से निःसृत होते हैं जिसने वस्तु के अंतरतम में प्रविष्ट होकर उसके गूढ़ रहस्य को जान लिया है।'-- स्पष्टतः साहित्य में काव्य और काव्य में रस, रमणीयता, प्रसाद तथा लालित्य आदि का जो मूलभूत है उसे ही हम गीत या संगीत का सर्वश्रेष्ठ रूप कह सकते हैं। उसका अस्तित्व भाव स्वर तथा लय पर`आधारित होने पर भी उसमें जो सत्, चिद्, आनन्द का भाव है वही उसकी आत्मा है। सम्भवतः इसी कारण वैदिक मंत्रों के प्रणेता ऋषियों ने ओम् को सच्चिदानन्द का एकाक्षर प्रतीक उद्गीथ तथा सामवेद का सर्वश्रेष्ठ रस कहा है तथा गा-गाकर ही वैदिक मंत्रों की रचना की है।

गीत विधा के विकास का इतिहास किसी साहित्य के इतिहास से भिन्न नहीं कहा जा सकता। भाषा के विकास-क्रम में विषयानुरूप शब्द चयन तथा संगीतात्मक नाद और लय के विधान के साथ अभिव्यंजना तथा काव्य की संप्रेषणीयता की विधा भी परिवर्तित रूपों में पाठकों एवं श्रोताओं का मनोरंजन करती रही है। हिन्दी साहित्य में यह कभी वह आल्हा-मारू के गीतों के रूप में तो कभी निर्गुण संतों की वाणी वनकर सामने आयी। ज्ञानाश्रयी शाखा के संत कबीर, नानक आदि की वाणी हो या प्रेमाश्रयी आख्यानों के गायक मंझन, जायसी की रचनायें, सब में लय, भाव, स्वर की विविधता के साथ ही जन-मन-रंजन और सर्व मंगल की भावना समान रूप से व्याप्त है। सगुण धारा के वैष्णव कवियों ने भी राम या कृष्ण लीलाओं के वर्णन और प्रचार-प्रसार में इसी विधा का उपयोग किया है। जहाँ कृष्ण भक्त कवियों में सूर, नन्ददास तथा घनानन्द ने सरस, मधुर, सुन्दर गेय पदों की रचना की वहीं रामभक्त कवियों ने भी भगवान श्रीराम के चरित को "गाकर" अमरता प्राप्त की और गीत साहित्य की अनमोल सेवा की तथा उसके विकास में महत्वपूर्ण योगदान किया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भक्त शिरोमणि गोस्वामी तुलसीदास के साहित्य में गीत विधा का जो रूप देखने को मिलता है वही यहाँ पर विचारणीय है। डा० मुंशीराम शर्म "सोम" के अनुसार "गीत काव्य में आत्माभिव्यक्ति, संगीतात्मकता, संक्षिप्तता एवं विचारों की एकरूपता होना आवश्यक है।" नीरज संगीतात्मकता को लय और गेयता में विभाजित कर शेष गुणों में संक्षिप्तता, वैयक्तिता, तथा रागात्मक बौद्धिकता की प्रधानता प्रतिपादित करते हैं। डा० लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय ने 'गेयता, संक्षिप्ति, अनुभूति की तीव्रता, वैयक्तिता, आत्मनिष्ठा, अभिव्यक्ति की सीमितता, बुद्धि पक्ष के स्थान पर हृदय पक्ष का प्रावल्य, स्वानुभूति, सहजता, सुख-दुखात्मक वैयक्तिक संवेदना तथा भावसघनता" को गीत के प्रमुख तत्व माना है। आचार्य सोम के अनुसार "तुलसी की रचनाओं मे संगीत तत्व प्रधान होने पर भी अन्य तत्वों का अभाव खटकता है। प्रायः वर्णनात्मकता की प्रधानता के कारण विचारों की एकरूपता सुरक्षित नहीं रह पाई है।" फिर भी वे स्वीकार करते हैं कि "तुलसी साहित्य अधिकांशतः गेय पदों में ही है तथा उनकी मार्मिकता और हृदयग्राहकता अनेक स्थलों पर दर्शनीय है।"

वर्तमान साहित्य में गीततत्वों की जो व्याख्या हो रही है उसके अनुसार उपरोक्त विचारों का समर्थन भले ही किया जाय, पर उसकी उपयुक्तता को न्यायोचित ठहराना उचित नहीं होगा। इसे आधुनिक फिल्म संगीत के समर्थन में शास्त्रीय संगीत में दोषान्वेषण करने जैसा ही प्रयास कहा जायेगा। तुलसी के गीत, लोकगीत नहीं, शास्त्रीय गीत कहे जा सकते हैं तथा उनका मूल्यांकन शास्त्रीय आधार पर ही करना उचित होगा।

डा० धीरेन्द्र बहादुर सिंह के अनुसार - "भारतीय संस्कृति एवं काव्य की परम्परा का वास्तविक और वैज्ञानिक मूल्यांकन उसके संगीतात्मक तत्वों को अनिवार्य रूप से दृष्टि में रखकर ही किया जा सकता है।" संगीत-तत्व की यह प्रतिष्ठा मध्यकालीन संत-कवियों में भी पूर्णरूपेण बनी रही। "हिन्दी साहित्य के अध्ययन से यह स्वयं ही विदित हो जाता है कि यहाँ दीर्घकाल तक छन्दों की महत्ता काव्य को संगीतात्मक गुणों से आवेष्टित करने के लिए आवश्यक मानी जाती थी।" नाद और लय की इसी निष्पत्ति द्वारा तुलसी ने भी अपने काव्य में प्राणवता की सफल व्यवस्था की है। उनके काव्य में छन्दों में पर्याप्त संगीतात्मक समृद्धि है।

काव्य और संगीत दोनों के रसास्वादन का माध्यम एक ही है। अन्तर मात्र इतना है कि एक का आधार नाद का व्यंजनात्मक स्वरूप है तो दूसरे का स्वारात्मक आरोह-अवरोह। युग-युग में भाव बुभुक्षित लोग वे भाव चाहते हैं जिसमें राग एवं रस समान रूप से विद्यमान हों। तुलसी साहित्य में राग-रागिनियों में आवेष्ठित ऐसे सुन्दर भाव-पूर्ण गेय पदों की पर्याप्त संख्या देखी जा सकती है। विशेषतया विनयपत्रिका, गीतावली और कृष्ण-गीतावली आदि तो पूर्णतः गेय पदों में लिखे गये हैं। इसीलिए तो श्री वियोगीहरि ने विनयपत्रिका की भूमिका में गोस्वामीजी को "पिंगलाचार्य तथा संगीत कला का पंडित" कहा है। कौन पद किस राग में गाया जाता है इसका पूर्ण विचार वे रखते थे तथा उस पद का भाव भी उन्होंने तदनुरूप ही रखा है। विनयपत्रिका में तुलसी ने प्रायः बीस रागों का प्रयोग किया है। गीतावली में उन्नीस और कृष्ण-गीतावली में दस रागों का व्यवहार किया गया है। राग केदार, कल्याण, विहाग, तोड़ी, रामकली, विलावल, रागमल्हार तथा गौरी रागों के प्रयोग विशेषरूप से दर्शनीय है, जिनमें आरोह-अवरोह के साथ वादी-संवादी, अनुवादी तथा विवादी स्वरों का उपयोग भी यथास्थान उपयुक्तता के साथ हुआ है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डा० धीरेन्द्र वहादुर सिंह ने अपने शोध ग्रंथ (तुलसीदास की कलागत चेतना) में विष्णु नारायण भातखण्डे के अनुसार संत कवि के गेय पदों की शास्त्रीय संगीत के सम्बन्ध में विवचेना प्रस्तुत करते हुए महाकवि के संगीत ज्ञान का प्रतिपादन करते हुये कुछ पदों का शास्त्रीय विवेचन किया है। उक्त ग्रंथ से उद्धृत कुछ पदों की शास्त्रीय विवचेना पाठकों के विचारार्थ प्रस्तुत है-

राग केदारा - (विनय पत्रिका, पद संख्या-४१)
कवहुँक अंव अवसर पाइ ।
मेरिऔ सुधि ध्याइवी, कछु करूण कथा चलाइ ।
बूझिहै 'सोहै कौन', कहिवी नाम दसा जनाइ।
सुनत राम कृपालु के मेरी विगरी औ बन जाइ।।

यह राग कल्याण थाट से उत्पन्न राग है। वादी स्वर शुद्ध माध्यम तथा संवादी स्वर षड्ज है। आरोह षड्ज से एकदम माध्यम पर जाना होता है। अवरोह में कोमल निषाद का प्रयोग कभी-कभी धैवत की संगति से किया जाता है। यह रात्रि के प्रथम प्रहर में गाया जाने वाला राग है-

आरोह - सा, म, मप, धप, निध, सा।
अवरोह - सा, निध, प, म प ध प, मं, ग मं, रे सा।
राग की पकड़ - सा, म, म प, ध प म, प म, रे सा।
राग विहाग - (विनय पत्रिका, पद संख्या-१११)
केशव कहि न जाइ का कहिये।
देखत तव रचना विचित्र हरि, समुझि मनहि मन रहिये।
सून्य भित्त पर चित्र, रंग नहि, तनु विनु लिखा चितेरे।
धोए मिटइ न, मरइ भीति, दुख पाइअ एहि तनु हेरे।।

यह राग विहाग, विलावल थाट के रागों में से एक है। इसके आरोह में ऋषभ एवं धैवत स्वर वर्जित है तथा अवरोह सम्पूर्ण है। वादी स्वर गान्धार तथा संवादी निषाद है। गायन का समय रात्रि का द्वितीय प्रहर है।

आरोह - सा ग, म प, नि सां।
अवरोह - सा नि, ध प, म ग, रे सा।
राग की पकड़ - नि सा, ग, म प, ग म ग, रे सा।
राग तोड़ी - (विनय पत्रिका, पद संख्या-७६)
तू दयालु दीन हौं, तू दानि हौं भिखारी।
हौं प्रसिद्ध पातकी, तू पाप पुंज हारी।।
नाथ तू अनाथ कौ, अनाथ कौन मो सों।
मो समान आरत नहिं, आरत हर तों सों।।

यह राग तोड़ी थाट का राग है। इसमें मध्यम तीव्र, निषाद शुद्ध तथा शेष स्वर रे, ग तथा घ कोमल लगते हैं। वादी स्वर धैवत तथा संवादी गान्धार है। यह सम्पूर्ण जाति का राग है और इसका गायन का समय दिन का दूसरा प्रहर है। इस राग की सम्पूर्ण विशेषता रे, ग, घ इन स्वरों पर अवलम्बित है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आरोह - सा, रे ग, म प, ध नि सां।
अवरोह - सां नि ध प, म ग, रे सा।
राग की पकड़ - ध नि सा, रे, ग, रे सा, म, ग, ग, रे सा।
राग भैरव - (गीतावली-उत्तरकाण्ड-१४)
रामचन्द्र कर कंज काम तरू, वामदेव हितकारी।
सिय सनेह-बर-वेलि-बलित बर प्रेम वंधु वर बारी।।
मंजुल मंगल-मूल मूल तनु, करज मनोहर साखा।
रोम परन, नख सुमन, सुफल सब काल सुजन अभिलाषा।।

यह भैरव थाट का और सम्पूर्ण जाति का राग है। ऋषभ तथा धैवत इसमें कोमल प्रयुक्त होते हैं, शेष स्वर शुद्ध लगते हैं। वादी स्वर धैवत है और संवादी ऋषभ है। यह प्रातः काल गाया जाने वाला राग है। इसकी सम्पूर्ण विशेषता रे, ध स्वरों पर निर्भर है।

आरोह - सारे ग म, प ध नि सां।
अवरोह - सां नि ध, प म ग, रे सा।
राग की पकड़ - सा ग, म प, ध प।
राग गौरी - (कृष्ण गीतावली, पद संख्या-१३)
छांड़ों मेरे ललन ललित लरिकाई।
ऐहैं सुत देखुवार कालि तेरे, ववै व्याह की वात चलाई।
डरिहैं सास ससुर चोरी सुनि, हँसिहैं नई दुलहिया सुहाई।।

कृष्ण-गीतावली का यह पद राग गौरी में है, जो एक सायं गेय राग है। यह राग भैरव थाट या पूर्वी थाट से उत्पन्न दो मुख्य रूपों में अधिक प्रसिद्ध है। भैरव थाट से उत्पन्न राग गौरी सर्वोत्कृष्ट राग है। इसमें आरोह में गान्धार और धैवत स्वर वर्जित हैं और अवरोह सम्पूर्ण है। इसका उठाव "सा नि ध नि, रे ग रे म, ग रे, सा रे नि सा" से पहचाना जा सकता ळै।

गोस्वामी जी की आरंभिक रचनाओं में "रामललानहछू" वीस सोहर छन्दों का काव्य है जिसकी रचना सम्भवतः विवाह के अवसर पर गाने के लिये की गयी थी। "पार्वती मंगल" तथा "जानकी मंगल" का प्रचार भी स्त्रियों में ही अधिक रहा है। इनमें मुख्यतः हरिगीतिका छन्द का प्रयोग किया गया है। "कवितावली" में भी गेय पदों का ही वाहुल्य है। तुलसी ने काव्यतत्व को संगीत में समाहित कर ध्वनि एवं नाद से समन्वित भाव एवं भाषा प्रवाह से युक्त जिन गीतों का सृजन किया है, वे गुणीजनों को उत्तम कवित्व, अद्भुत पद-लालित्य, तथा सुरूचिपूर्ण संगीत का आनन्द देने में पूर्णतया सक्षम हैं। अतः स्पष्ट है, कि गोस्वामी जी जितने वड़े पण्डित, कवि तथा भक्त थे उतने ही बड़े कलाविद्, संगीतज्ञ, पिंगलाचार्य तथा गीतकार भी थे तथा श्री वियोगी हरि की उक्त पूर्णतः न्यायोचित एवं तर्क सम्मत है। रामचरित मानस के प्रारम्भिक श्लोक में "वर्णानामर्थ संघानाम् रसानाम् छन्दसामपि, मंगलानाम् च कर्तारौ" पर अधिक वल देते दिखाई देते हैं तो लगता है कि वे वंदना में ही कल्याणकारी, अर्थपूर्ण, छन्दवद्ध, रसयुक्त गेय पदों में ही रचना की सार्थकता का सन्देश दे रहे हैं, जिसका औचित्य भी "रामचरित मानस" में उन्होंने पूर्णतया सिद्ध कर दिया है।

विनय पत्रिका में महाकवि ने प्रायः सभी देवी-देवताओं की वन्दना की है, पर सवसे एक मात्र राम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के चरणों में रति का वरदान माँग कर वे अपनी आत्माभिव्यक्ति, में एकनिष्ठता तथा विचारों की एकरूपता का परिचय देते हैं। संक्षिप्तता तथा वैयक्तिकता में तो प्रायः सभी पद संत कवि की विलक्षण प्रतिभा का परिचय देते हैं। संक्षिप्तता की दृष्टि से प्रत्येक पद स्वयं में एक पूर्ण ग्रंथ है। उदाहरणार्थ विनय पत्रिका के पद संख्या १५ और १६ में की गयी भवानी स्तुति में हमें दुर्गा सप्तशती का सार देखने को मिल जाता है।

दुसह दोष-दुख दलनि, करू देवि दाया।
विश्व-मूलासि, जन-सानूकूलासि, कर शूलधारिणी महामूल माया ।।
(विनय-पद-१५)

जव जय जगजननि देव, सुर-नर-मुनि-असुर-सेवि,
भुक्ति-मुक्ति-दायिनि भय-हरण कालिका।
मंगल मुद सिद्धि सदनि, पर्वशर्वरीश-वदनि,
ताप-तिमिर तरूण-तरणि-किरणमालिका।।
(विनय-पद-१६)

अतः संगीतात्मकता के साथ-साथ गीतकार की संक्षिप्तता आत्माभिव्यक्ति, विचारों की सहजता तथा एकरूपता भी तुलसी के सभी पदों में दर्शनीय है।

साहित्य में गीत विधा की पृथक सत्ता की स्थापना के लिये जो प्रयास वर्तमान युग में चल रहा है उसमें आधुनिक गीतकारों में स्वस्थ आलोचना के प्रति उदासीनता एवम् कटुता की भावना देखी जा सकती है। संगीत के लय, ताल और गेयता की बात तो वे करते हैं पर उसके शास्त्रीय ज्ञान से बहुधा उन्हें अरूचि ही दिखाई पड़ती है। सहजता, संक्षिप्तता तथा रागात्मक बौद्धिकता के नाम पर बहुधा सरस तुकबन्दी मात्र ही देखने को मिलती है। ऐसे गीतकारों के लिए संत शिरोमणि महाकवि तुलसी के भाव भरे सहज एवं सरस गीत निश्चय ही प्रेरणा स्रोत बन सकते हैं। नाद और लय की निष्पत्ति से काव्य में जो प्राणवता आती है तुलसी साहित्य उसका सर्वोत्तम उदाहरण माना जा सकता है। शब्द शक्ति त्रयी (अविधा लक्षणा तथा व्यंजना) का इतना सुन्दर, सहज तथा प्रभावशाली उपयोग अन्यत्र दुर्लभ है।

□

मानस और ज्योतिष पं० विन्ध्य बासिनी सिंह का अभिनव शोध ग्रंथ है। दैनिक जीवन में सूर्य की भाँति ही विद्वत्जनों में इस कृति का स्वागत होगा। अपनी मनीषा से श्री रामचरित मानस को स्पर्श कर पंडित जी ने नये क्षितिज खोले हैं। नयी दृष्टि दी है। कृति का प्रकाशन सुन्दर सुस्पष्ट है जिसके लिए इससे जुड़े सभी लोग बधाई के पात्र हैं।

विनोद तरूण एवम् शैलेन्द्र शर्मा
साहित्य विचार मंच
भारतीय रिजर्व बैंक, कानपुर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विन्ध्यबासिनी सिंह

कवि की मानसिकता तथा रचनाधर्मिता

भारतीय चिन्तनधारा में इष्ट का एक विशिष्ट महत्व रहा है। अपने इष्ट में ही परब्रह्म सच्चिदानन्द का आरोप कर उसे ही पूर्ण तथा अन्य को उसका अंग मात्र मानने की प्रवृत्ति ने ही नाना वादों तथा धर्मों को जन्म दिया है। साध्य, साधक एवं सिद्धि सभी की पूर्णता की कसौटी सच्चिदानन्द का बोध ही रहा है। इसी भावना के आधार पर काव्य साधकों ने "रसौ वैसः" का सिद्धान्त प्रतिपादित कर काव्यानन्द को ब्रह्मानन्द सहोदर की संज्ञा प्रदान की है। भारतीय काव्य में इसी कारण सच्चिदानन्द की अनुभूति कराने की क्षमता काव्य सिद्धि का मानदण्ड मानी गई है।

अनुभूति रागात्मक हो या बौद्धिक तथा अभिव्यंजना सरल हो अथवा मार्मिक, कवि की मानसिकता और रचनाधर्मिता का परिचय उससे मिलता है। युग विशेष के प्रसंग विशेष को अपना कथ्य बनाकर, नये परिप्रेक्ष्य में नये भावबोध के अनुरूप अभिव्यक्ति द्वारा कवि का रचना शिल्प ही नहीं उसकी मानसिकता भी पाठक को प्रभावित करती है। वस्तु योजना एवं अभिव्यंजना के रूप में कवि की परिवेशगत जागरूकता, सामाजिक संचेतना, तथा भाव जगत की सूक्ष्म प्रतिक्रिया के रूप में जो भाव संप्रेषण पाठक तक पहुँचता है तथा रसानुभूति कराने में जिस हद तक सफल होता है उसे ही उसकी सफलता का मानदण्ड माना जा सकता है।

कवि की मानसिकता उसके भावात्मक पक्ष को प्रकट करती है जबकि रचनाधर्मिता में भौतिक प्रभाव उत्पन्न करने की चेष्टा के साथ-साथ युग-बोध के सम्प्रेषण की प्रवृत्ति श्रोता की ग्राह्यता की भावना से जुड़ी होती है। आज के परिवेश में मानसिकता की परिपक्वता के बिना ही भाव सम्प्रेषण की जो प्रक्रिया श्रोता पर प्रत्यक्ष प्रभाव उत्पन्न करने की दृष्टि से, साहित्य की शाश्वत मान्यताओं का उल्लंघन करके, आरम्भ कर दी गयी है उसके कारण साहित्य अनिश्चितता की स्थिति से गुजर रहा है। सच्चिदानन्द जिस भावना का प्रतीक है उसका साक्षात्कार कराने में आज का अधिकांश साहित्य असमर्थ प्रतीत होता है। कहीं मात्र सत्यम् के बोध से आक्राँत चिद् और आनन्द से शून्य कविता रोटी का भूगोल पढ़ाती है। कहीं सत्य और आनन्द से शून्य मात्र चिद् का बखान आध्यात्म के उपदेशों जैसा खलता है तो कहीं मात्र आनन्द की अनुभूति से प्रेरित सिनेमा शैली के गीत तुकबंदियों के रूप में या तो अपरिपक्व मानसिकता या सस्ती रचनाधर्मिता का दर्शन कराते हैं। आज का कवि अपनी मानसिकता का बोध कराने में असमर्थ-सा दिखाई पड़ता है।

वर्तमान परिवेश में कवि की झुँझलाइट, कुंठा, निराशा, अवसाद, एकाकीपन, अपने से ही अजनबीपन अन्तर्विरोध व ऊहापोह आदि जो उसके अपने ही नव मनोविज्ञान के फलस्वरूप हैं उनसे लगता है कि प्राचीन मान्यताएँ तथा आस्था के स्वर भटक से गए हैं और सच्चिदानन्द का बोध करने या कराने की प्रवृत्ति से हटकर नए मूल्यों की स्थापना के प्रति उसका मोह उसे ही नहीं आज की कविता तथा गीतों को भी झकझोर रहा है। सच्चिदानन्द के जिस स्वरूप का दर्शन करके प्राचीन आचार्यों ने 'रसो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वैसः' तथा काव्यानन्द को ब्रह्मानन्द सहोदर कहा था वह अनास्था के इस युग में टूट कर कहाँ गिरेगा यह पता भी नहीं लगता है। वस्तुतः हमारे वर्तमान कवि तथा रचनाकार वन्धु सच्चिदानन्द की परिधि में बँधे हुए भी उसकी परिभाषा को झुठलाने का एक प्रयास कर रहे हैं। डा० लक्ष्मी शंकर वार्ष्णेय के शब्दों में इनकी 'बौधिक अनुभूति आरोपित लगती है और उसमें मौलिकता का अभाव है तथा - उनकी वैज्ञानिक विवेकशीलता, वस्तुसत्ता का सूक्ष्म बोध, अनुभूति की अतिरंजना और आरोपित विह्वलता की बेदी पर काव्य के मूल तत्व को बलिदान कर दिया गया है।'

भारतीय संस्कृति तथा दर्शन, जिसके संदर्भ को जीवन में उतारा गया है, में प्रकाश की कल्पना है; जड़ता, घुटन और संत्रास की नहीं। सारे सामयिक प्रहारों को सहकर उसका मूल स्वरूप आज भी वर्तमान है और हम उसी के प्रकाश में अपने सांस्कृतिक पुनर्जागरण का स्वप्न सँजोते तथा उसी की दुहाई देते रहते हैं। आधुनिक गीत विधा भी सामयिक अर्थार्थी प्रहारों द्वारा गढ़ी जा रही नवमूल्य परम्परा में उलझ सी गई है। अन्यथा काव्य-साधना स्वयं में एक योग है। महामहोपाध्याय ब्रम्हलीन पं० गोपीनाथ कविराज के अनुसार "जिस ओर देखें उसी ओर हम सौन्दर्य न देख सके, जिसको देखे उसी को प्यार न कर सकें तो साधना की सिद्धि नहीं होती।" ----- "योग तभी प्रतिष्ठित होता है जब कोई पर नहीं होता, कुछ भी कुत्सित नहीं रहता।" कविराज की उक्ति एक सन्देश है - एक प्रेरणा है। आज के गीतकारों का सहज दायित्व है कि गीत के कलेवर को इसमें आ रही विकृति से मुक्तकर उसमें वही सहज सौन्दर्य और सत्यानुभूति प्रतिष्ठित करने का प्रयास करें।

सच्चिदानन्द की विशेषता समझनी है तो यह समझना होगा कि जो उसे आन्तरिक रूप में स्वीकार करता है या भौतिक रूप में नकारता है वह भी उसकी परिधि के बाहर नहीं है। शाश्वत सत्यों को नकार कर नए सत्यों की प्रतिष्ठा करने वाला सत्य से अपने को दूर नहीं कर सकता। स्थापित मूल्यों से हटकर नए मूल्यों की खोज में भी चिद् की व्यवस्था बनी ही रहती है। अनुभूति के रागात्मक सुख को नकार कर बौद्धिक विकास में जिस सुख का दर्शन किया जाता है वह भी आनन्द की व्यवस्था से परे नहीं होता। अतः स्पष्ट है कि सच्चिदानन्द अपने स्वीकारने या नकारने वाले दोनों पक्षों को अपने में आत्मसात करने की क्षमता रखता है और इसी कारण उसे ब्रह्म का भी एक रूप माना गया है। उसी सच्चिदानन्द के हृदय (भाव) अथवा मस्तिष्क (विवेक) कृत विवेचनों ने साहित्य की अनेक विधाओं के रूप में अनेक शास्त्रों का रूप निर्धारण किया है।

. कला हो या विज्ञान, योग हो या ज्योतिष, छन्द हो या व्याकरण, मनोविज्ञान हो या समाजशास्त्र- सबमें इसी का रागात्मक या बौद्धिक विलास परिलक्षित होता है। काव्य में यही "रसो वैसः" का प्रतीक है तो व्याकरण में सर्वनाम के रूप में प्रतिष्ठित। कला में वह सौन्दर्य की लोकातीत अनुभूति के रूप में चित्रित है तो विज्ञान में असीम शून्य के रूप में प्रतिबिंबित। जब वह भावों के माध्यम से मनोहारी मूर्तिमत्ता प्राप्त करता है तो श्रेष्ठतम् काव्य या गीत कहा जाता है पर जब बुद्धि का विलास उसको अनुशासनबद्ध कर नियमबद्ध करता है तो उसे व्याकरण की संज्ञा दी जाती है बाह्य या भौतिक मूल्यों के आधार पर वही "रोटी का भूगोल" है और आन्तरिक या आध्यात्मिक दृष्टि से वही "सत्यं शिवं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुन्दरम्" का प्रतीक। बाह्य के लौकिक सत्य के रूप में वह दुख तथा मृत्यु का प्रतीक है : आन्तरिक तथा आध्यात्मिक सत्य के रूप में वही मुक्ति का प्रकाश बन जाता है। लौकिक ज्ञान के रूप में उसका स्वरूप अन्धे न्याय का नाटक है। आन्तरिक ज्ञान के रूप में वह ज्योतिष का नियामक गणित बनता है। लौकिक आनन्द के रूप में वह सौंदर्य का वासनात्मक प्रतीक या अर्थ और काम का प्रतिरूप है पर आन्तरिक या अध्यात्मिक दृष्टिकोण से तादात्म्य तथा अनुग्रह का स्वरूप या धर्म तथा मोक्ष का प्रतीक है। भारतीय चिंतकों ने इसी सत्य की अनुभूति 'धमार्धे काम मोक्षाणाम् मूलयुक्त कलेवरम्' कहकर व्यक्त की है। आधुनिक युग में भी अणु सिद्धान्त के प्रतिपादक महानतम् वैज्ञानिक एलवर्ट आइंसटीन ने जीवन पर्यन्त नास्तिक रहने के बाद अन्त में इसी अमूर्त सत्य को स्वीकार करते हुये लिखा है - "इस संसार की व्यवस्था और सम्पूर्ण विश्व की रागात्मक संश्लिष्टता में ईश्वर अपने को व्यक्त करता है। मैं मानता हूँ कि सम्पूर्ण प्रकृति में इश्वर की चेतना कार्य कर रही है विज्ञान के काम की नींव अब इसी तथ्य पर आधारित है कि यह संसार आकस्मिक रूप से यों ही उत्पन्न नहीं हो गया, बल्कि इसमें एक क्रम है, सार्थकता है, जिसे विज्ञान से समझा जा सकता है।"

स्पष्ट है कि हृदय की रागात्मक अनुभूति तथा विवेक बुद्धि का अनुभव दोनों को एक विशिष्ट अनुशासन में रखकर ही सच्चिदानन्द का ध्येय प्राप्त किया जा सकता है। कारण स्पष्ट है कि - भारतीय जनता सदा से धर्मप्राण रही है। धर्म का तिरस्कार करने वाले विम्ब-विधान तथा अनास्था एवं अविश्वास जगाने वाले भाव संप्रेषण इसे स्वीकार नहीं हो सकते। वर्तमान विसंगतियों, राजनैतिक उथल-पुथल, अनास्था एवं अविश्वास की भावना तथा सामाजिक वर्जनाओं में निहित मूल सत्य से रागात्मक सम्बन्ध स्थापित कर उसमें भी सौंदर्य की अनुभूति करना आज के गीतकार का धर्म होना चाहिए जिसमें वह पीड़ा तथा संत्रास को भी मधुर गीतों का रूप देकर उसे श्रोता तथा पाठक तक उसी सहजता तथा कोमलता से संप्रेषित कर सके जो उसे सच्चिदानन्द की रसानुभूति कराने में समर्थ हो।

पं० विन्ध्यबासिनी सिंह मेरे लिये प्रणम्य रहे हैं। स्तुत्य रहे हैं। दादा की पुस्तक 'मानस और ज्योतिष' के लोकार्पण के अवसर पर उनका सम्मान करके कानपुर स्वयं सम्मानित होगा। वे दीर्घायु हों। ऐसी कामना के साथ दादा को मेरे विनत प्रणाम अर्पित हैं।

किशन सरोज, (गीतकार)
३२, आजादपुरम्,
निकट हार्टमैन कालेज,
बरेली — २४३१२२

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विन्ध्यवासिनी सिंह

।। तुलसी का नारी के प्रति दृष्टिकोण ।।

भारतीय ज्योतिष तथा स्मृतियों में नारी समाज के लिये जो भाव व्यक्त हुये हैं उनकी समीक्षा तथा संत कवि द्वारा व्यक्त नारी के प्रति दृष्टिकोण का विवेचन दो प्रमुख कारणों से आवश्यक है। संत कवि पर नारी तथा शूद्र विरोध के आरोपों का खण्डन या तर्क सम्मत समाधान प्रस्तुत करने तथा उनके नारी चित्रण का ज्योतिष तथा स्मृतिकारों के आधार पर होना प्रमाणित करने की दृष्टि से यह समीक्षा तथा विश्लेषण आवश्यक हो गया है।

भारतीय ज्ञान की हर व्यक्त विधा में नारी समाज को सम्मान तथा श्रद्धा का जो स्थान मिला है वह विश्व के किसी साहित्य या धार्मिक ग्रंथों में नहीं पाया जा सकता। वेदो में देवमाता तथा आदित्यों की जननी, आगम शास्त्र में शक्ति रूप में पूज्य नारी सदा पुरूष के समतुल्य ही श्रद्धा का केन्द्र रही है। आध्यात्मिक ज्ञान राशि के प्रणेता तथा ऋतंभरा प्रज्ञा सम्पन्न ऋषियों ने उसे शक्ति तथा सत्ता के नियंत्रक के रूप में ही देखा है तथा उसके बिना वह्म के सगुण रूप को भी स्वीकार करने में असमर्थता व्यक्त की है। शक्ति के बिना शक्तिमान की कल्पना भी कहीं नहीं हुई है। दोनों को अभेद तथा एक रूप ही माना गया है। सृष्टि, स्थिति तथा संहार सभी में उसकी भूमिका समान ही कही गई है। शिव का अर्ध नारी नटीश्वर रूप हो, या ब्रह्म और माया की कल्पना, सांख्य का पुरूष, प्रकृति रूप हो, या जगत में स्त्री और पुरूष का स्वरूप, वही सृष्टि का कारक थी, है तथा सदा रहेगी। इसी मान्यता के आधार पर उसे अर्धांगिनी कहा गया है। गुण दोष मय जगत में शक्तिहीन शिव को शव रूप तथा शिवत्वहीन शक्ति को चण्डिका कहकर असंतुलन की विभीषिकता को ही व्यक्त करने का प्रयास किया गया है। भारतीय ज्योतिर्विज्ञान में नारी तथा पुरूष के परस्पर पति पत्नी रूप संबंधों के विवेचन के क्रम में मनीषी अचार्यों ने पुरूष की पत्रिका में पत्नी भाव को सप्तम भाव कहा है पर नारी पत्रिका में इस क्रम को वदलकर सप्तम से आयु तथा अष्टम भाव से पति का विचार करने का निर्देश दिया गया है जो वस्तुतः सामाजिक मान्यताओं तथा नैतिक संकेतों की पुष्टि के लिये ही है। क्योंकि भारतीय संस्कृति मर्यादा के अंग प्रदर्शन को उचित नहीं मानती।

नैतिकता के प्रतिपादक नीति शास्त्र तथा धर्माचरण की प्रतिपादक स्मृतियों में भी यही स्वर मिलते हैं। मनु ने मातृ शक्ति की प्रतीक माता को पिता से सौगुना गौरव प्रदान करने की वात कही है। मनुस्मृति के अध्याय द्वितीय श्लोक १४५ में वे कहते हैं **'सहस्रं तु पितृन्माता गौरवेणातिरिच्यते।'** अन्यत्र तीसरे अध्याय में वे कहते हैं कि अधिक कल्याण की कामना करने वाले पिता, भ्राता, पिता तथा देवर आदि को कन्या की पूजा कर उसे विभूषित करना चाहिये। क्योंकि जहाँ स्त्रियाँ पूजित होती हैं। वहीं देवता प्रसन्न होते हैं या रमण करते हैं। श्लोक इस प्रकार है-

पितृभिभ्रातृभिश्चैताः पतिभिर्देवरैस्तथा।
पूज्या भूषयितव्याश्च बहुकल्याणमीप्सुभिः।।
यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता।।

पर अन्यत्र जहाँ काम तथा कामासक्त की निन्दा की गई है उस प्रसंग में कामासक्त नारी रूप की निन्दा करते वे विद्वान और मूर्ख दोनों को सावधान करते हैं तथा हर स्तर के व्यक्ति को उसे काम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

और क्रोध के वश में कराने वाला कहते हैं-

अतोऽर्थान्नप्रमाद्यन्ति प्रमदासु विपश्चितः ।।
अविद्वांसमलं लोके, विद्वांसमपि वा पुनः ।
प्रमदा, ह्युत्पथं नतु काम क्रोध वशानुगम ।।

भारतीय ज्योतिष शास्त्र में स्त्री पुरूष के विविध संबंधों के प्रायः सभी रूपों का विवेचन विविध भावों के माध्यम से किया गया है। नारी के भगिनी, माता, पुत्री, जाया, अनुज बधू, साली, सलहज आदि प्रायः सभी रिश्ते या संभावित रूप किसी न किसी भाव से देखने तथा उनके रूप, गुण, स्वभावादि का चित्रण करने का प्रावधान है। भगिनी का विचार तृतीय भाव से, माता का चतुर्थ, पत्नी का एवं व्यक्ति के कामसंबंधों का सप्तम भाव से, अनुज बधू का नवम् भाव से तथा पुत्र बधुओं का एकादश भाव आदि से किये जाने का विधान है। संत कवि ने माता, कन्या, अनुजवधू आदि को यथेष्ट आदर दिया है तथा 'अनुज बधू भागिनी सुत नारी' की ओर कुदृष्टि को पाप की संज्ञा ही दी है। इनमें केवल सप्तम भाव को अरिष्ट भाव कहकर उसके माध्यम से आध्यात्मिक तथा लौकिक विभाजन की जो रेखा खींची गई है उसके विस्तृत विवचनों ने ही अनेक विवादों को जन्म दिया है। भारतीय आध्यात्मिक दृष्टिकोण के अनुसार उसमें कोई विसंगति न होने पर भी आज के भौतिक आकर्षण तथा दृष्टिकोण ने अर्थ का अनर्थ कर सप्तम में निहित विवाह संस्कार को भी साधारण राग या काम संबंध का रूप देकर नारी के समानाधिकार के दावे को भी राजनीतिक रंग देना आरम्भ कर दिया है। स्मृतियों में वर्णित विभिन्न संस्कार तथा भारतीय ज्योतिष द्वारा उनके उपयुक्त समय तथा आयोजन का उद्देश्य व्यक्ति को अपनी शक्ति और वृत्तियों को निर्दिष्ट सोद्देश्य मार्ग से संचालित करते हुये मोक्ष प्राप्ति की ओर उन्मुख करना ही था। उसमें विवाह शारीरिक आकर्षण या राग का विषय नहीं एक धार्मिक बन्धन था जिसका निष्ठापूर्वक निर्वाह एक बाध्यता थी। मनु ने धार्मिक बंधनों के निर्वाह को एक यज्ञ समझकर करने की बात कही है। सत्य भी है कि व्यक्ति का जीवन स्वयमेव एक यज्ञ है और हर भौतिक क्रिया कलाप में किसी न किसी आध्यात्मिक अनुभव की युक्ति का ही नियोजन धर्म ज्ञान के रूप में ज्ञान की हर विधा में प्रस्तुत किया गया है।

संत कवि ने अपने काव्य में आर्य धर्म तथा भारतीय ज्योतिष की मान्यताओं के अनुरूप ही बल दिया है तथा गीता के 'स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः' को मान्यता दी है, तथा नारी पात्रों के चित्रण में उसी का उपयोग किया है। भारतीय ज्योतिष जायाभाव को जिस भाव दृष्टि के अनुसार अरिष्ट भाव की संज्ञा दी है, स्मृतिकारों तथा भारतीय ऋषियों ने भी उसी भाव से काम संबंधों की प्रतीक स्त्री को भोग्या, प्रमदा, अनिष्टकारिणी तथा आग (कामग्नि) में घी का काम करने वाली आदि संदर्भ के अनुसार कहा है। इसके लिये अग्राह्य कहना एवं उनकी निन्दा करना एक पक्षीय निर्णय या स्वार्थ साधन के लिये सत्य को विकृत करने का प्रयास मात्र कहा जा सकता है। मनु ने ज्योतिष की भावना का ही समर्थन करते हुए कहा है कि देवता हो या मनुष्य सभी के सुखों का मूल तपस्या ही है-

तपो मूलं इदं सर्वं दैव मानुषकं सुखम् ।
तपोमध्यं बुधैः प्रोक्तं तपोऽन्तं वेद दर्शिभिः।।
ब्राह्मणस्य तपो ज्ञानं तपो क्षत्रस्य रक्षणम्।
वैश्यस्य तु तपो वार्ता तपः शूद्रस्य सेवनम्।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इसी प्रकार काम सन्दर्भ में नारी को स्वभाव के अनुसार पुरूष को दूषित करने वाला कहते हुये वे ज्ञानी पुरूषों को भी युवती सम्मोहन से वचने की सम्मति देते हैं क्योंकि उनके अनुसार प्रमदा नारी इस लोक में विद्वान तथा मूर्ख दोनों को काम क्रोध के वश करती है। गीता में भी इसे ही संगात्सजायते कामः 'कामत्क्रोधोऽभिजायते आदि कहा है। संत कवि के काव्य में नारी निन्दा के सभी प्रसंग किसी न किसी काम प्रसंग में ही आये हैं। अरण्य काण्ड में नारद के प्रश्न कि श्री राम ने उन्हें विवाह क्यों करने नहीं दिया के उत्तर में संत कवि ने भगवान राम से उत्तर में निम्न बातें कहलायी हैं जो प्रायः मनु के उपर्युक्त वचनों के भावानुवाद ही हैं-

काम क्रोध लोभादि मद प्रबल मोह कै धारि।
तिन्ह महँ अतिदारुन दुखद माया रूपी नारि।।
अवगुन मूल सूलप्रद प्रमदा सब दुख खानि।
ताते कीन्ह निवारन मुनि मैं यह जिस जानि।।

काम प्रसंगों का विशद् वर्णन न कर प्रवुद्ध पाठकों से आशा है कि वे उसे संत कवि के काव्य में स्वतः देख लें। फिर भी एक प्रसंग जो संत कवि पर सर्वाधिक नारी और शूद्र विरोध के आरोप से जुड़ा है, की ओर संक्षिप्त संकेत कर यह प्रसंग समाप्त करना श्रेयस्कर होगा। सुंदर कांड के सेतु वंध प्रसंग में राम द्वारा सिंधु विनय के वाद उस पर क्रोध से सर संधान करने तथा सिंधु द्वारा प्रकट होकर, क्षमा याचना के रूप में वक्तव्य 'ढोल गवाँर सूद्र पसु नारी। सकल ताड़ना के अधिकारी।।' को विवाद का विषय बनाकर 'मानस' तथा मनुस्मृति की जाने कितनी प्रतियाँ फाड़ी जा चुकी हैं तथा जन भावना भड़काई जा चुकी है। भरतीय संस्कृति को ही मनुवादी कहकर उसको मिटाने का एक संगठित प्रयास आरम्भ हो गया है। इसका विरोध नहीं मात्र औचित्य ही पाठकों तथा प्रवुद्ध चिन्तकों के सम्मुख विचारार्थ प्रस्तुत करना ही यहाँ इष्ट है। इस सिंधु वचन या आत्मरक्षार्थ दिये गये वक्तव्य का औचित्य पूर्ण तथ्य या वक्तव्य को साथ-साथ देखकर ही उचित या अनुचित कहा जा सकता है। अंशात्मक प्रस्तुति के आधार पर तर्कों को एक पक्षीय, अज्ञानी या स्वार्थी प्रस्तुति ही कहना उचित होगा। अतः पूर्ण वक्तव्य देखें-

सभय सिंधु गहि पद प्रभु केरे। छमहु नाथ सब अवगुन मेरे।।
गगन समीर अनल जल धरनी। इन्ह कइ नाथ सहज जड़ करनी।।
तब प्रेरित मायाँ उपजाये। सृष्टि हेतु सब ग्रंथनि गाये।।
प्रभु आयसु जेहि कहँ जस अहई। सो तेहि भाँति रहें सुख लहई।
प्रभु भल कीन्ह मोहि सिख दीन्ही। मरजादा पुनि तुम्हरी कीन्ही।।
ढोल गवाँर सूद्र पसु नारी। सकल ताड़ना के अधिकारी।।
प्रभु प्रताप मैं जाब सुखाई। उतरिहि कटक न मोरि बड़ाई।
प्रभु अग्या अपेल श्रुति गाई। करौं सो बेगि जो तुम्हहि सोहाई।।

उपरोक्त आठ चौपाइयों में दिया गया वक्तव्य सिन्धु की अपनी जड़ता का तार्किक प्रस्तुतिकरण और फिर भी अपनी मर्यादा की रक्षा की प्रार्थना के रूप में है। वह स्पष्ट शब्दों में कहता है कि आकाश, वायु, अग्नि, जल तथा पृथ्वी वास्तव में तो जड़ तत्व ही हैं जो तुम्हारी माया द्वारा प्रदत्त चेतना के आधार पर सृष्टि या विभिन्न स्वरूपों में शरीर के अंग बनते हैं। तुम्हारी आज्ञा या इच्छा के अनुरूप सब

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अपनी जड़ता में भी अलग-अलग गुणों से युक्त हो जिस रूप में जहाँ सुख पूर्वक रहते हैं मैं भी सुख पूर्वक पड़ा था आपकी प्रार्थना तो नहीं सुन सका पर जब आपके काल रूप चेतना वाहक वाण मेरा अस्तित्व मिटाने को उद्यत हुये तो उपस्थित हुआ हूँ। प्रभू ने मेरी नहीं अपनी उस मर्यादा की रक्षा की है जिसके अनुसार चेतना का संचार आपकी इच्छा पर ही निर्भर माना गया है। (यहाँ निर्गुण के सगुण होने की प्रक्रिया 'एकोऽहं बहुस्यामि' की ओर संकेत है)। चेतना का उद्भव चेतना द्वारा जड़ में प्रवेश की प्रक्रिया (प्रताड़ना) के विविध रूपों में ही होता है। ढोल में निहित आकाश तत्व से 'शब्द' की उत्पत्ति थाप पड़ने पर होती है। जड़ या गँवार वायु जो कभी आँधी की तरह चलता है। तथा कभी रूका रहता या जड़ हो जाता है, तो पंखा झलने या उससे प्रताड़ित होने पर ही चेतन होता है। या अपना बोध कराता है। पशु रूप जल का प्रतीक मैं भी प्रताड़ना पाकर उपस्थित हुआ हूँ तथा अन्यत्र भी प्रताड़ित होने पर सक्रिय होता हूँ। जला देने की क्षमता के कारण अस्पृश्य कहा जाने वाला (शूद्र) अग्नि भी प्रसुप्त होने पर पंखा झलने या उसके द्वारा प्रताड़ित होने पर ही सक्रिय होती है। जगन्माता कही गयी यह पृथ्वी भी हल से प्रताड़ित होने पर ही अपनी उर्वरा शक्ति प्रदर्शित करती है। हर तत्व व्यक्ति द्वारा विभिन्न रूपों में इन्द्रियों के माध्यम से ही अनुभूत होता है शब्द कान से, वायु स्पर्श से, जल जिह्वा से उस रूप में, पृथ्वी की गंध नाक से, अग्नि के प्रकाश का अनुभव आँखों से होने के कारण ही उन्हें ज्ञानेन्द्रिय या चेतना का वाहक कहा गया है। सारे अनुभव इंद्रियों के प्रताड़ित होने पर ही होते हैं। अतः यहाँ ताड़ना का अर्थ मार-पीट या दण्ड व्यवस्था लगाना जड़ता का ही द्योतक कहा जायेगा। आगे की दो तथा अन्य पंक्तियों में अपनी विवशता तथा प्रभू आज्ञा को वरीयता देकर मर्यादा की रक्षा समुद्र पर पुल बनाकर करने की बात के रूप में कही गई है तथा प्रताड़ना के खिंचे नाशक काल तत्व द्वारा उत्तरी तट पर बसने वालों के नाश का आग्रह किया गया है जो अंत में प्रभु द्वारा स्वीकार कर लिया जाता है।

कथा प्रसंग से तथा आध्यात्मिक संकेतों से स्वतः स्पष्ट है कि 'ढोल, गवाँर, शूद्र, पशु तथा नारी' का सांकेतिक प्रयोग 'गगन समीर अनल जल धरनी' से क्रमानुसार ही संबद्ध है और उसका दुरूपयोग स्वार्थ और सत्ता की राजनीति द्वारा समाज में विषमता तथा विद्वेश की भावना फैलाने की भावना मात्र से होता रहा है तथा हो रहा है। संत कवि ने अपने काव्य में अपने ज्योतिष ज्ञान के कारण अपना संतुलन सदा बनाये रखा है जिसे समझना तथा समझाना हमारा और आपका कर्तव्य है। उनकी गर्व समन्वयी भावना का स्रोत बोधायन का सिद्धान्त या विशिष्टाद्वैतवादी दर्शन नहीं भारतीय ज्योतिष शास्त्र का विवादहीन दर्शन ही है जिसमें निगमागम तथा नाना पुराणों की प्रतिस्पर्धात्मक कथाओं के आधार पर सभी देव स्वरूपों तथा तंत्र मंत्रात्मक उपायों को समान रूप से मान्यता मिली है। उनके लिये वैष्णव, गाणपत्य, शाक्त, शैव तथा सौर सम्प्रदाय की ब्रह्म के रूप विषयी मान्यतायें ही नहीं प्रत्युत सभी लौकिक तथा आंचलिक मान्यतायें भी समान आदर की अधिकारी हैं। उन्होंने साधुमत और लोकमत दोनों का आदर करते हुये सभी विचारों का सँग्रह ही अपनी विचित्र बनाकर लिखी गई कथा में प्रस्तुत किया है। उसमें शंबूक वध तथा रजक प्रसंग ही नहीं छोड़े गये हैं। सीता बनवास को भी स्थान नहीं मिला है। लव-कुश जन्म भी अयोध्या में दिखाया गया है तथा त्रेता में भी राम राज्य में सतयुग की कल्पना की गई है। 'दुइसुत सुन्दर सीताँ जाये। लव कुश वेद पुरानन्ह गाये ।।' तथा 'त्रेता भई कृत युग कै करनी' का उनका चित्रण विवादों से हीन उस जगत की कल्पना करता है जहाँ न कोई दरिद्र हो न दीन, परस्पर प्रीति करते लोग श्रुति या वैदिक धर्म का पालन करते तथा शुभ गति प्राप्त करते हों। यही उनकी शुभकामना है।

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वी. बी. सिंह

"शक्ति मंत्र" तथा "ॐ"

भारतीय दर्शन का इतिहास सर्वशक्तिमान परब्रह्म की विविध रूपों में कल्पना का इतिहास कहा जा सकता है। वैदिक युग से पौराणिक काल तक की विविध कल्पनाओं में हमें एक ही सत्ता का विभिन्न नामों से दर्शन कराया गया है। तंत्र साधना के समानान्तर इतिहास में भी अनेकता में इसी एकता के दर्शन होते हैं। सौर, गाणपत्य, शैव, वैष्णव तथा शाक्त आदि सभी सम्प्रदायों में परम सत्ता तथा शक्ति का जो स्वरूप स्पष्ट होता है उसमें सूक्ष्म भेद भले ही हो पर स्थूल कल्पना का आधार प्रायः एक सा दिखाई पड़ता है। प्रभुसत्ता अथवा शक्ति जिसमें भी परम गति की कल्पना की गई है मुख्यतया सृष्टि, संहार, तिरोधान तथा अनुग्रह के पंचगुणों से सम्पन्न ही चित्रित हुये हैं। वरीयता का क्रम भी प्रायः समान सिद्धान्तों पर आधारित है। सृष्टि, स्थिति तथा संहार की त्रयी के त्रिगुणात्मक स्वरूप तथा क्रिया में भी अद्भुत समानता है। फिर भी यह विकास क्रम विचारणीय अवश्य हैं।

साधकों और चिन्तकों ने कहीं ब्रह्म को प्रधानता दी है तो कहीं शक्ति को। कहीं चिद्रुपा शक्ति के बिना ब्रह्म निष्क्रिय तत्व के रूप में है तो कहीं प्रकाश रूप में शक्ति के विमर्श रूप में प्रतिष्ठित। फिर भी एक बात स्पष्ट है कि कालान्तर में वैदिक चिन्तन धारा का सर्वशक्तिमान पुरुष अद्वैत ब्रह्म तंत्र-साहित्य में बहुचर्चित शक्ति की स्वतंत्र सत्ता स्वीकार कर अपनी एकरूपता सुरक्षित रखने के अर्धनारीश्वर बन गया है। परवर्ती विकसित तंत्र साहित्य में शिव और शक्ति की समरसता का चित्रण तथा उनकी अभिन्नता का प्रतिपादन भी वस्तुतः इसी तथ्य की ओर संकेत करता है।

विद्वानों के मतानुसार शक्ति साधना का इतिहास वैदिक साहित्य के समान ही प्राचीन है। शक्ति उपासना के सूत्र ऋग्वेद से प्रारम्भ होकर प्रायः ब्राह्मण और आरण्यक काल में भी विद्यमान पाये गये हैं। औपनिषदिक काल में इस उपासना का स्वरूप विभिन्न देवियों के रूप में सामने आता है। पौराणिक साहित्य में इस उपासना का प्रखर रूप दिखाई पड़ता है। ब्रह्मवैवर्त पुराण में मातृ-स्वरूप के पितृ-रूप पर वरीयता का स्पष्ट दर्शन होता है।

जगन्माता च प्रकृतिः पुरूषश्च जगत्पिता ।।
गरीयसीति जगताँ माता शत गुणैः पितुः ।।

मारकण्डेय पुराण में देवी के जिस रूप की प्रतिष्ठा तथा गुणगान किया गया है वह आज का सर्वाधिक प्रचलित रूप है। मारकण्डेय पुराण के इसी अंश को सप्तशती के रुप में स्वतंत्र ग्रंथ की संज्ञा देकर प्रकाशित किया गया है।

विद्वानों के मतानुसार प्रत्येक इतिहास किसी न किसी संघर्ष का इतिहास है। प्रश्न उठता है कि क्या शक्ति की प्रभुसत्ता की प्रतिष्ठा के इस क्रमिक विकास में किसी संघर्ष का इतिहास निहित है ? क्या यह मातृ-प्रधान तथा पितृ-प्रधान समाज के संघर्ष का इतिहास है ? क्या इस विकास की प्रक्रिया ने वैदिक काल से सर्वमान्य प्रणव सूक्त 'ॐ' के मूल्य में भी संदेह व्यक्त किया है। प्रस्तुत लेख इसी विचार का

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एक मूल्याँकन मात्र है।

ऋग्वैदिककाल से स्थापित ॐ का एकाक्षर स्वरूप आज भी उतना ही मान्य है जितना तात्कालिक साहित्य में रहा होगा। उसकी सर्वभौम सत्ता आज भी उतने ही उच्च पद पर प्रतिष्ठित है जितनी वैदिक काल में थी। ऋग्वेद में ओंकार एकाक्षर, त्वरित तथा उदात्त माना गया है। यजुर्वेद में ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत तीन स्वरों वाले ओंकार का उल्लेख हुआ है। सामवेद में दीर्घेदात्त एकाक्षर तथा अथर्ववेद में संक्षिप्तोदात्त एकाक्षर ओंकार का चित्रण हुआ है। गीता में इसी ओंकार को 'गिरामस्म्येकमक्षरम्' की संज्ञा दी गई है। ॐ रहित मंत्र आज भी उतना ही प्रभावशून्य माना जाता है जितना शक्तिहीन शव रूप 'शिव'। कथा प्रसिद्ध है कि ब्रह्मा ने आनन्दवन में तप किया तथा समाधिस्थ हुये। एक हजार युग व्यतीत होने पर सप्त पातालों का भेदन कर एक दिव्य ज्योति प्रकट हुई। ब्रह्मा के कंठ से अथ् तथा ओंकार शब्द पहले निकले थे और इसी कारण माँगलिक माने जाते हैं। कहा जाता है कि नेत्र खुलने पर ब्रह्मा ने देखा कि ऋग्वेद से लिया गया अकार सृष्टि पालक तथा नारायण रूप सत्व सम्पन्न होकर अँधकार से आगे प्रतिष्ठित है। उसके पश्चात् रजोगुण 'ॐ' यजुर्वेद से उत्पन्न नीरव ध्वान्त सांकेतिक रूप में स्थित है, तथा तमोरूप में सामवेद से लय के कारक रूप में लिया गया 'म' कार रुद्र रूप से प्रतिष्ठित है। इन्हीं तीन अक्षरों से ॐ बना है जो सगुण तथा निर्गुण है आख्या सहित नाद का सदन है तथा परमानन्द मूर्ति स्वरूप है। परात्पर है। कारणों का कारण, जगत का सृष्टिकर्ता तथा नाद बिन्दु स्वरूप है। ओंकार की रस गति का निरूपण करते हुये छन्दोग्य उपनिषद् में ॐ की उद्भावना की प्रक्रिया बताई गई है। कहा गया है कि भूतों का रस पृथ्वी है। पृथ्वी का रस जल है, जल का रस औषधियाँ है, औषधियों का रस पुरुष है, पुरुष का रस वाणी है। वाणी का रस ऋक् अर्थात् ऋचायें है। ऋक् का रस साम तथा साम का रस उद्गीत है। वहीं सर्वश्रेष्ठ उद्गीत ओंकार है। परम का प्रतीक है। अन्यत्र अकार, उकार तथा मकान से समन्वित ॐ को ब्रह्मा, विष्णु तथा रुद्र की त्रयी का प्रतीक माना गया है। मनु ने कहा है :-

" अकारञ्युकारंच मकारंच प्रजापतिः ।।
वेदत्रयात् निरदुहत् भूर्भुव. स्वरितीति च ।।"

देवी भागवत में भी सृष्टि, स्थिति तथा संहार की देव त्रयी के रूप में ओंकार का यशगान किया गया है। अब प्रश्न उठता है कि सर्वगुण युक्त त्रयी बोधक, सार्थक नाद ब्रह्म स्वरूप, एकाक्षर ओंकार के रहते हुये शक्ति-साहित्य में शक्ति मंत्र के रूप में समानार्थक बीज मंत्र "ऐं, ह्रीं, क्लीं" क्यों रचा गया ? क्या मंत्रकार को ॐ की पूर्णता में सँदेह था ? या ओंकार का पुरुष स्वरूप उसे ग्राह्य नहीं था ?

दुर्गा-सप्तशती के प्रथम अध्याय में ही ब्रह्मा द्वारा शक्ति के जिस 'योगनिद्रा' स्वरूप की स्तुति का चित्रण मिलता है उसमें तीन स्वरों वाले ओंकार के स्थान पर साढ़े तीन मात्रा वाले शक्ति बीज की प्रतिष्ठा का संकेत उपलब्ध होता है। अपनी स्तुति में ब्रह्मा जिस महामाया का आवाहन करते हैं वह विचारणीय है।

त्वं स्वाह त्वं स्वधा त्वंहि वषट्कार स्वरात्मिका।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुधा त्वमक्षरे नित्ये त्रिधामात्रात्मिक स्थिता।।
अर्धमात्रास्थिता नित्या यानुच्चार्या विशेषतः।।।

गीता प्रेस द्वारा प्रकाशित दुर्गासप्तशती में इसका अर्थ इस प्रकार दिया गया है। "स्वर भी तुम्हारे ही स्वरूप हैं तुम्हीं जीवनदायिनी सुधा हो। नित्य अक्षर प्रणव में अकार, उकार, मकान इन तीन मात्राओं के रूप में तुम्हीं स्थित हो तथा इन तीन मात्राओं के अतिरिक्त जो विन्दुरूपा नित्य अर्धमात्रा है, जिसका विशेष रूप से उच्चारण नहीं किया जा सकता, वह भी तुम्ही हो।" पर प्रस्तुत अर्थ युक्तिसंगत प्रतीत नहीं होता है। मेरे विचार से यहाँ स्वरात्मक, नित्य, त्रिधा मात्रात्मक इस स्वरूप को अर्धमात्रा से संयुक्त कल्पित किया गया है। स्पष्टतया यह, अ, ऊ युक्त ओंकार के दो स्वरों के स्थान पर मातृ स्वर 'ई' युक्त 'आ', 'ई', 'ऊ' की प्रतिष्ठा का संकेत है। प्लुताक्षर 'म' को भी अनुस्वार रूप अर्द्धमात्रा में वदलकर प्रलय के कारक रूप रुद्र को नाद के प्रतीक विन्दु 'सदाशिव' रूप में रूपान्तरित कर दिया गया है। इस सांकेतिक परितर्वन से शक्ति तथा शिव की अभिन्नता या समरसता का वोध तो अवश्य होता है पर ओंकार के प्रतिष्ठित रूप के प्रति उपेक्षा की भावना सहज ही लक्षित होती है।

आचार्यों ने मत्रों का अर्थ आमंत्रण किया है। "मनन त्राण धर्माणों मंत्रा" के अनुसार आमंत्रण का अभिप्राय धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष लिया गया है। धर्म का दूसरा नाम कर्तव्य है। अतः जो शक्ति कर्तव्याकर्तव्य का विचार करते हुये अर्थ तथा काम की पूर्ति करते हुए मोक्ष की ओर अग्रसर करती है उसे ही मंत्र के नाम से पुकारा गया है। मंत्र की तात्विक परिभाषा में मंत्रों को वहुर्मुखी होने पर वृत्ति तथा अन्तर्मुखी होने पर शक्ति की संज्ञा दी गई है।

वहिर्मुखस्य मंत्रस्य वृत्तयो या प्रकीर्तिताः।
ता ए दान्तर मुखस्यास्य शक्तियः परिकीर्तितः।।

मंत्र शक्ति की शक्तिमत्ता उद्घोष करते समय "देवाधीनं जगत्सर्व, मंत्राधीनश्च देवता" तक कह दिया है। गोस्वामी तुलसीदास ने इसी भावना का समर्थन रामचरित मानस में करते हुए कहा है :-

मंत्र परम लघु जासु वस विधि हहिर सुर सर्व।
महा मत्त गजराज कँहु वस कर अंकुश खर्व ।।

पर साथ ही सतर्क करते हुए कहा गया है कि मंत्र के व्याप्ति का ज्ञान न रखने वाले के द्वारा की हुई अर्चना आदि निष्फल होती है।

"देवस्य मंत्र रूपस्य मंत्रव्याप्ति मजानताम्।
कृतार्चनादिकं सर्व, व्यर्थ भवति शम्भवि।।

सप्तशती के कीलक स्त्रोत में भी "ज्ञात्वा प्रारम्भ कुर्वीत न कुर्वाणो विनश्यति" कहकर वस्तुतः इसी भावना की पुष्टि की गयी प्रतीत होती है। कहने का तात्पर्य यह कि सप्तशतीकार का मंतव्य देवी के वास्तविक स्वरूप की उपासना ही नहीं उनके मंत्र स्वरूप के ज्ञान से भी है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बीज मंत्रों का परिचय देते समय तंत्राचार्यों ने बताया है कि जिनके आश्रम से साधक में उर्ध्वगामिनी शक्ति की उत्पत्ति हो वे बीज कहलाते हैं। नित्य तन्त्रकार के अनुसार बीजमन्त्र तीन वर्णों से नौ वर्णों तक के बताये गये है। 'वर्णात्रयं समारंभ्य नववर्णा विधि बीजकाः' लिखकर इसी की पुष्टि की गयी है। स्वरों को बीच तथा व्यंजनों को योनि कहा गया है। इस विचार से भी त्रिमात्रिक अनुस्वार युक्त शक्ति बीज में कोई त्रुटि नहीं दिखाई पड़ती। परवर्ती तन्त्राचार्यों ने प्रायः सभी स्वर व्यंजनादिक पर अनुस्वार को आरोपित कर उन्हें किसी न किसी तत्व, देवता या शक्ति के बीच रूप में कल्पित कर दिया है। उदाहरणार्थ हं, यं, रं, वं, पं आदि को क्रमशः आकाशबीज, वायुबीज, अग्निबीज तथा मनोबीज आदि रूप में कल्पित किया गया है। पर वहाँ भी ऐं को सरस्वती बीज 'ह्रीं' को महालक्ष्मी या मायाबीज तथा 'क्लीं' को कालीबीज ही माना गया है। अतः यह निर्विवाद रूप से सिद्ध हो जाता है कि 'ऐं' ह्रीं, क्लीं' का वर्णत्रयी बीज" अ, उ, म' का समानार्थ सृष्टि, स्थिति तथा संहार शक्ति का ही बीज है।

मन्त्रों के बीज तथा सिद्ध दो भेद भी बताए गए हैं। यह निर्विवाद सत्य है कि "ॐ" तथा 'ऐं, ह्रीं, क्लीं' दोनों का व्यवहार बीच या प्रणव के रूप में किया गया है। एक पुरुष सूक्त स्वयंसिद्ध प्रणव है तो दूसरा शक्ति बीज। फिर यह बात समझ में नहीं आती कि दो बीज मन्त्र एक साथ किस प्रकार प्रयुक्त किए जा सकते हैं? 'ॐ' के समर्थक आचार्य बहुधा नवाक्षर शक्ति मन्त्र के साथ 'ॐ' के प्रयोग के लिए यह तर्क देते हैं कि 'ॐ' प्रणव है और उसे शक्ति मन्त्र के साथ लगाना अनुचित नहीं है। उनका तर्क है कि नवार्ण मन्त्र के साथ प्रणव का एकाक्षर गिनना उपयुक्त नहीं है। पर यदि षटाक्षर मन्त्र 'ॐ नमः शिवाय' अष्टाक्षर मंत्र 'ॐ नमो नारायणाय' तथा दादशाक्षर मन्त्र 'ॐ नमो भगवतेवासुदेवाय' आदि में ॐ को गणना में सम्मिलित किया गया है तो नवाक्षर शक्ति मन्त्र के साथ व्यवहृत होने पर 'ॐ' एकाक्षर की गणना क्यों नहीं होगी? इसका समुचित उत्तर उनके पास उपलब्ध नहीं है।

यह तो ज्ञात नहीं कि शक्ति बीज मंत्र के रूप में ऐं, ह्रीं क्लीं की रचना कब हुई और उसके प्रयोग की वास्तविक विधि क्या थी। तथापि मन्त्र के नाम नवार्ण तथा उसके नवरात्र में जप के जो संकेत परम्परावश उपलब्ध हैं उनसे यह स्पष्ट होता है कि कालविशेष से शक्ति मन्त्र के नवाक्षर, नवदुर्गा स्वरुप और नवरात्रों में विशेष सम्बन्ध अवश्य है।

नौ (९) की संख्या अंक ज्योतिष के अनुसार भी शक्ति के परिचायक ग्रह मंगल के साथ सम्बद्ध मानी जाती है। मंगल के देवता रुद्र माने गए हैं। दुर्गा शक्ति का रुद्र या शिव के साथ अभिन्न सम्बन्ध शक्ति और शिव के रूप में तंत्र साहित्य में अनेक प्रकार से प्रतिपादित किया गया है। नौ का गणित शास्त्र द्वारा प्रतिपादित महत्व प्रायः सर्वविदित है। इस अंक की शक्ति तथा व्यापकता का ज्ञान तंत्र शास्त्रों में विशेषता इंगित शरीर के नवद्वार, नवनिधि आदि से भी स्पष्ट होता। नौ का हर गुणफल नौ ही बनता है। वेदों की मन्त्र संख्या १९४०४ का अंक योग भी नौ ही बनता। गुरु स्वरों की संख्या भी नौ है। युगों की वर्ष संख्या का अंक योग भी नौ ही होता है। नवग्रह, अष्टादश पुराण, सत्ताइस नक्षत्र तथा पूज्यों के लिए प्रयुक्त संख्या १०८ का अंक योग भी नौ ही है। प्रत्यक्षतः नवदुर्गा, नवरात्र, नवार्ण मन्त्र तथा पंचदश यंत्र के नववर्ग जिनमें देवी मंत्र की प्रतिष्ठा की परम्परा प्रचलित है आदि किसी प्रयोजन विशेष से रचे गए प्रतीत होते हैं। शक्ति के मंत्राक्षरों की संख्या में नौ का होना 'ऐं, ह्रीं, क्लीं चामुण्डायै

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विच्चे' के नवाक्षर रूप में स्वतः सिद्ध हो जाता है।

गीता प्रेस द्वारा प्रकाशित दुर्गा सप्तशती के अन्त में रूद्रयामल के गौरीतन्त्र से संकलित स्तोत्र में मंत्र को ॐ से समन्वित करके उद्धृत किया गया है। मेरे विचार से यह उचित नहीं प्रतीत होता। स्वतः मंत्र जो सम्पुटमंत्र के रूप में लिखा गया है, के अन्त भाग में शक्ति मन्त्र की पुनरावृत्ति के समय मंत्र में ॐ का योग नहीं दिखाया गया है। कुँजिका स्तोत्रकार ने बीज रूपा तथा मन्त्र रूपिणी शक्ति के परिचयात्मक नमन के स्त्रोत में भी ॐ को सम्मिलित नहीं किया गया है। वे बीज तथा मन्त्र का परिचय स्तोत्र में इस प्रकार कराते हैं :-

ऐंकारी सृष्टिरूपायै ह्रींकारी प्रतिपालिका।
क्लींकारी कामरूपपिण्यैं बीजरूपे नमोस्तुते।
चामुण्डा चण्ड घाती च यै कारी वर दायनी।
विच्चे चाभयदा नित्यं नमस्ते मंत्र रूपिणी।।

अतः यह सिद्ध हो जाता है कि मन्त्र स्रष्टा ऋषि का उद्देश्य शक्ति मन्त्र में ॐ की प्रतिष्ठा करना नहीं था।

कुँजिका स्तोत्रकार ने सांकेतिक रूप में स्तोत्र के अगले पदों में घां, घीं, घूँ, वां, वीं वूँ, कां, कीं, कूँ, शां, शीं, शूँ, पां, पीं, पूँ आदि में वार-वार नित्य अनुस्वार युक्त आ ई ऊ की मात्राओं का प्रयोग कर वस्तुतः सप्तशती के प्रथामाध्याय में ब्रह्मा द्वारा योगमाया की स्तुति में प्रयुक्त 'स्वरात्मिका' 'त्रिधामात्रात्मिका स्थिता' तथा 'अर्धमात्रा स्थिता नित्या' के सांकेतिक, प्रयुक्त अर्थ की ओर अर्थपूर्ण संकेत किया है। परवर्ती तंत्राचार्यों ने या तो इस विषय पर कोई प्रकाश नहीं डाला अथवा वे भारतीय समन्वय प्रवृत्ति के अनुरूप ही संयुक्त वीच मंत्रों का सृजन करने लगे। "ॐ दुँ दुर्गाय नमः" "ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नमः" आदि मन्त्र इसी परम्परा के द्योतक हैं। दस महाविद्याओं में इसी प्रकार के ओंकार युक्त भी एकाक्षर बीजों से युक्त मंत्रों के दर्शन होते हैं।

इन पंक्तियों के लेखक ने अनेक प्रतिष्ठित तंत्रशास्त्र के मर्मज्ञों एवं विद्वानों यथा महामहोपाध्याय पं० गोपीनाथ कविराज तथा मुमक्ष आश्रम के पूज्यपाद स्वामी शुकदेवानन्द आदि के समक्ष अपनी जिज्ञासा प्रकट की थी। पर शंका का समुचित समाधान नहीं मिल सका। इन पंक्तियों में उसी जिज्ञासा की पुनरावृत्ति है। विद्वान पाठकों से अनुरोध है कि वे लेखक के सीमित ज्ञान को क्षमा करते हुए जिज्ञासा के शान्तार्थ अपने बहुमूल्य तर्क देकर लेखक को अभारी बनावेंगे। लेखक के मतानुसार शक्ति मन्त्र के साथ 'ॐ' का प्रयोग वांछनीय नहीं है तथा इष्ट प्राप्ति में बाधक हो सकता है। ❑

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वी. बी. सिंह

नाट्य रंगमंच

उद्भव तथा विकास

भारतीय विचार धारा सदा से दार्शनिक रही है। साहित्य हो या संस्कृति-सभी के विकास क्रम में इसी दार्शनिक विचार धारा के दर्शन होते हैं। सभी का व्यक्तीकरण आत्मा तथा परमात्मा की कल्पना तथा उसके विवेचन का इतिहास सा लगता है। भारतीय साहित्य केवल जीवन की अनुकृति मात्र नहीं "रसो वै सः" का प्रतीक है। यही कारण है भारत में रस को ही काव्य की आत्मा माना गया है। रसानुभूति की क्षमता की साहित्य की श्रेष्ठता की कसौटी रही है। पर रस कभी दार्शनिक मतवाद का अनुचर नहीं बनाया गया। सः की भाँति रस की भी स्वतंत्र सत्ता रही है। वस्तु सदा स्थूल आवरण मात्र मानी गयी है।

भारतीय नाट्य शास्त्र तथा रंगमंच के विकास क्रम में भी इसी मूल भावना के दर्शन होते हैं। "काव्येषु नाटकम् रम्यम्" कहने वाले संस्कृत साहित्यकारों ने अपने दार्शनिक दृष्टिकोण के कारण ही नाटक को पंचम वेद मानकर उसकी श्रेष्ठता पर प्रकाश डाला है। आदि नाट्य शास्त्रकार भरतमुनि के अनुसार योग, कर्म, शास्त्र शिल्प तथा अन्य विविध प्रकार के शास्त्रों में कोई ऐसा नहीं माना गया जिसके दर्शन नाट्य शास्त्र में न होते हों।

"न स योगो नं तत्कर्म नाट्येऽस्मिन यन्न दृष्यते।
सर्व शास्त्राणि शिल्पानि कर्माणि विविधानि च ।।"

धार्मिक आख्यानों के अनुसार स्वंय ब्रह्मा ने देवताओं के मनोरंजन के लिय नाटक की रचना की थी। तथा चारों वेदों से संगृहीत तत्वों का उसमें समावेश किया। ऋग्वेद से कथोपकथन, सामवेद से संगीत, यजुर्वेद से अभिनय तथा अथर्ववेद से रस का समावेश किया गया, तथा लोकरंजन की दृष्टि को ध्यान में रखकर सभी वर्णों को इसके अध्ययन तथा अभिनय का अधिकार दिया गया।

मैक्समूलर तथा लेवी आदि पश्चात्य शिक्षाशास्त्री भारतीय नाट्यशास्त्र का विकास, पाश्चात्य विकास के समान, धार्मिक कृत्यों से कल्पित करते हैं। डा० रिजवे के मतानुसार इसका आधार वीर पूजा की भावना रही है। पर कीथ ने ग्रीक तथा रोम के नाटकों से भिन्न रूप में भारतीय नाटकों के स्वतंत्र विकास का प्रतिपादित किया है। भाषा शास्त्रियों की दृष्टि में आरम्भिक नाटक आदिम मनुष्यों की प्रसन्नता का सूचक रहा होगा। प्रसन्नता से नाच उठना उसका पहला स्वरूप रहा होगा। फिर अवसर विशेष पर सामूहिक नृत्य आदि का समावेश तथा किसी असाधारण घटना या व्यक्तित्व के अनुकरण की प्रवृत्ति विकसित हुई होगी। इसके वाद वार्ताओं तथा संलापों की अनुकृति, मुद्रा, रमणीयता आदि को ध्यान में रखकर उसमें कलात्मकता का समावेश किया गया होगा। अर्थात् वहुतत्व में एकत्व की भावना से कलात्मकता की सृष्टि तथा नाटक का विकास हुआ होगा। स्वाभाविक सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक विश्लेषण की प्रवृत्ति वहुत विकसित अवस्था में ही सम्भव हुई होगी।

भारतीय नाट्य शास्त्र में नाटक को रूपक के दस भेदों- नाटक, प्रहसन, भाण, व्यायोग, वीथी, आदि में एक भेद के रूप में बताया गया है। "रूपारौयात्तु रूपकम्" के अनुसार एक व्यक्ति का दूसरे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में आरोप ही इसकी मुख्य भावना है। नाटक शब्द नट् धातु से वना है। और "अवस्थानुकृति नाट्यम" से स्पष्ट है कि विभिन्न वर्गों की विभिन्न अवस्थाओं की अनुकृति को ही नाटक या नाट्य की संज्ञा दी जाती है।

नाटक के विकास के साथ साथ ही रंगमंच के विकास का इतिहास भी भारतीय नाट्य शास्त्र में मिलता है। भरत मुनि ने व्यसन, विकृष्ट तथा चतुरस नामक तीन प्रकार के रंगमचों की चर्चा की है। व्यस्र रंगमंच त्रिभुजाकार होते थे तथा निम्न कोटि के माने जाते थे। विकृष्ट रंगमंच को श्रेष्ठ प्रेक्षागृह कहा जाता था। इसकी लम्वाई तथा चौड़ाई में दो एक का अनुपात होता था। इसके तीन भाग होते थे। (१) नेपथ्य (२) रंगशीर्ष तथा (३) रंगपीठ। आगे का भाग जहाँ नृत्यादि तथा सूत्रधार द्वारा सूचना देने की व्यवस्था होती थी रंगपीठ कहा गया है। उसके पीछे रंग विरंगे पर्दों से सज्जित भाग को रंगशीर्ष तथा सबसे पीछे वाले भाग को नेपथ्य कहते थे। रंगमंच के साथ साथ अभिनय के भी प्रकारों का पूर्ण निर्देश नाट्य शास्त्र में मिलता है।

प्राच्य तथा पश्चात्य प्रायः सभी विद्वान स्पष्टतः एकमत से यह स्वीकार करते हैं कि नाट्य शास्त्रकार भरतमुनि गौतम से पूर्व हुये थे। नाट्याशास्त्र में वर्णित त्रिपुर-दाह तथा अमृतमंथन के अभिनय के प्रसंग से भारत में नाटकों की प्राचीनता स्वयमेव स्पष्ट हो जाती है। रामायण में "वधूनाटक संघैश्च संयुक्ता सर्वतः पुरीम्" से प्राचीन भारत में नाट्य संघों का अस्तित्व स्वतः सिद्ध हो जाता है। हरवंशपुराण तथा पाणिनि के अष्टाध्यायी में भी तत्कालीन तथा पूर्व काल के अनेक नाटककारों का उल्लेख मिलता है। विनयपटिक तथा जैन कल्प सूत्रों में भी नाटक सम्वन्धी उल्लेख प्राप्त हैं। सरगूजा स्टेट में प्राप्त प्रेक्षागृह के अवशेष भारतीय नाट्य रंगमंच की प्राचीनतम विकसित परम्परा का पुष्ट प्रमाण प्रस्तुत करते हैं।

भारतीय आचार्यों ने "वस्तु नेता रसस्तेषां भेदकः" लिखकर नाटकों में केवल वस्तु (कथा वस्तु), नेता (नायक) तथा रस केवल तीन की ही प्रधानता मानी है। पर पश्चात्य आचार्य नाटक के छः तत्वों का वर्णन करते हैं। पाश्चात्य मत के अनुसार वस्तु मात्र, कथोपकथन, देशकाल, उद्देश्य तथा शैली सबका पृथक अस्तित्व तथा महत्व है। पर भारतीय नाट्यशास्त्र की विशद विवेचनाओं से स्पष्ट है कि भारतीय आचार्यों ने सभी छः तत्वों का समाहार, पूर्व वर्णित तीन तत्वों में ही कर लिया है।

भारतीय नाट्य शास्त्र में कथा वस्तु की ही वस्तु को संज्ञा दी गई है। प्रधानता की दृष्टि से कथावस्तु के आधिकारिक तथा प्रासंगिक नामक दो भेद किये गये हैं। प्रभाव तथा आधिकारिक कथा के साथ साथ चलने के विचार से प्रासंगिक कथा को पताका तथा प्रकरी नामक दो उप-भेदों में विभाजित किया गया है। शैली के आधार पर कथा के प्रख्यात (ऐतिहासिक तथा पौराणिक), उत्पात्य (कल्पित) तथा मिश्र नामक तीन भेद वताये गये हैं। प्रत्येक कथा में प्रारम्भ, प्रयत्न, प्राप्त्याशा, नियताप्ति तथा फलागत आदि पाँच अवस्थायें वतायी गई हैं। पश्चात्य नाटककार कथा को व्याख्या प्रारम्भ विकास, चरमसीमा, झुकाव तथा फल प्राप्ति आदि ६ भागों में बाँटते हैं। विवेचन से स्पष्ट होता है कि सूत्रधार द्वारा सूचना की पद्धति को हम भारतीय नाटकों का व्याख्या अंग कह सकते हैं। कथानक को मुख्य फल प्राप्ति की ओर उन्मुख करने वाले चमत्कारपूर्ण अंश को अर्थ प्रकृति कहा गया है। दश रूपक के टीकाकार "धनिक" ने अर्थ प्रकृतियों को "प्रयोजन सिद्धि हेतवः" की संज्ञा दी है। अर्थ प्रकृतियों के वीज, विन्दु, पताका, प्रकरी तथा कार्य नामक पाँच भेद वताये गये हैं। अवस्थाओं तथा अर्थ प्रकृतियों का मेल कराने के लिये मुख, प्रतिमुख, गर्भ, विमर्श तथा निर्वहण नामक पाँच संविधयां वतायी गई हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अभिनय की दृष्टि से कथानक को दृष्य तथा सूच्य नामक दो भेदों में बाँटा गया है। रंगमंच पर अभिनीत तथा प्रदर्शित अंश दृष्य तथा सूचना मात्र से स्पष्ट अंश की सूच्य कथानक की संज्ञा दी गई है। सूचनार्थ प्रयोग में लाये जाने वाले साधनों को दृष्टिगत रखकर सूच्य कथानक के पुनः विष्कभंक प्रवेशक, चूलिका, अंकमुख तथा अंकावतार नामक पाँच प्रकार बताये गये हैं। स्पष्टतः पाश्चात्य साहित्य में वर्णित अनेक भेद इन सूक्ष्य भेदों के अर्न्तगत आ जाते हैं।

नाटक के प्रधान पात्र को भारतीय नाट्य शास्त्र में नेता की संज्ञा दी गई ळै। स्वभाव भेद से नायक के चार भेद बताये गये हैं। धीरोदात्त, धीरललित, धीरप्रशान्त तथा धीरोद्धत नायक अलग अलग स्वभाव का चित्रण करते हैं। नायक के साथ ही सहनायक, नायिका, विदूषक तथा कुमार आदि भेद भी पात्रों की चरित्रगत विशेषताओं तथा नाटक में उनके प्रभाव को दृष्टि में रखकर किये गये हैं। पाश्चात्य मत से केवल एक अन्तर इस प्रकार के वर्गीकरण में दिखाई पड़ता है।

पाश्चात्य आचार्यों ने जहाँ प्रधान स्त्री पात्र को नायिका की संज्ञा दी है वहाँ भारतीय साहित्य में केवल नायक की प्रिया को ही नायिका माना गया है। नाटक में तीसरा मुख्य अंग भारतीय आचार्यों ने 'रस' माना है। रस का परिपाक कराने के लिये ही तथा रसानुभूति को दृष्टि में रखकर ही उन्होंने वृत्ति तथा अभिनय को इसी के अर्न्तगत रखा है। भाषा तथा शैली को पात्रानुरुप रखने का निर्देश भी इसी ध्येय की पुष्टि करता है। पश्चात्य आचार्य इसी अंश को तीन भागों में विभाजित कर सबका अलग अस्तित्व बताते हैं तथा उसके विभिन्न अंगों पर प्रकाश डालते दिखाई देते हैं। इसका मुख्य कारण उनकी वस्तु प्रधान नीति है।

भौतिक तथा आध्यात्मिक दृष्टिकोणों का अन्तर यहीं स्पष्ट हो जाता है। भारतीय नाट्य तत्वों में अभिनय तथा रंगमंच का पृथक अस्तित्व न रखे जाने पर भी इन तत्वों के सर्वमान्य महत्व की अवहेलना नहीं की गई है। भारतीय आचार्यों का ध्यान नाटक की अभिनयात्मकता पर सदा रहा है। भरतमुनि ने अभिनय के आंगिक, वाचिक, आहार्य तथा सात्विक नामक चार भेद गिनाये हैं।

"आंगिको वाचिकश्चैव आहार्यः सात्विकस्तथा।
ज्ञेयस्त्वभिनयो विप्राश्चतुर्धा परिकल्पितः ।"

आंगिक अभिनय के भी शारीरिक, मुखज, तथा चेष्टाकृत नामक तीन भेद किये गये हैं। वाचिक अभिनय में पात्रों को विभिन्न पात्रों के लिए निर्धारित सम्बोधन का निर्देश दिया गया है। आहार्य अभिनय पात्रों की निर्धारित वेषभूषा तथा रूपरंग का बोध कराने के लिए तथा सात्विक अभिनय भाव प्रधान अवस्थाओं की अनुकृति के लिए कहा गया है। सात्विक अभिनय के द्वारा ही स्वेद, प्रकम्प, रोमांच, स्तम्भ आदि भावों के व्यक्तीकरण का निर्देश दिया गया है।

रंगमंच के विकसित तात्कालिक वर्णन से स्पष्ट है कि भारतीय रंगमंच योरोपीय नाट्य रंगमचों की तरह खुले स्थान पर नहीं होते थे और न भारत में स्थान स्थान पर जाकर नाटक को पूर्ण करने की परम्परा भरत मुनि के समय तक शेष रह गयी थी। नाट्य शास्त्र में रंगमंच को प्रेक्षागृह कहा गया है। प्रेक्षागृह के व्यस्र, विकृष्ट तथा चतुरस्र नामक जो तीन भेद तथा अन्य उपभेद गिनाये गये हैं उनसे स्पष्ट है भारतीय लक्षण ग्रन्थों की रचना के पहले ही भारतीय नाट्य साहित्य तथा रंगमंच बड़ी विकसित अवस्था प्राप्त कर चुका था। नाट्य शास्त्रकार ने "वृत्तयो नाट्य मातरः" लिखकर नाटक में भारती, कौशिकी, सात्वती तथा आरभटी नामक चार वृत्तियों का अलग अलग महत्व बताया है तथा वृत्तियों के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अनुसार नाटक में पात्रों के समावेश तथा रस परिपाक का औचित्य बताकर भारतीय नाट्य साहित्य की पूर्णता स्पष्टतः प्रतिपादित की है। प्रायः सभी संस्कृत नाटककारों ने नाट्य शास्त्र में वर्णित शास्त्रीय नियमों का पालन किया है। परन्तु परवर्ती काल में क्षेत्रीय भाषाओं में साहित्य की वह विकसित परम्परा दिखाई नहीं पड़ती। और किसी भारतीय भाषा के साहित्य में नाटकों के उस विकसित रूप के दर्शन नहीं होते। यह मानना पड़ता है कि वर्तमान काल में हमारा नाट्य साहित्य पश्चात्य विकास से अधिक प्रभावित है।

चरित्र चित्रण तथा कथोपकथन का महत्व भी प्राचीन भारतीय नाट्य शास्त्रकारों ने स्पष्टतया स्वीकार किया है। उपन्यासकार विश्लेषणात्म के ढंग से चरित्र पर प्रकाश डालकर उसे विकसित करते हैं पर नाटककार का क्षेत्र सीमित होने के कारण वह केवल कथापेकथन, स्वगत् भाषण तथा कार्य कलापों द्वारा ही पात्र की चरित्रगत विशेषताओं को चित्रित करता है। भारतीय नाट्यशास्त्रकार ने भी कथोपकथन को चरित्र के विकास का साधन मानकर कथोपकथन को नियत श्राव्य, सर्वश्राव्य तथा अश्रव्य नामक तीन भेदों में विभाजित किया है। अश्राव्य कथन ही स्वगत् भाषणों के रूप में रखा गया है। यद्यपि कालान्तर में इनको अव्यावहारिक मानकर भरसक नाटकों से दूर करने का प्रयास हुआ है तथापि पात्र के आन्तरिक भावों के विकास के लिये आधुनिकतम पाश्चात्य नाटककार भी इसका महत्व स्वीकार करते हैं।

प्रमुख पाश्चात्य विचारक अरस्तू के मतानुसार, नाटक में वस्तु सर्वाधिक प्रभावशाली अंग है। वस्तु ही चरित्र को प्रभावित करती है। उसके अनुसार चरित्र मानव जीवन का निष्क्रिय गुण है, पर वस्तु मानव जीवन का सक्रिय तथा गतिशील रूप है। आचार्य ने चित्र का उदाहरण देकर यह समझाया है कि जिस प्रकार चित्र की रेखाओं के बिना उसमें रंग नहीं भरा जा सकता उसी प्रकार सुन्दर कथा वस्तु के अभाव में चरित्र निर्जीव हो जाते हैं। उनके कथनानुसार कथा वस्तु में कौतूहलवर्धक, चमत्कार पूर्ण घटनाओं का नियोजन आवश्यक है। आकस्मिक प्रभाव तथा वैपम्य को अरस्तू ने अधिक महत्व दिया है। चरित्र, देशकाल, भाषा तथा गीत की उपादेयता पर भी प्रख्यात विचारक ने मत व्यक्त किया है तथा उनके महत्व पर प्रकाश डाला है। यद्यपि यह स्पष्ट है कि भारत की ही भांति पश्चिम में और विशेपतया ग्रीस और रोम में भी नाटकों तथा रंगमंच का इतिहास काफी प्राचीन है तथा उसमें भारतीय नाट्यशास्त्र की भाँति कोई शास्त्रीय विधान तथा विकास का लक्षण ग्रन्थ प्राप्त नहीं होता। फिर भी स्थान, काल तथा कार्य की एकता (Unity of place, time & action) का जो सिद्धान्त विकसित हुआ उसकी उपेक्षा आधुनिकतम साहित्यकार भी नहीं कर सकते।

पाश्चात्य विद्वान ग्रीक नाटकों का जन्म भी भारतीय नाट्य साहित्य की तरह धार्मिक कृत्यों से ही कल्पित करते हैं। कहा जाता है कि वर्षारंभ काल में डायोनिसस की प्रसन्नता के लिए गाये हुए गीतों से ट्रेजेडी (दुखान्त), तथा धार्मिक कृत्यों के अवसर गाये जाने वाले स्वाँग युक्त गीतों से कौमेडी (सुखान्त) नाटकों का जन्म हुआ है। जो भी हो भारत की भाँति योरोपीय महाद्वीप में नाटक धार्मिक अभिजात वर्ग में प्रियता नहीं प्राप्त कर सका। इसका मूल कारण था आदि ग्रीक तथा रोम के नाटकों में विलासिता तथा क्रूरता के दृश्यों की बहुलता तथा दासों द्वारा अभिनय की प्रणाली। अभिजातवर्ग से उचित प्रोत्साहन के अभाव में योरोपीय साहित्य में नाटकों का वह सम्यक विकास क्रम नहीं मिलता जिसका दर्शन हमें भारतीय संस्कृत साहित्य में मिलता है। रोम तथा यूनान में नाटकों में मास्क के प्रयोग की प्रणाली के कारण, तथा नाट्य गृहों के खुले स्थान में होने की परम्परा के कारण अभिनय में भाव भंगिमा आदि का उचित विकास भी नहीं हो पाया था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पाश्चात्य नाट्य साहित्य का आधुनिक रूप शेक्सपियर के समय में स्पष्ट होना आरम्भ हुआ। यद्यपि वहां भी पहले चमत्कार पूर्ण तथा नीति प्रधान नाटकों से ही साहित्य का श्रीगणेश हुआ था तथापि अभिनव प्राचीनता वादी युग में रूढ़ियों की अवहेलना आरम्भ हो गयी थी। शेक्सपियर ने सर्वप्रथम संकलन त्रय की नव प्रतिमा प्रतिष्ठित की। टेम्पेस्ट के अतिरिक्त अपने अन्य किसी भी नाटक में उसने प्राचीन अनुबन्धों का निर्वाह नहीं किया उसने मृत्यु आदि के वर्जित दृश्यों को भी रंगमंच पर ला पटका। यद्यपि मिल्टन के "सैम्सन एग्नास्टिस" में पुरानी परम्परा का निर्वाह दिखाई पड़ता है तथापि शेक्सपियर ने जिस स्वतन्त्रतावादी युग का श्री गणेश किया उसमें विशेषतया काल तथा स्थल संकलन की उपेक्षा करके कार्य की एकता ही को अधिक महत्व दिया। शेक्सपियर के बाद के प्रायः सभी नाटककार केवल भाषा के परिमार्जन तथा विषयों को आधुनिकता का आवरण पहनाने में ही व्यस्त दिखाई पड़ते हैं।

शेक्सपियर के बाद पाश्चात्य नाट्य साहित्य पर सर्वाधिक प्रभाव विक्टर ह्यूगो तथा कोरनील का दिखाई पड़ता है। इन लेखकों ने मानव जीवन की वास्तविकता की ओर नाटक को झुकाया तथा अनावश्यक स्वगत भाषणों का त्याग कर स्वाभाविकता लाने की प्रेरणा दी। आधुनिक युग में योरोपीय नाट्य साहित्य पर यथार्थवादी विचारधारा के प्रतिनिध नार्वेजियन नाटककार इब्सन के समस्यामूलक नाटकों का सर्वाधिक प्रभाव दिखाई पड़ता है। इब्सन ने नित्य प्रति की समस्याओं को लेकर मनोविश्लेषणात्मक पद्धति से मनुष्य के आन्तरिक तथा वाह्य घात प्रतिघातों का सुन्दर चित्रण किया है। बर्नार्ड शॉ, गाल्सवर्दी तथा बेल्जियन नाटककार मेटरलिंक ने भी अपनी मौलिक रचनाओं से भी वर्तमान नाट्य जगत को काफी प्रभावित किया है। मेटरलिंक का अध्यात्मवादी दृष्टिकोण यथार्थवाद की प्रतिक्रिया सा लगता है। आज अध्यात्मवादी विचार धारा के साथ प्रतीकवादी दृष्टिकोण भी स्पष्ट होता आ रहा है और ऐसा लगता है पाश्चात्य नाट्य साहित्य फिर प्राचीन युग की ओर मोड़ ले रहा है।

हिन्दी साहित्य में नाटकों का अभाव मुख्यतया गद्य साहित्य के अभाव के कारण प्रायः भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के युग तक बना रहा। पूर्व भारतेन्दु युग में प्रायः नाटक नामधारी मुख्यतया पद्यात्मक संस्कृत नाटकों के दो चार अनुवाद ही रचना क्रम में आते हैं। भारतेन्द्र हरिश्चन्द्र ने हिन्दी साहित्य में सर्व प्रथम आदर्श से यथार्थ की ओर धूमकर सामाजिक चित्रण का मौलिक प्रयत्न किया। उनके समय में तत्कालीन राजनीतिक तथा सामाजिक स्थिति तथा समस्याओं का जो भी चित्रण हुआ उनका उद्देश्य प्रचार मात्र मालूम पड़ता है। फिर भीरंगमंच के विकास के जो सराहनीय प्रयत्न किये गए उनकी अवहेलना नहीं की जा सकती। भारतेन्दु के बाद का समय संक्रान्ति काल कहा जा सकता है। इस काल में पारसी थियेट्रिकल कम्पनियों की स्थापना हुई। तथा केवल उनके रंगमंचों के अनुकूल अभिनेय नाटक लिखने वाले नाटककार ही हुए। भारतीय नाट्य परम्परा से हटकर पाश्चात्य नाट्य शैली की ओर झुकाव का संकेत इस काल में मिलता है। इस काल में बंगला लेखकों मुख्तया द्विजेन्द्र लाल राय तथा कवीन्द्र रवीन्द्र के नाटकों का अनुवाद ही किया गया।

जय शंकर प्रसाद के साथ हिन्दी नाट्य साहित्य में एक नए युग का श्री गणेश हुआ। प्रसाद जी ने भावुकता, दार्शनिक गाम्भीर्य तथा साहित्य का संगम तो अवश्य उपस्थित किया पर उनके नाटक भाषा की दुरूहता तथा रंगमंच के अनुकूल न होने के कारण केवल पाठ्य मात्र कहे जा सकते है। नागरी प्रचारिणी सभा के तत्वाधान में उनके नाटक यद्यपि सफलतापूर्वक दो एक बार रंगमंच पर प्रस्तुत अवश्य किए गए पर वे सर्व साधारण की रूचि के अनुकूल नहीं हो सके।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रसादोत्तर काल में हिन्दी नाट्य साहित्य पर पाश्चात्य नाटककारों में मुख्यतया इब्सन, गाल्सवर्दी तथा वर्नार्ड शा का प्रभाव स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। लक्ष्मीनारायण मिश्र ने मुख्यतया जिन समस्या मूलक नाटकों का आरम्भ किया उनमें इब्सन का स्पष्ट प्रभाव दिखाई पड़ता है। गोविन्द वल्लभ पन्त, सुदर्शन, उदयशंकर भट्ट तथा सेठ गोविन्द दास आदि सभी में पाश्चात्य प्रभाव किसी न किसी रूप में लक्षित होते हैं।

जहाँ तक रंगमंच के विकास का प्रश्न है आधुनिक उपकरणों के विकास के साथ साथ रंगमंच का विकास भी समय के साथ होता रहा है। आज का रंगमंच विद्युत उपकरणों से युक्त होकर प्राकृतिक दृश्यों को चित्रित करने की क्षमता भी रखता है। सिनेमा के विकास ने यद्यपि नाट्य साहित्य की ओर जन रूचि को वहुत कुछ प्रभावित किया है तथापि उससे रंगमंच की क्षमता वढ़ी ही है। युग के प्रभाव तथा एकांकी नाटकों के विकास में यद्यपि नाट्य रंगमंच के विकास में अधिकाधिक योगदान दिया है तथापि सिनेमा की लोकप्रियता ने नाटकों की प्रगति को प्रायः निश्चल वना दिया है। यह सत्य है कि अभिनय, रंगमंच तथा कला के विकास की दृष्टि से सिनेमा नाट्य रंगमंच से अलग नहीं किया जा सकता तथापि प्रवृत्ति भेद के कारण उसका पृथक विकसित इतिहास तथा अस्तित्व स्वीकार करना ही पड़ता है। सिनेमा के प्रति जन साधारण की वढ़ती हुई रुचि, सिने जगत को प्राप्त आधुनिकतम उपकरण तथा साधनों के उपयोग के कारण नाट्य रंगमंच का विकास थम सा गया है। फिर भी कला की साधना में रत लोगों के लिए निराशा का कोई कारण दिखाई नहीं पड़ता। क्योंकि वर्तमान सिने जगत के प्रायः सभी सफल अभिनेता रंगमंच की ही देन है। यह भारतीय रंगमंच के लिए गौरव का विषय हैं।

नाटक साहित्य के सगुण रूप का चित्रण है। सगुणोपासक भक्त जिस प्रकार नाम रूपधारी ईश्वर के माध्यम से निर्गुण के दार्शनिक तत्व का दर्शन कराता है उसी प्रकार नाटककार साहित्य के रम्य सौन्दर्य का विकसित रूप रंगमंच पर प्रस्तुत कर "रसो वै सः" की प्रामाणिकता सिद्ध कर देता है। नाटक में प्रस्तुत नृत्य संगीत तथा अभिनय की मधुरत्रिवेणी में स्नान कर रसानुभूति का जो आनन्द मिलता है वही वह्मानन्द का सहोदर कहा गया है। प्राचीन तथा अर्वाचीन, प्राच्य तथा पाश्चात्य मान्यताओं के समन्वय से विकसित जिस युग का श्रीगणेश पिछले दशक से हुआ है उसे हम आधुनिक नाट्य साहित्य का विकसिततम रूप कह सकते हैं। आज के साहित्य समीक्षकों ने अपनी सुन्दर मनोवैज्ञानिक समालोचनाओं द्वारा जो मान निर्धारित कर दिये हैं उनकी उपेक्षा नहीं की जा सकती। पाठ्य तथा अभिनेय नाटकों का अन्तर अव अधिक स्पष्ट हो गया है।

नाटक दृष्य काव्य है। इसी धारणा की पुष्टि स्वरूप उसके अभिनेय अंग की प्रधानता अव पहले की अपेक्षा अधिक स्पष्ट हो गई है। रंगमंच की उपयोगिता की दृष्टि से अव संक्षिप्त, प्रवाह युक्त तथा सोद्देश्य कथानक तथा उपयुक्त एवं संक्षिप्त कथापेकथन अव अच्छे नाटकों की कसौटी वन गये हैं। चरित्र चित्रण अव मनोवैज्ञानिक तथा स्वाभाविक होना अनिवार्य समझा जाता है।

स्थान, काल तथा कार्य की उपयुक्तता का निर्णय अव नाटक की अभिनयात्मकता पर आधारित है। क्रमिक विकास तथा दोष परिहार की जो प्रवृत्ति पिछले दशक की रचनाओं में दृष्टिगोचर होती है उसके आधार पर हम कह सकते हैं कि साहित्य के इस अंग विशेष का भविष्य आशाप्रद है। आशा है हमारा साहित्य सर्वगुण सम्पन्न ऐसे अभिनयात्मक नाटकों से शीघ्र ही परिपुष्ट हो उठेगा। ❑

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संस्कृति साधकः डॉ० विवेकी राय

❑ डॉ० अनिल कुमार आंजनेय

एक अटूट देहात में न जाने किसका यह विवेक था किपिता स्वर्गीय श्री शिवपाल राय के स्मृति चिन्ह एकमात्र पुत्र का नाम रखा गया - विवेकी। 'यथा नाम तथा गुण' की साक्षात प्रतिमा विवेकी जी सचमुच विवेक की मूर्ति हैं।

डाक्टर विवेकी राय का नाम लेते ही भारतीय संस्कृति की एक जगमगाती मूर्ति सामने खड़ी हो जाती है। मनसा-वाचा कर्मणा वे भारतीय संस्कृति के साक्षात् रूप हैं, ऐसा रूप नहीं, जिसके तेज से आंख मिलाने का साहस न हो। ऐसा रूप नहीं जिसकी ओर देखने से आंखें चौंधिया जाती हैं। सुदर्शन-सौम्य रूप है यह। ऐसा रूप जो सहज है, स्वाभाविक है। न मिश्रण न आडम्बर, न प्रपंच, न प्रदर्शन। आसन-असन-वसन में सर्वत्र निर्मल विवेक की छाप। मिताचार। 'रहनि ठवनि-बोलनि' सुसंस्कृत, सुरुचिपूर्ण, मधुर मोहन। यह ओढ़ा हुआ आरोपित रूप नहीं है। मुखौटा डॉ० साहब की प्रकृति के विरुद्ध है। अन्तर्बाह्य एक। भीतर आन, बाहर आन, आनविरुद्ध है। वे संस्कृति निष्ठ, आध्यात्मिक और आस्थावान पुरूष हैं।

मध्यम कद-काठी का स्वास्थ्य, सुगठित शरीर। सुन्दर नाक-नक्श। गेहुवा रंग। बाई भौं के ऊपर, ललाट पर डिठौना की तरह का आकर्षक काला तिल। माथे पर छोटे-छोटे पर 'जवा कुसुम' से चिकनाए और संवरे-काढ़े गंगा जमुनी बाल। सुचि, स्निग्ध सौम्य मुखमण्डल। नाक के नीचे कुछ उभरती सी, पर संकेत मात्र की ही, कटी-छटी बारीक मूंछ। हंसमुख चेहरा। निश्छल वाणी, निर्मल व्यवहार, शुद्ध-बुद्ध विचार, सामाजिक चेतना से उद्बुद्ध हृदय। वेष-भूषा सादा खादी का धवल परिधान-धोती-कुर्ता-कौशेय चादर। जाड़ा हुआ तो सदरी कुर्ते के नीचे भरबहिया स्वेटर और आवश्यकतानुरूप सदरी के स्थान पर बन्द गले का कोट और प्रातः सांय माथे पर कनटोप भी। पैरों में काले रंग का पम्प जूता, 'जलसा' का ही जलसा। पढ़ते-लिखते समय आंखों पर काले रंग का चश्मा।

डाक्टर साहब को सादगी पसन्द है। लेकिन इस पसन्द में न कहीं दाग है, न दगा है। सहजता-सरलता-ऋजूता का अपना एक संस्कार है। एक सात्विक भाव, एक शील और एक मर्यादा है। इस सादगी में सांस्कृतिक स्मृद्धि के दर्शन होंगे। इसके पीछे न तो कार्पण्य है और न तो दीनता-हीनता की ग्रन्थि ही। इस सादगी में भी एक रोब, एक रुतवा और एक दबदबा है, और है आन-बान की छवि। सादगी भी वह जिसे देखकर बड़े-वड़े ठटइल भी सिहाने लगें। सब कुछ शोभन, शालीन, स्वच्छ और धप-धप, चम-चम सादगी में भी एक सुन्दरता-सुरूपता-प्रेम का आकर्षण। सत्यं-शिवं-सुन्दरम् की एक छवि।

निर्मल आचार-विचार के वे पक्षधर हैं। कलुष का लवलेश भी उन्हें सह्य नहीं। घाल-मेल से वे परहेज करने वाले और विदक उठने वाले व्यक्ति हैं। सर्वत्र स्वच्छता के वे आग्रही हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यदि उनसे कोई पूछे कि सब रोगों की एक दवा क्या है? तो वे 'नींबू' का नाम लेंगे। एक उपचार 'नींबू'। एक सेवनीय 'नींबू। नींबू उन्हें रास आता है। नींबू प्रिय है।

पानी वाले हैं। उनमें एक आब है। पानी की तरह ही वे शीतल प्रसन्न प्रवाही, और गतिमय हैं। पानी का पर्याय 'जीवन' उन्हीं की सन्धि में सार्थक लगता है। जीवन विश्वासी होने के कारण पानी के आग्रही हैं। पानी का भी पानी रखने वाले हैं। वे पानी-पानी हो जाने वाले और पानी-पानी कर देने वाले एक सहृदय वन्धु हैं। प्रिय पेय यदि पूंछे तो वे छूटते ही 'पानी' का नाम लेंगे और विहंस कर कहेंगे-

'रहिमन पानी राखिए, विन पानी सव सून।
पानी गए न ऊवरे, मोती-मानुस-चून ।।'

व्यवस्था प्रिय हैं वे। अव्यवस्थित व्यक्ति को भी उनके यहां जाकर या उनके साथ रहकर व्यवस्थित-अनुशासित होना होगा। सामंजस्य का स्वभाव है उनका। ताल-मेल बैठाकर निभा लेंगे। हंसकर निकल-निफड़ जाएंगे। लेकिन व्यवस्था में व्यक्तिक्रम उन्हें सह्य नहीं। यहां वे समझौता कर ही नहीं पाएंगे। लाख अव्यवस्था हो लेकिन वहां भी वे अपनी एक व्यवस्था बना लेंगे। व्यवस्था उनकी इतनी चुस्त-दुरुस्त कि उन्हें साधन का अभाव कभी खला ही नहीं। साधन कभी उनके अखाड़े आया ही नहीं। साधन का रोना वे नहीं रोते और अपने सीमित साधन में भी अपनी व्यवस्था से साधन-समृद्ध-सम्पन्न बने रहते हैं।

डाक्टर राय निरन्तर साधना-रत रहने वाले कृती पुरूष हैं। निरन्तर सिरजन समर्पित। साहित्य-साधना अनवरत-अविश्राम चलती रहती है। 'नान्यः पन्था विद्यतेऽयनान।' ज्ञान यज्ञ को अपने विवेक के साकल्य से सुरभित करते रहने वाले साहित्य-होता हैं वे। उनके मन में एक साध है और उस साध के लिए अपनी साधना का सम्वल लेकर अप्रतिहत-अकुण्ठ अपने गन्तव्य की ओर आगे बढ़ते रहते हैं। साधन नहीं है, एकाकी हैं, निर्जन मार्ग है, विरोध है, निस्संग हैं तो क्या हुआ? न वे भीत होते हैं, न हतप्रभ और न कातर-क्लान्त। अभंग उत्साह लेकर अकुतोभय-निर्भ्रान्त अपना मार्ग बनाते आगे बढ़ते जाते हैं।

डा० राय के पास एक विशेष गुण है, "विवेक" विवेकपूर्ण लेखन, विवेकपूर्ण आचार-विचार, विवेकपूर्ण व्यवहार, विवेकपूर्ण मैत्री और विवेकपूर्ण उदासीनता। वे न तो बोझ बनना चाहते हैं और न तो वोझ ढोना चाहते हैं। जहां मैत्री वोझ बनी, वहां वे विवेकपूर्वक उदासीन हो गए। सहज-स्वाभाविक होना उन्हें प्रिय है। प्रीतिकर व्यापार पार लगता ही नहीं।

वे विनोदी हैं। खिलखिलाकर हंसने वाले हैं। सदा हँसमुख, खुशदिल और प्रसन्न मिलेंगे। खुशमिजाजी के उनके कुछ खास फिकरे और लटके हैं। मौज मस्ती में "जय बुंदेलखण्ड" का फिकरा कसते स्वागत करते और अपनत्व प्रकट करते उमगे-उमड़े मिलेंगे। उनकी वात-वात में मनोरंजन और विनोद का फौव्वारा फूटता रहता है, पर मर्यादित और शिष्ट। वे लिहाड़ी लेने वाले नहीं, परम विनोदी, रसिक, सरस और सहृदय व्यक्ति हैं। उनकी यह उच्छल और मौजी प्रकृति उन्हीं तक सीमित नहीं है,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बल्कि परिवार और पड़ोस में भी छलक पड़ी है और सम्पर्क में आने वाले मित्रगण भी उससे वंचित नहीं हैं। मौज, मस्ती और उछाह को व्यक्त करने का उनका एक खास, अपना लहजा है। यह लहजा जहां कहीं मिले, समझिए यह विवेकी राय स्कूल है। कवि जी (विवेकी राय अपने क्षेत्र में "कवि जी" और "मास्टर साहब" नाम से विशेष ख्यात हैं) जब काम के बोझ से खलिहर होते हैं तो मन, बदलाव-बहलाव के लिए वे कुछ विशिष्ट रस के लोगों के साथ चुसुकी-चासनी लेते मिलेंगे। पर परेता हमेशा मास्टर साहब के सधे हाथ में ही रहता है, जिससे वे चढ़ती चंग को कभी टाना तो कभी ढिल्ली देते मिलेंगे। उनकी मित्र मण्डली सुबुध है। एक से एक उदात्त, स्नेहशील, सहृदय बन्धु और समशील प्रबुध साहित्यकारों का उनका अपना परिकर है। उनकी प्रिय मित्र मण्डली उन्हें लेखन स्फूर्त्त करती रहती है। डाक्टर राय को एक अद्भुत योग सिद्ध है। वे भीड़-भाड़ में रहकर भी तत्काल अन्तर्मुख, आत्मकेन्द्रित एवं एकाग्र हो जाने वाले व्यक्ति हैं।

प्रकृतितः वे सभाभीरु हैं। भीड़-भाड़ के आदमी नहीं हैं। वे तमाशा नहीं बनते। तमाशाई हैं। स्वयं नियम के प्रति निष्ठावान् है। लेकिन अति से सदा बरकते हैं, अतिवादी जो नहीं हैं वे। अति-आग्रह हठवादिता है। कठहुज्जती और हठी वे नहीं हैं। बिना चीनी के चाय पीते हैं। लेकिन समय पर चीनी भी चलती है। चौकी पर सोते हैं लेकिन पलंग-बसखट का भी समभाव से व्यवहार कर लेते हैं। मध्यम मार्ग उन्हें प्रिय है।

डाक्टर राय ने अपना पथ स्वंय गढ़ा है। आत्म-दीप्त स्वनिर्मित व्यक्ति हैं वे। अपने दीपक आप। बड़े बाप के बड़े बेटे बड़ी-बड़ी युनिवर्सिटियों में पढ़ते हैं और युनिवर्सिटी की हवा खाते-खाते हवा हो जाते हैं। "पढ़ लिखकर बी.ए. हुए, मानो सारे अनर्थ के बीए हुए।" लेकिन तथा-कथित विद्यालयों की व्यवस्थित-विधिवत् शिक्षा-दीक्षा से वंचित पितृहीन, टुअर, यह निछक्का देहाती लड़का अपने भीतर की आग लेकर स्वाध्याय के भरोसे आगे बढ़ा और इसने अपनी एक हवा बांध दी, ऐसी हवा बांधी कि दिग्गजों के होश हवा हो गए। होश संभालते-संभालते अपने लड़कपन में ही जो प्राथमिक शाला (प्राइमरी स्कूल) का गुरु बना तो फिर अपनी गुरुता उसने छोड़ी ही नहीं। लब जो लग गई, सो लग गई। प्राथमिकशाला मध्य विद्यालय, उच्च और उच्चतर विद्यालय की ड्योढ़ियाँ पार करते-करते आज डाक्टर विवेकी राय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजीपुर के हिन्दी विभाग के प्राध्यापक पद की मर्यादा-शोभा बढ़ा रहे हैं। साध के लिए इस बालक ने ध्रुव की तरह तपस्या की। साध थी, साधना की गई फिर साधन को तो अनुचर होना ही था। गाजीपुर के करइल अंचल के सीमान्त के साधनहीन गांव "सोनवानी" के इस निपट गंवइ के पास बल-बूते, अपने अरजे आज अपना सब कुछ है। "गवई गन्ध गुलाब" (डाक्टर साहब की एक कृति और आवास का नाम भी) आज दिल्ली ऐसे नागर मन को भी लुभा रहा है।

डाक्टर विवेकी राय मेरे प्रिय हैं और मुझे प्रिय हैं और मुझे प्रिय है उनकी रचना। आज यह कहना कठिन है कि अपने प्रिय डाक्टर विवेकी राय के कारण उनकी रचना मुझे प्रिय लगती है कि प्रिय रचना के कारण डाक्टर साहब मुझे प्रिय लगते हैं। पर यह सच है कि विवेकी राय - एक अदद आदमी जब से मेरा कोई परिचय नहीं था, तभी सन् ५५-५६ के लगभग "मनबोध मास्टर की डायरी" (तब

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हमारे कवि जी, मास्टर साहब, विवेकी राय काशी के दैनिक 'आज' में "मनवोध मास्टर की डायरी' साप्ताहिक स्तम्भ के अर्न्तगत नियमित रूप से लिखा करते थे) के माध्यम से विवेकी राय की सर्जनात्मक प्रतिभा के प्रति मेरे मन में प्रतीत-प्रीति जगी थी। इसमें कोई सन्देह नहीं कि व्यक्ति विवेकी राय से पूर्व कृती विवेकी राय मेरे श्रद्धेय हैं और कृती की अपेक्षा कृति से अन्तरंगता पुरातन है और प्रगाढ़ भी।

अब तो डॉक्टर राय मेरे निकट हैं और निकट पहुँचकर मैंने पाया कि डॉक्टर साहब मेरे ही प्रिय नहीं, वे शिष्ट जन प्रिय एक विशिष्ट व्यक्ति हैं। उनकी यह विशिष्टता उनके कार्यकलाप, वातचीत और पारस्परिक व्यवहार में भी प्रकट होती है। उनके मुंह से कटु वचन निकलते मैंने नहीं सुना। दांव पेच की वात वे नहीं जानते। उनकी वातें ममत्व से भरी हुई, सहज सरल और निश्छल होती हैं। "सहज सुभाव छुआ छल नाहीं।" वे अतिथि प्रिय हैं। किन्तु ऐसे अतिथि प्रिय नहीं, जो अतिथियों के घटाटोप में, अतिथियों के प्रपंच में अपनी पहचान ही खो दें। समय के सदुपयोग की शिक्षा लेनी हो तो डाक्टर विवेकी राय की चर्या देखिये- "युक्ताहार विहारस्य।" समय पर मितसात्विक भोजन, समय पर सोना-जागना, समय पर नित्य कर्म, समय पर स्वाध्याय-ध्यान-व्यायाम-प्राणायाम। ये न तो दीर्घसूत्री हैं, और न तो व्यग्र एवं आतुर चित्त के द्विधाग्रस्त व्यक्ति ही। हड़वड़ में गड़वड़ करने वाले वे नहीं हैं।

किसी काम में दोचिताही और अनियमितता नहीं। साहित्य रचना का प्रिय कार्य भी नियमानुसार, व्यवस्थितरूप से योजनावद्ध चलता रहता है। लेखक-अध्यापक-कृषक के तीन मोर्चे उनके अपने हैं। कहीं किसी मोर्चे पर वे दवलच नहीं खाते। समभाव से वे तीनों मोर्चों पर जूझते मिलेंगे। स्वाभाविक प्रीति है उनकी लेखक, अध्यापक और अपने कृषक रूप से। इन तीनों कोणों पर वे अपनी सहज रीति-प्रीति निभाते मिलेंगे। उनके लेखन में अध्यापक और कृषक इसी से सजीव-सजोर हैं।

डाक्टर विवेकी राय प्रेमचन्द्र की परम्परा के आदर्शोन्मुख यथार्थवादी साहित्यकार हैं। उनकी रचना का उद्देश्य 'वहुजन हिताय, बहुजन सुखाय' है। वस्तुतः साहित्य का उद्देश्य यही होना चाहिए। साहित्य की व्युत्पत्ति "स-हित" से हुई है। इसीलिए जो साहित्य केवल लोकरंजक ही न हो, प्रत्युत लोक संग्रह और लोक हितैषी हो, वही साहित्य है।

काव्य, कहानी, उपन्यास, समीक्षा, निवन्ध, (ललित फीचर, स्केच, रिपोर्ताज और डायरी) सव क्षेत्र उन्होंने छुआ है और वहुत ही इतमीनान और भरोसा योग यह छुअन है। यह सँवारने वाली है, सहेजने वाली है। उनकी सभी कृतियाँ मनोहर, आकर्षक, प्रसन्न, जीवन्त और गम्भीर है। उनका साहित्य केवल मनोरंजन के लिए नहीं है, जीवन-यात्रा का पाथेय भी वहाँ है। अपनी पहचान भी है। उनके साहित्य में अपने परिवेश का, अपने समय का रुदन ही नहीं, हास भी है। लेकिन यह त्राहि-त्राहि करने के लिए नहीं है। कुछ सिरजने के लिए है, धरती पर अपना सपना उतारने के लिए है। वे जानते हैं कि धरती पर शूल-फूल दोनों उगते हैं। सो शूल से पैरों की रक्षा के लिए वे धरती को चर्माच्छादित करने की मूढ़ता नहीं पालते, वे तो पैरों में अपने-अपने नाप का जूता पहन लेने का विवेक जगाते दिखाई देते हैं।

अभी-अभी "सोनामाटी" उपन्यास का प्रकाशन हुआ है, जो ग्राम परिवेश को उजागर करने वाला

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कृषक संस्कृति का महाकाव्यात्मक उपन्यास है। स्थायी महत्व के इस अनमोल उपन्यास में भोजपुरी क्षेत्र का पूरा देश-काल झलक रहा है। ग्राम जीवन को जीवन्त करने वाले प्रेमचन्द्र की परम्परा के उपन्यास कारों में फणीश्वरनाथ "रेणु", नागार्जुन, शिवप्रसाद सिंह, रामदरश मिश्र और श्रीलाल शुक्ल का नाम समादर के साथ लिया जाता है। निश्चय ही "सोनामाटी" के प्रकाशन ने डाक्टर विवेकी राय के नाम को पांक्तेय स्थान का अधिकारी बना दिया है। प्रसिद्ध समालोचक डाक्टर गोपाल के युक्तियुक्त अभिमत से हमारी भी सहमति है: "गोदान के बाद ग्रामीण जीवन पर आधारित जिन उपन्यासों की विशेष चर्चा हिन्दी में हुई, उनमें "बलचनमा", "मैला आंचल" और "रागदरबारी" प्रमुख हैं। मैं विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि "सोनामाटी" संवेदना, अनुभूति, विजन शिल्प और भाषा की दृष्टि से इन सभी उपन्यासों से बढ़कर है और "गोदान" की परम्परा में द्वितीय सर्वश्रेष्ठ रचना है।" (समीक्षा", पटना, अप्रैल जून ८३) निसन्देह डाक्टर राय का सम्पूर्ण साहित्य भाषा-भाव और कला का उच्छल सागर है, जिसमें ग्राम-संस्कृति का पूरा आकाश प्रतिविम्वित हो रहा है।

भोजपुरी जिन्दादिली, मस्तमौला, अल्हढ़ स्वभाव तो उनके साहित्य में है ही। लेकिन यह मस्ती और महकने तब लगती है जब वे भोजपुरी का आंचल पकड़ लेते हैं। "सोनामाटी" में भोजपुरी के अनेक निझाते-संइठाते शब्दों का अवसरानुरूप प्रयोगकर अर्थदीप्ति की गई है और इस प्रकार उन्होंने भोजपुरी के अनगिन शब्दों का उद्धार तो किया ही है, साथ ही खड़ी बोली हिन्दी के शब्द भंडार की अभिवृद्धि की है।

वे एक भोजपुरी प्रेमी हिन्दी सेवी हैं। उनका भोज-पुरी प्रेम उनके साहित्य में पद-पद पर परिलक्षित होता है। यह अतिशयोक्ति नहीं होगी कि उनके साहित्य की प्राणधारा उनका भोजपुरी-प्रेम ही है। उनका यह भोजपुरी प्रेम उनके खड़ी बोली हिन्दी के साहित्य में ही प्रस्फुटित नहीं है। वरन् उनकी भोजपुरी भाषा की कृतियां 'के कहल चुनरी रंगा ब' (ललित निबन्ध), "ओझइती" (कहानी संग्रह) और 'भोजपुरी कथा साहित्य के विकास' (आलोचनात्मक इतिहास) उनके भोजपुरी प्रेम के ज्वलन्त उदाहरण हैं।

डाक्टर साहब का कृतित्व तो कृत-कृत्य कर देनेवाला अविस्मरणीय और महान है ही और उनका व्यक्तित्व भी महनीय एवं मननीय है। वे कारयित्री-भावयित्री प्रतिभा के धनी तो हैं ही शालीन शिष्टाचार के भी आगार हैं। वे कहीं पहुँचते तो लगता है, काम्य प्रकाश आ गया। वे जिस मार्ग से निकल जाएं, देखना पड़ेगा कि कोई विशिष्ट पुरुष इस मार्ग से गया है - बिन देखे रहा नहीं जायेगा। लगेगा कि आघ्राणतृप्तिदायक मलयवयारि छूकर जैसे निकली जा रही हो, कि एक सुमन सुवास वातावरण को गमगमाता निकला जा रहा है। सोचना होगा कि यह 'गंवईगन्ध गुलाब' है "रजनीगन्धा" है, पारिजात है, कुमुद है या यह एक अकेले सबकुछ है।

अपने भोजपुरी प्रेम और भोजपुरी सेवा तथा कृतित्व व्यक्तित्व के कारण ही डाक्टर विवेकी राय १९८३ मे अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष मनोनीत हुए थे। इसके अतिरिक्त और उच्च-स्तरीय साहित्यिक संस्थाओं से वे जुड़े हैं। सन् १९८७ तक उनकी चालीस से ऊपर पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। इस वर्ष 'सोनामाटी' पर उन्हें उत्तर प्रदेश सरकार का प्रेमचन्द्र पुरस्कार मिला परन्तु पुरस्कार, सम्मान और प्रशस्ति से दूर अपनी एकान्त साधना के प्रति ही विवेकी राय समर्पित मिल रहे हैं। ❐

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रृंगार-संध्या सांस्कृतिक केन्द्र

पोस्ट बाक्स नं. २२, कानपुर – २०८ ००१

२, जानसन स्क्वायर, लाल इमली, कानपुर – २०८ ००१

संस्थापक : (स्व.) नन्दकिशोर गुप्त, विन्ध्य बासिनी सिंह, राम प्रकाश शुक्ल 'शतदल', वीरेन्द्र अग्निहोत्री, ज्ञान चन्द्र वर्मा

मुख्य संरक्षक : प्रकाश अम्बादास खड़वरकर

संरक्षक : सर्वश्री जितेन्द्र कुमार लोहिया, ओम प्रकाश डरोलिया, भागवत प्रसाद शर्मा, श्री तिलक, राजीव चड्ढा, के.के. पाण्डेय, के.जी. तिवारी, भोलानाथ शुक्ल

प्रबन्धकारिणी समिति :

- **गृहपति** : विन्ध्य बासिनी सिंह
- **संयोजक** : राम प्रकाश शुक्ल 'शतदल'
- **प्रबन्धक** : अनन्त कृष्ण पाण्डेय
- **सह–संयोजक** : ज्ञान चन्द्र वर्मा
- **सह–प्रबंधक** : वीरेन्द्र अग्निहोत्री
- **सदस्य** : मन मोहन तिवारी, भूपेश अवस्थी, अवधेश श्रीवास्तव रोमी अरोड़ा, ओम प्रकाश मिश्र, यज्ञदत्त शुक्ल 'प्रशान्त'

विशिष्ट सहयोगी : श्री प्रकाश चन्द्र अग्रवाल

- **परामर्शदाता** : राजेन्द्र मिश्र 'बब्बू', अरुण कुमार सिंह, सुधीर सिंह
- **सम्मानित सदस्य** : सर्वश्री (डॉ.) हरिवंश राय बच्चन, गोपाल दास 'नीरज', रमानाथ अवस्थी, नरेश चन्द्र चतुर्वेदी, कन्हैया लाल नन्दन, आचार्य वागीश शास्त्री, डॉ. उपेन्द्र, भारत भूषण, डॉ. आनन्द अस्थाना, ज्योति वाजपेयी, डॉ. शिव बहादुर सिंह भदौरिया, डॉ. हरिवंश शुक्ल, डॉ. माहेश्वर तिवारी, किशन सरोज, डॉ. शेरजंग गर्ग, डॉ. अरुण त्रिवेदी, डॉ. शिव कुमार दीक्षित, राम किशोर वाजपेयी, विजय किशोर मानव, विद्या सागर वर्मा, अवध बिहारी लाल, विनोद पाण्डेय, रंजन अधीर, ज्योति शंकर शुक्ल, प्रमोद तिवारी, राजेश अरोड़ा, बृजेश गोस्वामी, बृजेश मिश्र, अमर रतन खरे, जयराम सिंह गौर, अशोक त्रिपाठी, हरि कान्त शर्मा

कार्यकर्तागण : आशीष, मनीश, मलय, विनीत, सुमीत, ममता, गीता, रंजन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

With best compliments from :

ANAND INDUSTRIAL CORPORATION

Manufacturers :

Comair Brand Air Compressors, Garage & Service Equipment

119/419, DARSHAN PURWA, KANPUR - 208 012
PHONE : 216297, GRAMS : COMAIR

With best compliments from :

KAPOOR COLOUR LAB (UNIT II)

House of Colour Labs

Head Office :
106/3, P. Road,
Kanpur - 208 012
Ph. : 246208

Works & Branch :
120/380, Lajpat Nagar
(Narain Purwa)
Kanpur - 208 005
Ph. : 219311

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हमारे शुभाकांक्षी

डॉ विवेकी राय (दादा)

बी. प्रकाश

नरेन्द्र मोहन

डॉ संकटा प्रसाद पाण्डेय

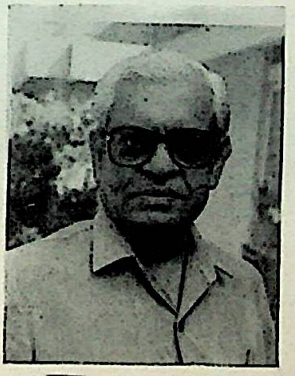

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चित्रावली

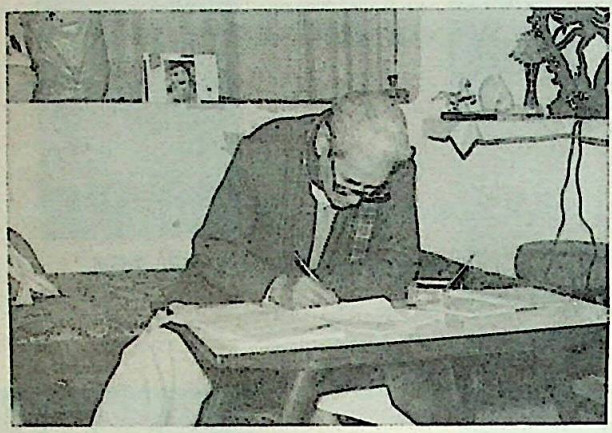

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चित्रावली

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हमारे शुभाकांक्षी

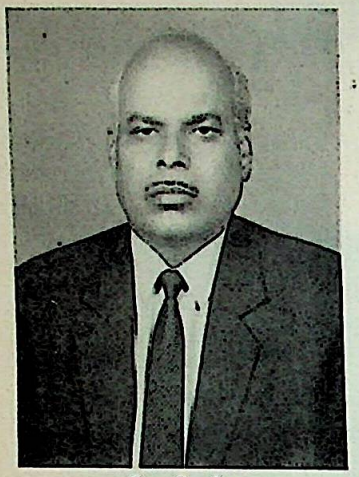

अवध बिहारी श्रीवास्तव

श्री प्रभाकर राय

ओम प्रकाश दरोलिया

सुधीर सिंह

सुधा राय (बायें)

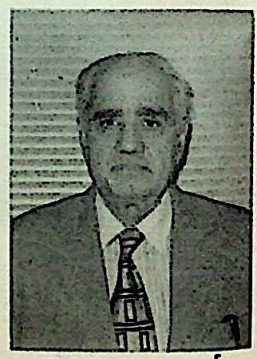

भागवत प्रसाद शर्मा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चित्रावली

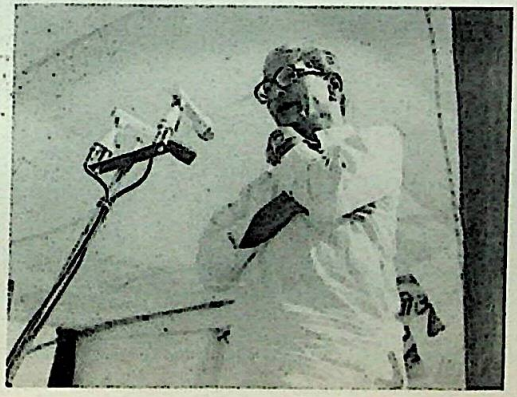

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चित्रावली

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चित्रावली

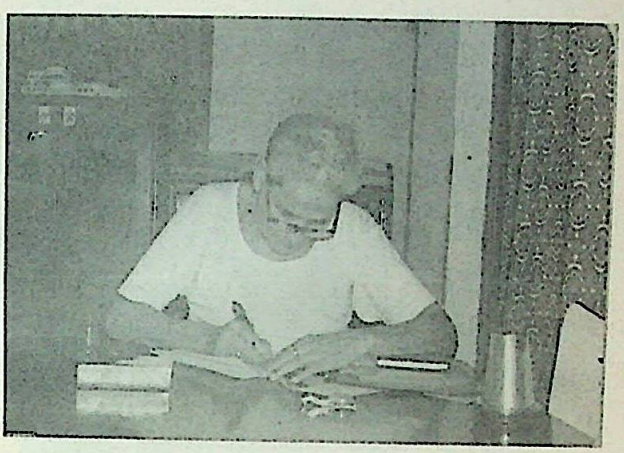

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चित्रावली

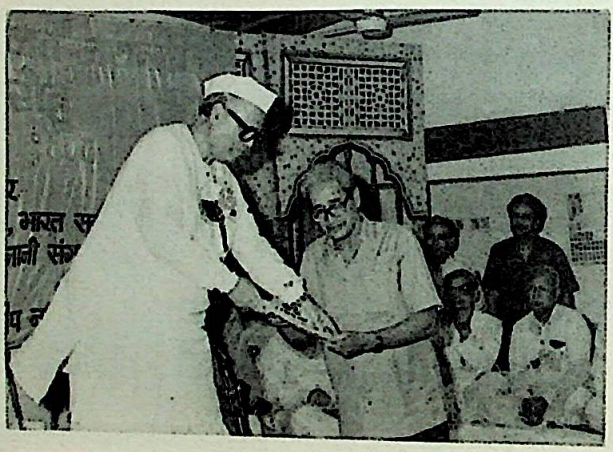

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चित्रावली

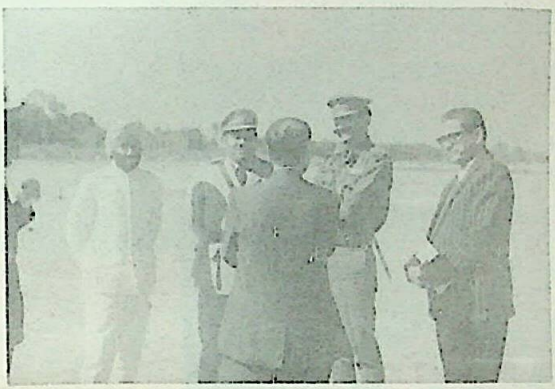

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चित्रावली

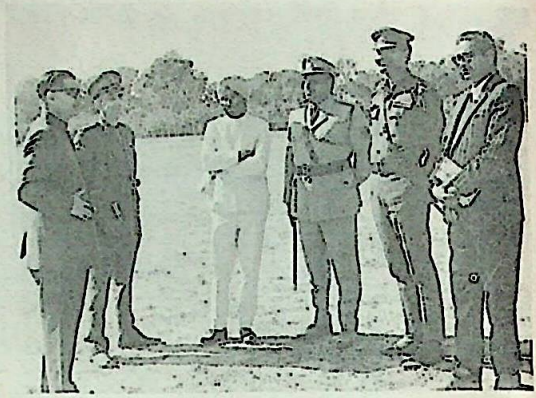

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चित्रावली

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चित्रावली

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चित्रावली

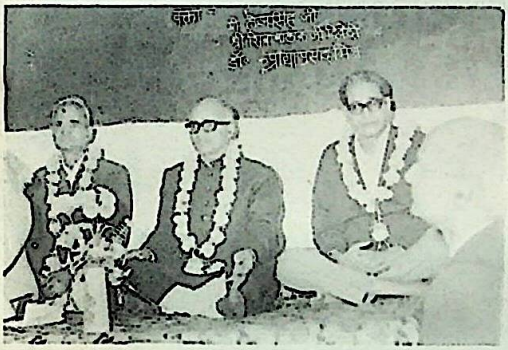

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चित्रावली

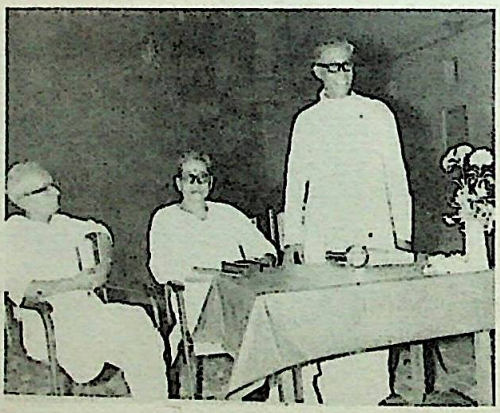

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चित्रावली

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चित्रावली

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उ० प्र० के औद्योगिक विकास के लिये कृत संकल्प और प्रयासरत
उ० प्र० राज्य औद्योगिक विकास निगम लि०
की स्वर्णिम परियोजनाओं में निवेश के अवसर :

- ★ एकीकृत औद्योगिक पार्क, लोनी एवं खुर्जा
- ★ निर्यात संवर्धन पार्क, ग्रेटर नोएडा क्षेत्र
- ★ ट्रानिका सिटी, गाजियाबाद
- ★ एग्रोटेक पार्क, गाजियाबाद
- ★ साफ्टवेयर टेक्नोलाजी पार्क, कानपुर
- ★ चर्म प्रौद्योगिकी पार्क, उन्नाव
- ★ उद्योग कुञ्ज, दादानगर, कानपुर

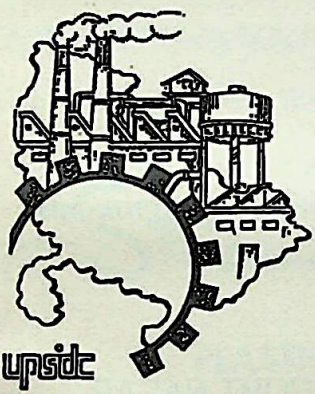

upsidc

उ० प्र० राज्य औद्योगिक विकास निगम लि०
ए-1/4, लखनपुर, कानपुर - 208 024
फोन : 91-0512-252851-52-53 . टेलीफैक्स : 91-0512-250797

-: मुख्य कार्य :-

1. प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में अवस्थापना सुविधाओं से युक्त औद्योगिक क्षेत्र की स्थापना करके उद्यमियों को औद्योगिक भूखण्ड उपलब्ध कराना।
2. संयुक्त सहायतित क्षेत्रों में वृहद् एवं मध्यम औद्योगिक परियोजनाओं का प्रवर्तन।
3. अंशपूंजी भागीदारी योजना के द्वारा उद्यमियों को अंशपूंजी हेतु वित्तीय सहायता प्रदान करना।
4. उद्यमियों को परियोजना सम्बन्धी विभिन्न प्रकार की तकनीकी परामर्श प्रदान करना।
5. सार्वजनिक एवं अर्द्ध सार्वजनिक संस्थानों के लिए निर्माण कार्य संबय आधार पर सम्पादित करना तथा वास्तुविद एवं नगर नियोजन के सम्बन्ध में सलाहकारी सेवायें प्रदान करना।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

With best compliments from :

H.O. PH. : 270436, 600480
270723, 274096

Kataria

Carriers

Specialist in :
Carrying Over - Dimensional Consignments

H. O. : 133/198, TRANSPORT NAGAR,
KANPUR - 208 023

PROVIDING HIPPO &
TRAILER SERVICE UP TO 100 TONNES,
FOR TRANSPORTING HEAVY LENGTHY & OVERSIZE EQUIPMENT

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

With best compliments from :

Hind Roadways Ltd.

Admn. Office :
26/71-A, Birhana Road, Kanpur
Phone : 312626, 312829

With best compliments from :

Standard

PLASTIC PRODUCTS

Manufacturers of :
Double Colour H. M. Polythene Tube, Films, Bags, Cane & P. P. etc.

Factory :
Panki Industrial Area
Kanpur

Office :
110/6, Nehru Nagar
Kanpur

PHONES :
FACT. : 211053 • OFF. : 540743 • RESI. : 294522

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

With best compliments from :

OGAL
TRADING CO.

P. ROAD
KANPUR

With best compliments from :

KEWAL KRISHNA &
SONS

MANUFACTURERS OF
HIGH QUALITY PAINT BRUSHES

GANDHI NAGAR
KANPUR

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यू०पी० हैण्डलूम्स

यू० पी० हैण्डलूम्स देश भर में स्थित अपने बिक्री केन्द्रों के माध्यम से प्रदेश के दक्ष बुनकरों द्वारा निर्मित हथकरघा वस्त्रों की बिक्री कर रहा है।

यू०पी० हैण्डलूम्स के कानपुर में स्थित बिक्री केन्द्रों में आपका स्वागत है तथा तक की बचत में उत्सवों के अवसर पर बेहतरीन टिकाऊ, मनभावन हथकरघा वस्त्र जैसे सिल्क व बनारसी साड़ी, काटन व सिल्क बेड कवर, कर्टेन क्लाथ, टेपेस्ट्री, टेरीकाट सूटिंग व शर्टिंग, कारपेट्स दरी व ट्रेस मैटेरियल, हैण्ड वूवेन पालिस्टर ब्लेन्डेड साड़ियाँ, व टावेल्स आदि खरीदें।

उत्तर प्रदेश राज्य हथकरघा निगम लि०

(उ०प्र० सरकार का उपक्रम)

हथकरघा भवन, जी०टी० रोड, कानपुर

With best compliments from :

KRISHNA ENGINEERING

KANPUR

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

With best compliments from :

R. K. FORGED BLANKS PVT. LTD.

Manufacturer of :
Corrugated Rolls, Sheets & Boxes.

E-13, PANKI INDUSTRIAL AREA, SITE-II, KANPUR - 208 022
TEL. NO. : 211312, 211475

With best compliments from :

SCHOOL UNIFORM AVAILABLE
AT

Binny
Retail Centre

OPP. JAIHIND CINEMA, GUMTI NO. 5
KANPUR, PH. : 216103

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

With best compliments from :

A TRIPATHI
(M. G. Partner)

PHONES :
Off. : 211357
212456
Resi. : 281404
280822
Fax : 297236

POSHAN
AGRO-VET

20 YEARS OF EXELLENCE IN ANIMAL NUTRITION

F-52, PANKI-II, UDYOG NAGAR,
KANPUR - 208 022 (INDIA)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एक उत्कृष्ट वित्तीय संस्थान
आपके सहयोग के लिए सदैव तत्पर

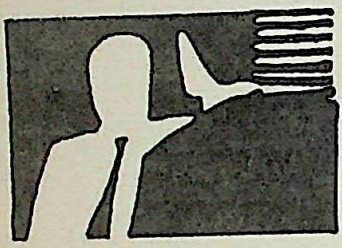

यू पी एफ सी

हमेशा से आपके प्रति हर पल सजग

हमारी सेवाओं में उपलब्ध है...

- लघु व मध्यम स्तर की नई औद्योगिक इकाईयों को रू० २४० लाख तक सावधि ऋण
- स्थापित इकाईयों के विस्तार आधुनिकरण आदि के लिए ERS/EFS के अर्न्तगत सावधि ऋण
- लघु व मध्यम स्तरीय उद्योगो को कार्यशील पूंजी के लिये सावधि ऋण एवं कारपोरेट ऋण
- अच्छे उद्यमियों के लिये अल्प अवधि ऋण
- निर्यातकों के लिए विदेशी मुद्रा का ऋण
- इश्यु मैनेजमेन्ट
- प्रोजेक्ट सार्टीफिकेशन
- OTCEI प्रायोजक
- पूंजीगत सामान के लिए लीजिंग
- हायर परचेज
- फैक्टरिंग
- पूंजीगत सामान के लिए स्थगित भुगतान गारण्टी
- पूंजीगत सामान के आयात के लिए 'फॉरेन लेटर ऑफ क्रेडिट'
- पर्यटन सम्बन्धी उद्यम (होटल, मोटल, रेस्टोरेन्ट आदि) तथा स्वास्थ्य सेवा उद्यमों (नर्सिंग होम, चिकित्सकीय उपकरण आदि) के लिए सावधि ऋण
- टी. वी. सीरियल एवं विज्ञापन फिल्मों के लिए ऋण

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें : डी. जी. एम. डेवलपमेंट / प्रोजेक्ट डिवीजन

उप्र

उत्तर प्रदेश वित्तीय निगम

14/88, सिविल लाइन्स, कानपुर – 208 001. फोन : 210041-44. फैक्स : 290073, 293743.

तेज काम करते है हम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

With best compliments from :

Office : 367059, 316181, 313086
Resi. : 290362, 551271
God. : 544703
Fax : 0512-316181

VISHAL TUBES

DISTRIBUTOR :
Jindal Pipes Limited
Quality Steel Tubes Ltd.
R. T. L. Ltd. (Rajender Pipes Ltd.)

STOCKISTS :
M. S. Steam & Galvanished Tubes 15 mm to 300 mm

80/86, LATOUCHE ROAD, KANPUR

With best compliments from :

AJIT CHEMICALS PVT. LTD.

(PLASTIC DIVISION)

WORKS
103-A, CO-OP. INDL. ESTATE
DADA NAGAR, KANPUR - 208 022
PHONES : 295793, 219670
FAX : 0512-219670

REGD. OFFICE : 104/430, P. ROAD, KANPUR-208 012

MANUFACTURERS OF :
- INJECTION MOULDED PLASTIC COMPONENTS & MOULDS & DIES.
- ALL TYPES OF SHEET METAL COMPONENTS.

OUR VALUABLE CUSTOMERS INCLUDE :
- LML LIMITED
- INDIAN AIRLINES LTD.
- NORTH EASTERN RAILWAYS.
- PETROFILS COOP. LTD., BARODA.
- J. K. SYNTHETICS LTD. KOTA.
- INDIAN TELEPHONE INDUSTRIES, GONDA.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

With best compliments from :

UNIVERSAL ENTERPRISES

LATOUCHE ROAD
KANPUR

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

With best compliments from :

Ambika Corporation

Steel Suppliers

COOLI BAZAR,
AGARWAL BUILDING, KANPUR

PHONE :
RESI. : 210179
OFFICE : 356710, 314980

With best compliments from :

Balwant Singh & Sons

TIMBER MERCHANTS AND SAW MILL OWNERS

HALEEM MUSLIM COLLEGE STREET,
POST BOX NO. 169, KANPUR - 208 003
PHONES : OFFICE : 546415, 542391
RESI. : 290234, 290345
GRAM : 'PRITIPALCO'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

With best compliments from :

RAJAT
MOULDERS (PVT.) LTD.
KANPUR

With best compliments from :

MARS AUTO
(Pvt.) Ltd.
Kanpur

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

With best compliments from :

ESS AAR UNIVERSAL PRIVATE LTD.

C-10, PANKI INDUSTRIAL AREA
SITE-III, KANPUR - 208 022
PHONE NO. : 211304, 211328
FAX NO. : 0512 - 211407

- ELECTRICAL PANELS
- CLASS " A" ELECTRICAL CONTRACTOR

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

With best compliments from :

NETPLAST LIMITED

Manufacturer of :

- Injection Moulded Industrial/EngineeringPlastic Components as per users requirement.
- Plastic Storage Bins, Containers, Storage System.
- Special Custom Built Storage System.
- Replacement of metallic Components by plastic (Cost reduction)
- Moulds & Dies for plastic component.
- PU Foam Mouldings
- Headlamps of Tow Wheelers

Factory & Sales Office :
"NET-HOUSE",
Plot No. - 13, Uptron Estate, Panki, Kanpur - 208 022
Ph. No. : 211541, 211543, 211698
Fax : 0512-211542

With best compliments from :

R. G. STEELS

Stockist & Supplier of all kinds of Iron & Steel Industrial i.e. H. R. Steel/C.R. Steels, Angles, Chennels, Mates etc. Produced by SAIL / TISCO

R. G. EXIM

Manufacturer & Exporter of Horse Riding Equipments

77/39, Agarwal Building, Coolie Bazar, Kanpur (India)

Phone No. : Off. : 0512-357080
Fact. : 0512-224697
Resi. : 0512-550229
Fax : 0512-256943

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सर्वथा नवीन और अनूठे विषय पर
तुलसी साहित्य व ज्योतिर्विज्ञान के यशस्वी विचारक/चिंतक
पं० विन्ध्य बासिनी सिंह कृत
शोधपरक ग्रन्थ
मानस और ज्योतिष
तुलसी साहित्य में ज्योतिर्विज्ञान के तत्व
भारतवर्ष के प्रमुख शहरों में उपलब्ध होगा।
साथ ही श्रृंगार सन्ध्या सांस्कृतिक केन्द्र से अग्रिम भुगतान पर डाक खर्च नहीं लगेगा।
पुस्तकालयों व पुस्तक विक्रेताओं हेतु उचित कमीशन की व्यवस्था है।

कृपया अपनी प्रति का आदेश इस पते पर भेजें –

श्रृंगार सन्ध्या सांस्कृतिक केन्द्र
पोस्ट बाक्स नं० २२, कानपुर – २०८ ००१

With best compliments from :

Mahesh Brothers

WHOLESALE DEALERS
Binny Cloth Mills

GENERALGANJ, KANPUR

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

With best compliments from :

Tel. No. : 211217
Fax No. : 211249

SHRI
INDUSTRIES

D-3/B,
Panki Industrial Estate
Kanpur

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

Select II

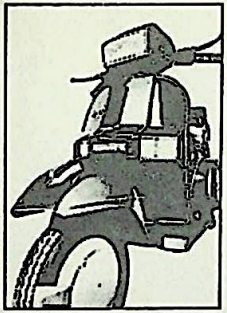

In partnership with PIAGGIO

LML PRESENTS STYLE POWER AND PERFORMANCE

Supremo

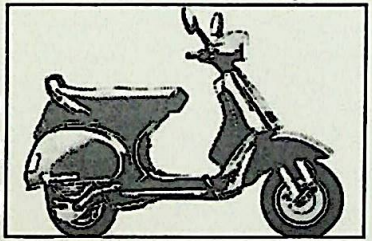

NV Spl.

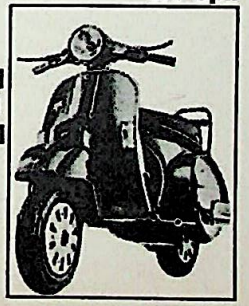

LML LIMITED B-17, Greater Kailash, Part-I, New Delhi 110 048.
Tel: 6234403-07 Fax: 6234401.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हार्दिक शुभकामनाओं के साथ....

जियोलाइट युक्त प्लस
डिटर्जेन्ट केक

कोरोना प्लस इन्डस्ट्रीज लिमिटेड
118/585, कौशलपुरी, कानपुर.
फोन न. 219629, 296971,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.